धरती आबा की ऊर्जावान भूमि से प्रकाशित लोकप्रिय दैनिक

खबर मन्त्र

रांची और धनबाद से एक साथ प्रकाशित

सबकी बात सबके साथ

सुप्रभात

रांची, मंगलवार

01.04.2025

* * नगर संस्करण। पेज : 12

khabarmantra.net चैत्र, शुक्ल पक्ष, तृतीया/चतुर्थी, संवत् 2082 मूल्य : ₹ 3 । वर्ष : 12 । अंक : 256 khabarmantralive.com

मां चौथा स्वरूप : कुष्मांडा

सुरासम्पूर्णकलशं रुधिराप्लुतमेव च।
दधाना हस्तपद्माभ्यां कूष्माण्डा शुभदाऽस्तु मे॥

नवरात्र-पूजन के चौथे दिन कूष्माण्डा देवी के स्वरूप की ही उपासना की जाती है। इस दिन साधक का मन 'अनाहत' चक्र में अवस्थित होता है। मान्यताओं के अनुसार, मां कुष्मांडा ने अपनी हंसी से ब्रह्मांड की रचना की है। मां कुष्मांडा ब्रह्मांडीय ऊर्जा की देवी हैं। इनकी पूजा से स्वास्थ्य और शक्ति मिलती है। अपनी मन्द, हल्की हंसी के द्वारा अंड यानी ब्रह्मांड को उत्पन्न करने के कारण इस देवी को कुष्माण्डा नाम से जाना जाता है।

न्यूज डायरी

कल वक्फ संशोधन बिल की सदन में पेशी संभव

नयी दिल्ली। विपक्ष के विरोध के बावजूद सरकार ने 2 अप्रैल को लोकसभा में वक्फ संशोधन विधेयक पेश करने का फैसला किया है। गृह मंत्री अमित शाह ने साफ कर दिया है कि यह विधेयक संविधान के अनुरूप बनाया जायेगा इससे डरने की जरूरत नहीं है।

सीबीआइ ने घूस लेते रंगे हाथ चार को दबोचा

धनबाद। सीबीआई की टीम ने कोल इंडिया की इकाई ईसीएल मुग्मा एरिया के खुदिया कोलियरी दफ्तर के दो क्लर्क व दो अन्य को घूस लेते रंगे हाथ गिरफ्तार किया है। एक कोलकर्मी रिटायरमेंट के बाद मिलने वाली राशि भुगतान के लिए रिश्वत की मांग की जा रही थी।

मां के आशीर्वाद से भक्तों में ऊर्जा का संचार: मोदी

नयी दिल्ली। पीएम मोदी ने सोमवार को चैत्र नवरात्रि के दूसरे दिन देशवासियों को शुभकामनाएं दी हैं। एक्स पर एक पोस्ट में पीएम मोदी ने लिखा, नवरात्रि पर देवी मां का आशीर्वाद भक्तों में सुख-शांति और नयी ऊर्जा का संचार करता है।

राज्यभर में सौहार्दपूर्ण माहौल में मनी ईद

पारंपरिक धार्मिक अनुष्ठान के साथ प्रकृति पर्व सरहुल शुरू

नमाज के बाद अमन-चैन की दुआ

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। मुस्लिम समुदाय का पवित्र त्योहार ईद उल-फित्र सोमवार को राजधानी रांची समेत पूरे राज्य में सौहार्दपूर्ण वातावरण में मनाया गया। रांची की प्रमुख ईदगाहों–हरमू, डोरंडा, कडरू, राईन मस्जिद और हव्वारी मस्जिद सहित सभी मस्जिदों में ईद की विशेष नमाज अदा की गयीष ईद की विशेष नमाज के दौरान नमाजियों ने राज्य और देश में अमन-चैन और खुशहाली की दुआ मांगी। लोगों ने एक-दूसरे से गले मिलकर बधाईयां दीं। राज्य के कई इलाकों में वक्फ संशोधन बिल के खिलाफ मुस्लिम समुदाय ने काली पट्टी बांधकर नमाज अदा की। ईद के अवसर पर शहर के गली कूचा, मुस्लिम बहुल मुहल्लों में रंग बिरंगे फूलझड़ियों के साथ ही सुंदर विद्युत सज्जा की गयी थी। (शेष पेज 11 पर)

ईद अमन-चैन भाईचारे का पैगाम : कादरी

डोरंडा ईदगाह में हजरत मौलाना सैयद शाह अलकमा शिबली कादरी ने कहा कि ईद अमन, शांति और भाईचारे का पैगाम देता है। ईद का मतलब ही होता है खुशी। वह खुशी जो जिंदगी में बार-बार आये। हर व्यक्ति की अपनी ईद होती है। जैसे बीमार व्यक्ति जब ठीक हो जाता है तो उसकी ईद है। जेल में बंद व्यक्ति जब जेल से छूट जाता है तो उसकी ईद है। मस्जिद जाफरिया में हजरत मौलाना हाजी सैयद तहजीबुल हसन रिजवी ने भी मुस्लिम समुदाय के लोगों को संबोधित किया।

मोहब्बत का दिया पैगाम

ईद की नमाज के बाद मौलाना असगर मिस्बाही ने अपने संदेश में कहा कि ईद और इस्लाम मोहब्बत का पैगाम देता है। इंसान से इंसान के बीच मोहब्बत का पैगाम देता है। उन्होंने कहा कि हिंदुस्तान में मजहब की आजादी ही यहां की खूबसूरती है। मौलाना असगर मिस्बाही ने कहा कि जो लोग नफरत फैलाना चाहते हैं उनके मंसूबों को हमें प्रेम और भाईचारे से नाकाम करना है।

हैवान बना पति, पत्नी और बेटे की ली जान

सरायकेला। घरेलू विवाद के चलते आरोपी पति ने पत्नी-बेटे की धारधार हथियार से हत्या कर दी। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। कांडाधोरा तामुलिया क्षेत्र की इस घटना ने लोगों का दिल दहला दिया। कपाली थाना क्षेत्र के निवासी सुखराम मुंडा ने अपनी पत्नी रविबारी सिंह और 5 साल के बेटे की धारदार हथियार से बेरहमी से हत्या कर दी। चांडिल के एसडीपीओ अरविंद कुमार बिन्हा ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर इसकी जानकारी दी है। कहा कि आरोपी शराब का सेवन करता था।

आज निकलेगी भव्य शोभायात्रा

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। प्रकृति के महापर्व सरहुल के मौके पर मंगलवार को भव्य शोभा यात्रा निकाली जायेगी। सभी तैयारियां पूरी कर ली गयी हैं। सीएम हेमंत सोरेन मुख्य अतिथि होंगे। सोमवार को परंपरा के अनुसार, केकड़ा-मछली पकड़ने, मुर्गों की बलि और पूजा अनुष्ठान के साथ ही इस प्रकृति पर्व का शुभारंभ हो गया। सुबह ही हातमा, सिरमटोली, देशावली समेत अन्य सरना स्थलों पर पूजा के लिए मिट्टी के घड़ों में पानी भरा। पाहनों ने विधिवत पूजा-अर्चना कर अनुष्ठान संपन्न किया। धार्मिक अनुष्ठान के साथ मंगलवार की सुबह मुख्य पाहन जगलाल पाहन सरना स्थल पर घड़ों में रखे पानी व मौसम की स्थिति का आकलन कर भविष्यवाणी करेंगे कि इस वर्ष बारिश कैसी होगी। सरहुल पूजा होने के बाद दोपहर दो बजे से रांची के विभिन्न मौजा, अखड़ा और सरना स्थलों से शोभायात्रा निकाली जायेगी। सरहुल पूर्व संध्या पर रांची विवि दीक्षांत मंडप में सोमवार को नव सरना युवक संघ द्वारा आयोजित सरहुल पूर्व संध्या समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में कल्याण मंत्री चमरा लिंडा, नेहा शिल्पी तिर्की समेत अनेक गणमान्य लोग शामिल हुए।

आज भव्य शोभा यात्रा : मंगलवार दोपहर दो बजे से रांची के विभिन्न मौजा, अखड़ा और सरना स्थलों से भव्य शोभायात्रा निकाली जायेगी। इसमें महिला-पुरुष और बच्चे अपने पारंपरिक वेशभूषा व वाद्ययंत्रों और आकर्षक जनजातीय झांकियों के साथ नाचते-गाते हुए शामिल होंगे। (शेष पेज 11 पर)

प्रदेश कांग्रेस प्रभारी ने पांच दिवसीय मंथन शिविर में संगठन की मजबूती के लिए खींची नयी लकीर

सत्येन्द्र

रांची। लोकसभा और विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को मनमाफिक सफलता नहीं मिलने के बाद झारखंड प्रदेश कांग्रेस द्वारा प्रदेश कांग्रेस संगठन को मजबूत करने के इरादे से बुलाई गयी संगठन सृजन वर्ष-2025 के तहत पांच दिवसीय मंथन कार्यक्रम का समापन पिछले रविवार को हो गया। मंथन कार्यक्रम के बाद पार्टी के अंदर अब यह सवाल उठने लगा है कि इस मंथन से पार्टी संगठन को अमृत के रूप में क्या मिलेगा और क्या इस मंथन बैठक से नेताओं एवं कार्यकर्त्ताओं के अंदर व्याप्त विष बाहर भी निकला है या नहीं। इसके बावजूद नये प्रदेश प्रभारी के राजू के नेतृत्व में झारखंड कांग्रेस के इतिहास में पहली बार पांच दिनों तक चले मंथन कार्यक्रम के बाद कांग्रेस के कार्यकर्त्ताओं और नेताओं में यह विश्वास जागृत हुआ है कि प्रदेश संगठन की स्थिति सुदृढ़ होगी और जमीन से जुड़े लोगों को संगठन में तरजीह मिलेगी और परिक्रमा करनेवाले नेताओं को बाहर का रास्ता देखना होगा।

इस बैठक के बाद प्रदेश प्रभारी के. राजू ने भी कुछ बातें स्पष्ट कर दी हैं। उन्होंने स्पष्ट रूप से यह कहकर संकेत दे दिया है कि पार्टी संगठन की कमजोरी और लोकसभा-विधानसभा चुनाव में आपसी सामंजस्य में कमी की वजह से नतीजा बेहतर नहीं हो सका। ऐसे में संगठन और सरकार के बीच सामंजस्य जरूरी है। चुनाव के वक्त संगठन के प्रति वफादारी नहीं निभानेवाले नेताओं पर कार्रवाई भी होगी।

ज्ञात हो कि पांच दिवसीय झारखंड कांग्रेस मंथन कार्यक्रम के दौरान पांच दिनों तक 10 सत्रों में बैठकों का दौर चला। कुशल प्रशासक रहे और राहुल गांधी के बेहद करीब प्रदेश प्रभारी के. राजू ने संगठन को ग्राम और वार्ड स्तर पर गठित करने की योजना बना डाली। अब कांग्रेस का न सिर्फ ग्रामीण स्तर पर कमिटी गठित होगी बल्कि उसे टास्क भी दिया जाएगा और उसकी मॉनिटरिंग भी होगी। इसके लिए नेताओं एवं कार्यकर्त्ताओं को प्रदेश संगठन द्वारा सौ दिन का टास्क भी दिया गया है।

पांच दिनों तक चले इस बैठक में संगठन से जुड़े नेताओं का विचार सामने आने के बाद यह स्पष्ट हो गया कि कमजोर संगठन की वजह से चुनाव में उम्मीद के अनुरूप सीटें नहीं मिलीं। कांग्रेस के प्रवक्ता सोनाल शांति उर्फ रिंकू तिवारी ने कहा कि मंथन के दौरान यह माना गया कि हमारी सांगठनिक क्षमता कमजोर है और इसी वजह से चुनाव में मनमाफिक नतीजे नहीं आये। उन्होंने बताया कि मंथन शिविर के दौरान ऐसे लोगों की भी पहचान की गई है जो चुनाव के समय में अपनी भूमिका नहीं निभाई। निश्चित रूप से वैसे लोगों पर कार्रवाई की जाएगी।

प्रदेश कांग्रेस के लिए मंथन शिविर रहा उपयोगी

झारखंड कांग्रेस के प्रदेश मीडिया प्रभारी राकेश सिन्हा ने पांच दिवसीय मंथन शिविर को बेहद उपयोगी बताया है। उन्होंने कहा कि मंथन से निकले अमृत का प्रभाव यह होगा कि कांग्रेस संगठन पंचायत से लेकर पीसीसी तक मजबूत होगी। सत्ता और संगठन दोनों एक दूसरे का पूरक हैं। मजबूत संगठन से सत्ता की प्राप्ति होती है और सत्ता मिलने से संगठन को मजबूती मिलती है। सरकार के जन उपयोगी कामों को जनता के बीच ले जाने का काम संगठन करती है, अगले पांच वर्षों में यह काम कांग्रेस को करना है।

एक नजर में

हेमंत सरकार में टैक्स के पैसे चढ़ गये भ्रष्टाचार की भेंट : बाबूलाल मरांडी

रांची। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने आज राज्य सरकार पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि जब झारखंड का किसान सूरज निकलने से पहले खेतों में उतरता है, मजदूर दिनभर पसीना बहाता है। व्यापारी ईमानदारी से कर चुकाता है, तो उनकी बस एक उम्मीद होती है कि राज्य का विकास हो। ताकि उनके बच्चों का भविष्य बेहतर बन सके। उन्होंने कहा कि इसी उम्मीद और विश्वास के साथ वित्तीय वर्ष 2024-25 में जनता ने पिछले साल से 1,097 करोड़ रुपये अधिक यानी कुल 22,172 करोड़ रुपये टैक्स के रूप में सरकार को दिये। लेकिन क्या मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने भी उतनी ही ईमानदारी से अपनी जिम्मेदारी निभाई। उन्होंने कहा कि टैक्स के रूप धन आज बालू और भू-माफियाओं की जेब में जा रहा है। जिन टैक्स के पैसों से समृद्ध झारखंड बनना था, वह भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि हेमंत सरकार की प्राथमिकता जनता की सेवा करना नहीं। बल्कि सत्ता का दुरुपयोग कर काला धन इकळा करना है। अपने कर्तव्य से विमुख होकर सरकार न सिर्फ राज्य को पीछे धकेल रही है। बल्कि ईमानदार करदाताओं के साथ विश्वासघात भी कर रही है।

शिक्षा मंत्री से मिला प्रगतिशील शिक्षक संघ का प्रतिनिधिमंडल

रांची। झारखंड प्रगतिशील शिक्षक संघ का एक शिष्टमंडल प्रदेश अध्यक्ष आनंद किशोर साहू के नेतृत्व में मंत्री रामदास सोरेन से मिला। दरअसल, विद्यालय में समय में परिवर्तन कोविडकाल के समय विद्यालय का समय संचालन में परिवर्तन किया गया था। अब विद्यालय का सामान्य सत्र 1 अप्रैल 20250 से हो रही है। ऐसी स्थिति में पुनः पुराने समय के अनुसार से विद्यालय का संचालन किया जाना चाहिये। ऐसी स्थिति में वर्तमान समय में 7 बजे से 1 बजे तक विद्यालय का संरक्षण किया जाना अव्यावहारिक है। वर्तमान में अधिकांश जिलों में ग्रेड 4 एवं ग्रेड 7 के मामले में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए झारखंड शिक्षक पात्रता परीक्षा उत्तीर्ण शिक्षकों को ही देने के लिये एनसीटीई द्वारा निर्देशित किया गया है। उक्त आदेश के आलोक में ही शिक्षकों को प्रोन्नति देने के लिये अनुरोध किया गया। संघ के प्रदेश महासचिव बलजीत कुमार सिंह ने कहा कि वर्तमान सरकार छात्र एवं शिक्षकों के हित में ध्यान रखते हुये मंत्री अवश्य ही इस पर विचार करेंगे। प्रतिनिधि मंडल में ज्ञानचंद साहू, लाल रंजीत कुमार, शंकर लकड़ा, सिद्धार्थ शंकर सिन्हा शामिल थे।

गबन के आरोपी को विदेश जाने की मिली अनुमति

रांची। राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन के तहत झारखंड के स्वास्थ्य विभाग में करीब 130 करोड़ रुपए की हुई दवा घोटाले ट्रायल फेस कर रहा आरोपी श्यामल चक्रवर्ती को विदेश जाने की इजाजत सीबीआई कोर्ट ने सशर्त प्रदान कर दी है। अदालत ने उसे 20 से 25 दिनों की विदेश यात्रा की अनुमति प्रदान की है। उसकी बेटी लंदन में पढ़ाई कर रही है। पढ़ाई पूरी होने के बाद उसे आर्किटे^ र एसोसिएशन स्कूल ऑफ आर्किटे^ र में स्नातक समारोह में भाग लेने के लिये परिवार के साथ आमंत्रित किया गया है। इसी में हिस्सा लेने के लिये पिछले दिनों पासपोर्ट जारी करने का अनुरोध किया था। सीबीआई ने साल 2009 में मामले में प्राथमिकी दर्ज की है। लंदन की यात्रा 10 से 15 जून के बीच होगी। जबकि वापसी की तारीख 5 से 10 जुलाई के बीच है। विदेश से आने के बाद पांच दिनों के अंदर सशरीर उपस्थित होकर पासपोर्ट जमा करने का निर्देश अदालत ने दिया है। साथ ही, अदालत ने पासपोर्ट लेने के लिये 10 लाख रुपये का क्षतिपूर्ति बांड के रूप अपनी संपत्ति के मूल कागजात जमा करने को कहा गया है। हालांकि, सीबीआई की ओर से पासपोर्ट जारी करने का विरोध किया गया था। सुनवाई के दौरान कहा कि याचिकाकर्ता ने एक मार्च 2024 को भी गोद भराई की रस्म में सिंगापुर की यात्रा की थी।

गुड्डू पलामू के और रतनलाल मांझी बोकारो के झामुमो अध्यक्ष बने

रांची। झारखंड मुक्ति मोर्चा ने राजेन्द्र कुमार सिन्हा 'गुड्डू' को पलामू का और रतनलाल मांझी को बोकारो का जिला अध्यक्ष बनाया है। सोमवार को जारी कार्यालय आदेश में कहा गया कि सभी पंचायत समितियों, वार्ड समितियों, प्रखंड समितियों तथा महानगर/नगर समिति के गठन के उपरांत पलामू और बोकारो जिला समिति का गठन किया जाता है। झामुमो के केन्द्रीय महासचिव विनोद कुमार पांडेय के हस्ताक्षर से आदेश जारी किया गया। अध्यक्ष के अलावा पलामू के बालकिशुन उरांव और सन्नू सिद्की को उपाध्यक्ष, रंजन चन्द्रवंशी (अधिवक्ता) को सचिव, अनुराग सिंह और देवानंद भारद्धाज को संगठन सचिव, रमेश कुमार सिंह को सह सचिव, विशाल कुमार सिन्हा को कोषाध्यक्ष नियुक्त किया गया है। ऐसे ही बोकारो के अध्यक्ष के अलावा गिरधर महतो, मोहन मुर्मू, घुन्नू हांसदा और मो फिरदौस को उपाध्यक्ष, मुकेश कुमार महतो को सचिव व मुक्तेश्वर महतो, फैयाज अहमद को संगठन सचिव, पानबाबु केवट व यदु महतो को सहसचिव तथा पंकज जयसवाल को कोषाध्यक्ष नियुक्त किया गया है। इसके साथ ही उक्त दोनों जिलों के नवनियुक्त पदाधिकारियों को निर्देश दिया गया है कि वे शीघ्र केन्द्रीय समिति के पदाधिकारियों एवं केन्द्रीय सदस्यों के साथ बैठक कर जिला समिति के विस्तार कर पदाधिकारियों के नाम की अनुशंसा कार्यालय को सूचित करें।

रिम्स में ओपीडी आज बंद, इमरजेंसी में मिलेगा इलाज

रांची। रिम्स में मंगलवार को ओपीडी सेवा बंद रहेगी। मरीजों का इलाज न रुके, इसके लिए इमरजेंसी में चिकित्सक मौजूद रहेंगे। गंभीर स्थिति के मरीजों को इलाज मिलता रहेगा। इमरजेंसी जांच की सुविधा भी मिलती रहेगी।

राष्ट्रीय युवा संसद में भाग लेने आयशा, श्वेता और रिया दिल्ली रवाना

रांची। राष्ट्रीय युवा संसद कार्यक्रम में भाग लेने के लिए राज्यस्तर से झारखंड की तीन विजेता प्रतिभागी सोमवार को दिल्ली रवाना हुईं। संसद भवन दिल्ली में एक से तीन अप्रैल तक राष्ट्रीय प्रतियोगिता होगी। नेहरू युवा केंद्र संगठन, झारखंड की ओर से 27 एवं 28 मार्च को पुराना विधानसभा भवन में आयोजित राज्यस्तरीय प्रतियोगिता में विजेता रहीं आयशा फातिमा, श्वेता कुमारी एवं रिया गुप्ता राष्ट्रीयस्तर पर झारखंड का प्रतिनिधित्व करेंगी। नेहरू केंद्र की राज्य निदेशक ललिता कुमारी ने तीनों प्रतिभागियों को शुभकामनाएं दीं। प्रतिभागियों को दिल्ली जाने के क्रम मे रांची एयरपोर्ट पर गौरव मित्तल (यूथ आयकन), शुभम शर्मा (एएसओ), विकास अहूजा व रोहित कुमार ने अंगवस्त्र देकर सम्मानित किया

पहले चरण में 334 थानों में लगेगा सीसीटीवी, 67 करोड़ आवंटित

रांची। राज्य के 334 थानों में सीसीटीवी लगाने को मंजूरी मिल गई है। पहले चरण में सीसीटीवी लगाने के लिए पुलिस मुख्यालय को 67 करोड़ का आवंटन भी गृह विभाग के द्वारा कर दिया गया है। सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर देश के सभी राज्यों को थानों, केंद्रीय एजेंसियों को भी अपने कार्यालय में सीसीटीवी लगाना है। मानवाधिकार हनन रोकने को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने सीसीटीवी लगाने का आदेश दिया था। राज्य सरकार के द्वारा सीसीटीवी लगाने की दिशा में की गई कार्रवाइयों की जानकारी भी हलफनामा के जरिए दी गई है। झारखंड देश के कुछ चुनिंदा राज्यों में है, जहां अबतक सीसीटीवी थानों में नहीं लगाया जा सका है। हाल के दिनों में मुख्य सचिव अलका तिवारी ने भी इस संबंध में सभी स्टेकहोल्डर्स के साथ बैठक की थी।

साल 2021-22 में ही मिली थी प्रशासनिक स्वीकृति : राज्य के 334 थानों में सीसीटीवी कैमरे लगाने के लिए 78.08 करोड़ रुपये की प्रशासनिक स्वीकृति वित्तीय वर्ष 2021-22 में ही गृह विभाग को मिली थी। सीसीटीवी लगाने के लिए पूर्व में झारखंड पुलिस भवन निगम को नोडल एजेंसी बनाया गया था। पुलिस निगम ने सीसीटीवी लगाने को लेकर डीपीआर भी तैयार किया था। थानों के प्रवेश व निकासी द्वार, हाजत, सिरिस्ता, थाना प्रभारी कक्ष में अनिवार्य रूप से सीसीटीवी लगाने की योजना है। पहले चरण के पूरा होने पर शेष थानों में सीसीटीवी लगाने की प्रक्रिया शुरू की जाएगी।

झारखंड में फिर बदलेगा मौसम आंधी-तूफान साथ गिरेंगे ओले

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। झारखंड में एक बार फिर मौसम अंगड़ाई लेने वाला है। दो अप्रैल के बाद से राज्य के विभिन्न हिस्सों में आंधी-तूफान के साथ बारिश व ओले गिरने की संभावना जताई गई है। वेस्टर्न डिस्टर्बेंस (पश्चिमी विक्षोभ) के कारण उत्तर भारत के 6 राज्यों में बारिश, आंधी-तूफान का अलर्ट जारी किया है। इसे लेकर मौसम विभाग ने ऑरेंज अलर्ट जारी कर दिया है।

दो अप्रैल से मौसम लेगा अंगड़ाई : मौसम विभाग के अनुसार, झारखंड में 2 अप्रैल से मौसम करवट लेगा। लगातार 3 दिनों तक झारखंड के अलग-अलग हिस्सों में आंधी-तूफान के साथ गरज के साथ वर्षा और वज्रपात की संभावना है। दो अप्रैल को गढ़वा, पलामू, चतरा, कोडरमा, हजारीबाग, लातेहार, लोहरदगा, रामगढ़, रांची, खूंटी, गुमला, सिमडेगा और पश्चिमी सिंहभूम में बारिश और आंधी-तूफान की संभावना है।

तीन अप्रैल को 40-50 किलोमीटर रफ्तार से चलेगी हवा : मौसम विभाग के अनुसार, तीन अप्रैल को झारखंड के उत्तरी-पश्चिमी और उत्तरी-मध्य भागों में आंधी-तूफान की संभावना है। इस दौरान हवा की रफ्तार 40 से 50 किलोमीटर प्रति घंटा रह सकती है। झारखंड के दक्षिणी और मध्य भागों में ओले गिरने की संभावना है। इस दौरान आंधी-तूफान के साथ बादल गरजेंगे और बारिश होगी। इससे गढ़वा, पलामू, चतरा, कोडरमा, हजारीबाग, लातेहार, लोहरदगा, रामगढ़, रांची, खूंटी, गुमला, सिमडेगा और पश्चिमी सिंहभूम प्रभावित होंगे।

चार अप्रैल को बढ़ जाएगी हवा की रफ्तार : झारखंड के दक्षिणी-पूर्वी और मध्य भागों में 4 अप्रैल को आंधी-तूफान की संभावना है। इस दौरान हवा की रफ्तार 50 से 60 किलोमीटर प्रति घंटा रह सकती है। चार अप्रैल को गढ़वा, पलामू, चतरा, कोडरमा, हजारीबाग, लातेहार, लोहरदगा, रामगढ़, रांची, खूंटी, गुमला, सिमडेगा, पश्चिमी सिंहभूम, लोहरदगा, गुमला, सिमडेगा, पश्चिमी सिंहभूम, खूंटी, रांची, रामगढ़, हजारीबाग, कोडरमा, गिरिडीह, धनबाद, बोकारो, सरायकेला-खरसावां, पूर्वी सिंहभूम, जामताड़ा, देवघर, दुमका, पाकुड़, गोड्डा और साहिबगंज जिले प्रभावित हो सकते हैं।

पारिवारिक समारोह में भाग ले कर सीएम लौटे

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन एक पारिवारिक समारोह में भाग लेने रविवार देर रात अपने ननिहाल सरायकेला के चांडिल अनुमंडल स्थित कांगलाडीह गांव पहुंचे। यह एक पारिवारिक कार्यक्रम था, जिसमें परिवार के सदस्य और स्थानीय नेता भी शामिल हुए। इस मौके पर श्री सोरेन ने अपने परिवार के रिश्तेदारों से मिलकर उनका हाल-चाल जाना और तस्वीरें भी खिंचवायी।

बाद में सीएम सुबह रांची लौट आये।

कार्यक्रम में उनकी पत्नी व विधायक विधायक कल्पना मुर्मू सोरेन, ईचागढ़ की विधायक सविता महतो और हेमंत सोरेन की माता रुपी सोरेन भी उपस्थित रहीं। वहां पहुंचने पर मुख्यमंत्री ने परिवार के छोटे-छोटे बच्चों का अभिवादन किया। सीएम के मामा के घर उनके ममेरे भाई (मामा के लड़के) के बच्चे का अन्नप्राशन समारोह था।

सीएम ने समारोह में भाग ले कर वच्चे को आशीर्वाद दिया। गांव के लोगों के साथ फोटो भी खिचवाई। तय समय से काफी देर से स्त्री सोरेन वहां पहुंचे थे, गांव वाले बड़ी संख्या में मुख्यमंत्री और उनके परिवार के स्वागत में घंटों खड़े रहे। गांव के लोग सीएम हेमंत सोरेन की एक झलक पाने को भी आतुर दिखे।

मुख्यमंत्री के कार्यक्रम को लेकर कड़ी सुरक्षा की व्यवस्था की गयी थी। चांडिल अनुमंडल क्षेत्र को सुरक्षा के दृष्टिकोण से छावनी में तब्दील कर दिया गया था।

मकॉन हॉल में आज मनाया जायेगा उत्कल दिवस

रांची। ओडिया भाषी लोगों का सबसे पुराना सामाजिक-सांस्कृतिक संगठन सागरिका 2 अप्रैल को मेकॉन कम्युनिटी हॉल में उत्कल दिवस मनायेगा। उत्कल दिवस 1 अप्रैल को 1936 में ओडिशा राज्य के गठन के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। यह भाषा और संस्कृति के आधार पर एक अलग पहचान के लिये ओडिया लोगों के लंबे संघर्ष की याद दिलाता है। उत्कल दिवस 2025 को ओडिशा के लोग राज्य की समृद्ध विरासत और ऐतिहासिक महत्व को पहचानते हुये बड़े उत्साह के साथ मनायेंगे। दीप प्रज्वलन और मंत्र पाठ के बादए सागरिका का सांस्कृतिक समूह प्रसिद्ध बंदे उत्कल जननी गायेगा। सागरिका के अध्यक्ष द्वारा उद्घाटन भाषण दिया जायेगा। इसके बाद ओडिसी शिक्षिका सबिता मिश्रा द्वारा स्थापित देबाश्रुत ओडिसी नृत्य प्रस्तुत किया जायेगा। विभिन्न आयु समूहों के लिए चित्रकला और गायन से संबंधित कई प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किये जायेंगे। इस अवसर पर एक स्मारिका तैयार की जा रही है। जिसे कुछ दिनों बाद एक विशेष अवसर पर जारी किया जायेगा।

फैटी लीवर मुक्त रांची अभियान का शुभारंभ 05 अप्रैल से : सेठ

विश्व प्रसिद्ध लिवर विशेषज्ञ डॉ शरीन के मार्गदर्शन में चलेगा रांची में होगी निःशुल्क स्क्रीनिंग, केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री ने कहा कि राजनीति मेरे लिये समाज सेवा का माध्यम है

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने फैटी लिवर मुक्त रांची अभियान चलाने की घोषणा की है। इसके निःशुल्क स्क्रीन की घोषणा सोमवार को मोहन मार्केटिंग कॉम्पलेक्स में की है। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के स्वस्थ भारत की संकल्पना को साकार करने के लिये फैटी लिवर मुक्त रांची अभियान का शुभारंभ 05 अप्रैल से करने जा रहा हूं। रांची लोकसभा क्षेत्र पूरे देश के लिये एक मॉडल बनेगा। उन्होंने कहा कि राजनीति को समाज सेवा का बड़ा माध्यम बनाना चाहिये।

उन्होंने कहा कि फैटी लीवर के मामले में भारत की समस्या बहुत गंभीर होती जा रही है। उन्होंने कहा कि नान अल्कोहलिक फैटी लीवर की समस्या भी विकराल रूप धारण कर रही है। भारत में प्रत्येक चार लोगों में से एक लोग फैटी लीवर के शिकार हो रहे हैं। इस संख्या में तेजी से बढ़ोतरी भी हो रही है। उन्होंने कहा कि यह निश्चित रूप से हम सब के लिये चिंता का विषय है। इस दृष्टि से विश्व प्रसिद्ध लिवर रोग विशेषज्ञ डॉ एस के शरीन के समक्ष सदर अस्पताल के साथ मिलकर काम करने का प्रस्ताव रखा था। इसके आलोक में उन्होंने रांचीवासियों के लिए निः शुल्क फैटी लीवर के स्क्रीनिंग पर अपनी सहमति दे दी है। मोबाइल वैन आधारित स्क्रीनिंग प्रोग्राम के तहत शहरी और सुदूरवर्ती ग्रामीण क्षेत्रों में यह कार्यक्रम चलाया जायेगा। चार मोबाइल वैन के माध्यम से फैटी लीवर की स्क्रीनिंग शुरू होगी। हर गाड़ी में विश्व की सबसे अत्याआधुनिक मशीन लगी हुई है। एक मशीन की लागत एक करोड रुपये है। इस कार्यक्रम के तहत 18 वर्ष से अधिक आयु के सभी वयस्कों के स्क्रीनिंग की योजना है।

दिल्ली में पहली बार मनाया जाएगा सरहुल पर्व, गूंजेगी मांदर की थाप

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। प्रकृति पर्व सरहुल की धमक इस बार दिल्ली में भी दिखेगी। झारखंड के आदिवासी और कलाकारों का जत्था दिल्ली में रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ के आवास पर आगामी 3 अप्रैल को सरहुल मिलन समारोह में शिरकत करेगा। रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ द्वारा दिल्ली में पहली बार आयोजित हो रहे इस सरहुल महोत्सव में झारखंड के एक हजार से अधिक आदिवासी कई केंद्रीय मंत्रियों के साथ भाग लेंगे।

केंद्रीय रक्षा मंत्री ने इसकी जानकारी देते हुए कहा कि सरहुल पर्यावरण को संरक्षित करने का संदेश देने वाला पर्व है, जो आज विश्व के लिए काफी महत्वपूर्ण है। झारखंड में सरहुल को अलग अंदाज में मनाने की परंपरा रही है, देश और दुनिया को इससे परिचित कराने के लिए पहली बार इसका आयोजन नई दिल्ली में किया जा रहा है।

सरहुल को लेकर राजधानी रांची समेत पूरे राज्य में उत्साह है। रांची में जगह-जगह सरहुल के संदेश वाले पोस्टर लगाए गए हैं। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार ने राज्यवासियों को सरहुल की शुभकामनाएं दी हैं। सरहुल के अवसर पर मंगलवार एक अप्रैल को राज्यपाल रांची विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित कार्यक्रम में भाग लेंगे, जबकि मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन आदिवासी छात्रावास और केंद्रीय सरना समिति सिरम टोली के पूजा स्थल का भ्रमण कर सरहुल शोभा यात्रा में भाग लेंगे। इस अवसर पर निकाले जाने वाले भव्य जुलूस की तैयारी पूरी कर ली गई है। इधर, सरहुल जुलूस को लेकर प्रशासन ने यातायात व्यवस्था भी दुरुस्त कर दी है। मुख्य सड़क से लेकर विभिन्न मार्गों पर जुलूस का रूट निर्धारित कर दिया गया है और पुलिस जवानों की तैनाती का निर्णय लिया गया है।

पतरातू थर्मल पावर से 680 मेगावाट बिजली मिलने में लगेंगे और डेढ़ माह

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। पतरातू सुपर थर्मल पावर प्लांट की पहली यूनिट से 800 मेगावाट बिजली का उत्पादन डेढ़ से दो माह में होने लगेगा। पहली यूनिट मार्च के दूसरे हफ्ते में सफलतापूवर्क ग्रिड से जोड़ दी गई थी। पहले दिन के ट्रायल में 100 मेगावाट तक बिजली उत्पादन किया गया। तब यह आकलन किया गया था कि 31 मार्च तक 800 मेगावाट बिजली का उत्पादन होने लगेगा। जानकारी के अनुसार पहली यूनिट से व्यावसायिक उत्पादन शुरू होने में डेढ़ से दो महीने का समय और लगने का अनुमान है। बिजली खरीद समझौते के अनुसार उत्पादन का 85 प्रतिशत यानी 680 मेगावाट बिजली झारखंड को मिलेगी।

झारखंड बिजली वितरण निगम और एनटीपीसी की संयुक्त कंपनी पतरातू विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड (पीवीयूएनएल) से दो फेज में 800 मेगावाट की पांच यूनिटों से कुल 4000 मेगावाट बिजली का उत्पादन होना है। पहले फेज में तीन यूनिटों से 2400 मेगावाट बिजली का उत्पादन किया जाएगा। इस प्रकार झारखंड को पतरातू पावर प्लांट परियोजना के पूर्ण हो जाने पर 3400 मेगावाट बिजली मिलने लगेगी। पहली यूनिट से उत्पादन शुरू होने के बाद दूसरी यूनिटों से चरणबद्ध तरीके से उत्पादन शुरू करने की कार्ययोजना है। उत्पादित बिजली को बिजली सब-स्टेशन और उपभोक्ताओं के घरों तक पहुंचाने के लिए ट्रांसमिशन लाइन का निर्माण और वितरण नेटवर्क को दुरुस्त करने का काम भी चल रहा है। ऊर्जा विभाग के अपर मुख्य सचिव अविनाश कुमार इसकी नियमित समीक्षा कर रहे हैं। उल्लेखनीय है कि पहली यूनिट से उत्पादन शुरू होने के छह-छह माह के अंतराल में दूसरी और तीसरी यूनिट का काम पूरा होने की उम्मीद है। दूसरे चरण में चौथी और पांचवी यूनिट बनेगी।

बिजली के क्षेत्र में आत्मनिर्भर होगा झारखंड : झारखंड में बिजली की मांग करीब 2400 मेगावाट है। सरकार के स्तर पर तेनुघाट थर्मल पावर की दो यूनिटों से करीब 380 मेगावाट बिजली पैदा होती है। शेष बिजली सेंट्रल ग्रिड, सोलर एनर्जी कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया, स्थानीय निजी क्षेत्र के माध्यम से खरीदी जाती है। भीषण गर्मी या कड़ाके की ठंड में बिजली की मांग अत्यधिक बढ़ने पर पावर एक्सचेंज से उच्च दर पर खरीदनी पड़ती है। पतरातू से उत्पादन शुरू होने के बाद झारखंड बिजली के क्षेत्र में आत्मनिर्भर हो जाएगा। अतिरिक्त बिजली ग्रिड को बेच भी सकेगा।

> पतरातू थर्मल पावर की पहली यूनिट से ग्रिड को जोड़ा जा चुका है। अगले एक से डेढ़ माह में टेस्टिंग शुरू होने की उम्मीद है। इसके बाद बिजली का व्यावसायिक उत्पादन शुरू हो जाएगा और उम्मीद है कि उत्पादित बिजली डेढ़ से दो माह में उपभोक्ताओं तक पहुंचने लगेगी। पीवीयूएनएल और ऊर्जा विभाग के बीच समन्वय जारी है।
>
> **केके वर्मा, निदेशक झारखंड बिजली वितरण निगम**

सौहार्दपूर्ण वातावरण में मनी ईद, मांगी अमन-चैन की दुआ

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। मुसलमानों का सबसे बड़ा त्यौहार ईद उल फितर सोमवार को राजधानी में सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में मनाया गया। हरमू ईदगाह, डोरंडा ईदगाह, कडरू ईदगाह, राईन मस्जिद, हव्वारी मस्जिद समेत शहर और आसपास के सभी मस्जिदों में निर्धारित समय पर ईद की नमाज अदा की गई। ईद की विशेष नमाज के दौरान नमाजियों ने अल्लाह ताला से रांची सहित राज्य और देश में अमन-चैन और खुशहाली की दुआए मांगी। ईद नमाज के बाद लोगों ने एक-दूसरे से गले लगाकर ईद की मुबारकबाद दी। मस्जिदों में नमाज अदा करने के बाद ज्यादातर लोग कब्रिस्तान में जाकर अपने पुरखों की कब्र पर फातिहा पढ़ा। ईद के अवसर पर शहर के मुस्लिम बहुल मुहल्लों में रंग बिरंगे फूलझड़ियों के साथ ही सुंदर विद्युत सज्जा की गई थी। कई जगहों पर स्टॉल लगाकर लोगों को ईद की सेवाइयां खिलाई गई।

देश में नफरत को खत्म कर मोहब्बत आम किया जाए : मौलाना मिस्बाही

रांची ईदगाह में ईद नमाज से पूर्व हजरत मौलाना डॉक्टर असगर मिस्बाही ने अपने संबोधन में कहा कि ईद मुसलमान का सबसे बड़ा त्यौहार है। ईद खुशी का दिन है, खाने खिलाने का दिन है, मिलने मिलाने का दिन है। आपस के गिले शिकवे को खत्म करने का दिन है।अभी जो देश के हालात है, इस नफरत को खत्म कर मोहब्बत को आम करने की जरूरत है। मौलाना ने वक्फ संशोधन बिल का पुरजोर विरोध करते हुए कहा के केंद्र सरकार वक्फ बिल को पार्लियामेंट में लाने जा रही है। यह एक खतरनाक बिल है। ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड, जमीयत उलेमा हिंद और कई संस्थाएं इसके विरोध में तहरीक चला रहे हैं। सारे मुसलमान इस बिल के खिलाफ तहरीक में शामिल है।

ईद का मुकद्दस त्योहार अमन शांति और भाईचारे का पैगाम देता है : अलकमा शिबली

डोरंडा ईदगाह में हजरत मौलाना सैयद शाह अलकमा शिबली कादरी ने नमाज ईद से पहले अपने संबोधन में कहा के ईद का मुकद्दस त्योहार अमन शांति और भाईचारे का पैगाम देता है। ईद का मतलब ही होता है खुशी के। वह खुशी जो जिंदगी में बार-बार आए। हर व्यक्ति की अपनी ईद होती है।

ईद इनाम परवरदिगार का नाम है : मौलाना तहजीब

मस्जिद जाफरिया में हजरत मौलाना हाजी सैयद तहजीबुल हसन रिजवी ने अपने संबोधन में कहा कि ईद भाईचारगी और खुशी का दिन है। ईद एक ऐसी खुशी का मौका है जिसमें हर मुसलमान नए कपड़े पहनना चाहता है। नए कपड़े इंसान की जीनत का सबब बनते हैं। ईद बराबरी के साथ यह पैगाम देता है कि भारत की गंगा जमुना तहजीब को बाकी रखना हम सब के लिए जरूरी हैं।

सरहुल शोभायात्रा की तैयारी पूरी

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन होंगे मुख्य अतिथि

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। प्रकृति पूजा के महापर्व सरहुल की तैयारियां पूरी हो चुकी हैं। केंद्रीय सरना समिति के नेतृत्व में सिरमटोली सरना स्थल पर हजारों सरना धर्मावलंबी सरहुल शोभायात्रा में भाग लेंगे। इस पावन अवसर पर सभी आदिवासी समुदाय के लोग सरना मां से आशीर्वाद लेने के लिए माथा टेकेंगे और मन्नत मांगेंगे। सोमवार को समिति के अध्यक्ष अजय तिर्की की अगुवाई में हुई बैठक में यह निर्णय लिया गया कि यह पर्व आदिवासी समुदाय के लिए उल्लास, समृद्धि और प्रकृति के प्रति अपनी आस्था प्रकट करने का महत्वपूर्ण अवसर है।

हजारों की संख्या में पहुंचेगी खोड़हा मंडली : एक अप्रैल को सिरमटोली सरना स्थल पर हजारों खोड़हा मंडलियों और आकर्षक झांकियों का रंग देखने को मिलेगा। श्रद्धालु मां सरना से सुख-समृद्धि की कामना करेंगे। इस दौरान पारंपरिक वेशभूषा में खोड़हा मंडलियां वाद्ययंत्रों के साथ गीत गाते हुए सरना स्थल पहुंचेगी। सभी खोड़हा मंडलियों को सरना अंगवस्त्र प्रदान कर सम्मानित किया जाएगा।

खोड़हा मंडलियों का होगा सम्मान : सरहुल के अवसर पर सभी समुदायों को आमंत्रित किया गया है। पारंपरिक सरना अंगवस्त्र पहनाकर खोड़हा मंडलियों का सम्मान किया जाएगा। इसके अतिरिक्त विभिन्न स्थानों पर सैकड़ों स्टॉल लगाए जाएंगे, जहां श्रद्धालुओं के लिए प्रसाद वितरण किया जाएगा। मुख्य अतिथि के रूप में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन इस पावन अवसर पर उपस्थित होंगे।

पुरस्कार वितरण और विशेष सम्मान : शोभायात्रा में सबसे पहले पहुंचने वाले खोड़हा मंडलियों को सम्मानित किया जाएगा और साथ में पुरस्कार भी दिया जाएगा।

प्रथम पुरस्कारः 11,000 रुपये, द्वितीय पुरस्कारः 7,100 रुपये, तृतीय पुरस्कारः 5,100 रुपये। इसके अलावा पहान, पईनभोरा और महतो को भी उनके योगदान के लिए सम्मानित किया जाएगा।

नगर निगम ने चलाया विशेष सफाई अभियान

रांची। सरहुल पर्व के मद्देनजर रांची नगर निगम ने शहर के विभिन्न अखड़ा/सरना स्थलों और आसपास के संपर्क मार्गों पर विशेष सफाई अभियान चलाया। यह पहल सरहुल महापर्व को स्वच्छ और सुचारू रूप से मनाने के लिए की गई है, ताकि श्रद्धालु स्वच्छ वातावरण में अपने धार्मिक अनुष्ठान संपन्न कर सकें। नगर निगम की टीम ने सरना स्थलों के आसपास के कचरे को हटाने, सड़कों की सफाई और जलभराव रोकने के लिए विशेष प्रबंध किए। सफाई कर्मचारियों को तैनात कर नियमित सफाई सुनि्ति की गई, जिससे श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा न हो। नगर निगम के एक अधिकारी ने बताया कि शहरवासियों की आस्था और भावनाओं को ध्यान में रखते हुए यह सफाई अभियान चलाया गया है। उन्होंने नागरिकों से अपील की कि वे भी स्वच्छता बनाए रखने में सहयोग करें और कचरा निर्धारित स्थानों पर ही डालें।

गांव छोड़ब नहीं जंगल छोड़ब नहीं...की धुन पर थिरके लोग

रांची। केंद्रीय सरना समिति ने सोमवार को केंद्रीय कार्यालय आरआईटी बिल्डिंग कचहरी परिसर मे सरहुल पूर्व संध्या कार्यक्रम का आयोजन किया। इस अवसर पर समिति के सदस्य, ओरमांझी, हटिया, बरियातू और करम टोली से पारंपरिक परिधान लालपाड़ साड़ी एवं धोती-गंजी में शामिल हुए। कार्यक्रम में ढोल, मांदर और पारंपरिक वाद्य यंत्रों के साथ नृत्य-संगीत का आयोजन हुआ। होरा होरा रंगा हस्या...आंबा मंजरे मधु मातले रे.... गांव छोड़ब नहीं जंगल छोड़ब नहीं...की धुन पर लोग झूमते नजर आए। मौके पर केंद्रीय सरना समिति के अध्यक्ष फूलचंद तिर्की ने बताया कि प्रकृति पूजा के इस महापर्व को लेकर जनमानस में भारी उत्साह है। मौके पर केंद्रीय सरना समिति के उपाध्यक्ष प्रमोद एक्का, संरक्षक भुनेश्वर लोहरा, ललित कच्छप,राम सहाय सिंह मुंडा अखिल भारतीय आदिवासी विकास परिषद के अध्यक्ष सत्यनारायण लकड़ा, महिला शाखा अध्यक्ष ऊषा टोप्पो,प्रवक्ता एंजेल लकड़ा मौजूद।

चंपई, बाबूलाल आज पहुंचेंगे हातमा सरनाटोली

रांची। मुख्य उद्गम स्थल सरनाटोली हात्मा में मंगलवार को पूर्व मुख्यमंत्री चंपई सोरेन, पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी, केंद्रीय सरना समिति के अध्यक्ष बबलू मुंडा रहेंगे। मंगलवार की सुबह 9:30 बजे मुख्य पाहन जगलाल पाहन के द्वारा पूजा अर्चना की जाएगी और इस वर्ष वर्षा कैसी होगी इस पर भी मुख्य पाहन भविष्यवाणी करेंगे। यह जानकारी केन्द्रीय सरना समिति के अध्यक्ष बबलू मुंडा ने दी।

खबर एक नजर में

सुदेश महतो ने बच्चों के साथ मनाई ईद

रांची। पूर्व उपमुख्यमंत्री-सह-आजसू सुप्रीमो सुदेश महतो ने छोटे-छोटे बच्चों के साथ ईद मनाई। उन्होंने राज्यवासियों को भी ईद की बधाई दी है। श्री महतो आज आजसू के केंद्रीय सदस्य मो. मोहसिन खान के बरियातू बस्ती स्थित आवास पर पहुंचे और ईद की मुबारकबाद दी। उन्होंने मो. खान के परिजनों के साथ साथ बस्ती निवासियों से भी मुलाकात कर बधाई दी तथा बच्चों के साथ ईद की खुशियां बांटी। इसके बाद श्री महतो ने जोन्हा में मो. बबलू के निवास पर पहुंचकर सभी को 'ईद उल फितर' की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने पूरे प्रदेश में सौहार्द, भाईचारा, और अमन-चैन का माहौल बनाए रखने की अपील भी की।

यूथ करेज ने ईद मिलन समारोह का किया आयोजन

रांची। यूथ करेज चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा ईद के मौके पर ईद मिलन समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें लोगों को ईद के मौके पर सेवई खिलाकर आपसी भाईचारा और मोहब्बत का संदेश दिया गया और टीम द्वारा सभी अतिथियों को सम्मानित किया गया। समारोह में अतिथि के रूप में बरियातु के सदर आशिम इमाम, सीनियर अधिवक्ता मुमताज खान, तौहीद खान आदि शामिल हुए। मौके पर ट्रस्ट के नौशाद खान, मोदस्सिर इमाम, मोजाम्मिल, ओसामा, जैद, युसुफ आदि शामिल थे।

आदिवासियों का महापर्व सरहुल पूरे हर्षोल्लास के साथ शुरू

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। आदिवासियों का महापर्व सरहुल पूरे हर्षोल्लास के साथ सोमवार को शुरू हो गया। मुहल्लों के लोग नदी-तालाबों से मछली व केकड़ा पकड़ने निकले। परंपरा के अनुसार, केकड़ों को पूजा के बाद सफेद धागे में बांधकर चूल्हे के ऊपर टांग दिया गया।सुबह होते ही हातमा, सिरमटोली, देशावली समेत अन्य सरना स्थलों पर महतो पद के लोग पूजा के लिए मिप्ती के घड़े लाए और कोटवारों ने इन घड़ों में पानी भरा। पाहनों ने विधिवत पूजा-अर्चना कर अनुष्ठान संपन्न किया।

पांच रंग के मुर्गों की दी गई बलि : सरहुल पर्व के पहले पांच रंगों के मुर्गों की बलि चढ़ाई गई, जो विभिन्न देवताओं और परंपराओं का प्रतीक माने जाते हैं लाल मुर्गा ग्राम देवता के सम्मान में, सफेद मुर्गा सूर्य को, माला मुर्गा खेत-खलिहान की समृद्धि के लिए, काली मुर्गी बुरी आत्माओं को शांत करने के लिए व गोली मुर्गी की बलि पूर्वजों की याद में दी गई। जगलाल पाहन ने सभी मौजा के

पाहनों को पवित्र जल देकर सम्मानपूर्वक विदा किया : जगलाल पाहन ने सभी मौजा के पाहनों को पवित्र जल देकर सम्मानपूर्वक विदा किया। इसके बाद सभी पाहनों ने अपने-अपने स्तर से घड़ों में पानी भरा। इस धार्मिक अनुष्ठान के साथ मंगलवार की सुबह इस साल बारिश की भविष्यवाणी की जाएगी। पाहन सरना स्थल पर घड़ों में रखे पानी व मौसम की स्थिति का आकलन कर यह भविष्यवाणी करेंगे कि इस वर्ष बारिश कैसी होगी।

सरहुल आदिवासियों का प्रकृति पर्व है : चमरा लिंडा

सरहुल पूर्व संध्या समारोह

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। रांची विश्वविद्यालय के दीक्षांत मंडप मे सोमवार को नव सरना युवक संघ द्वारा आयोजित सरहुल पूर्व संध्या समारोह को संबोधित करते हुए कल्याण मंत्री चमरा लिंडा ने कहा कि सरहुल आदिवासियों का प्रकृति पर्व है, जो उनकी पूजा-पाठ, धर्म, संस्कृति और सरय फूल की महत्ता से जुड़ा हुआ है। उन्होंने कहा कि आज की युवा पीढ़ी अपनी जड़ों से दूर होती जा रही है। इसलिए सरहुल में होने वाली भविष्यवाणी और फूल के महत्व को समझना बेहद आवश्यक है।

आदिवासी समाज हमेशा सामूकिता पर विश्वास करता है : कृषि मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की : कृषि मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की ने कहा कि आदिवासी समाज हमेशा सामूकिता पर विश्वास करता है। उन्होंने कहा कि आदिवासी सभ्यता काफी समृद्ध हैं।

संविधान को समझने की जरूरत है : पूर्व मंत्री बंधु तिर्की : पूर्व मंत्री बंधु तिर्की ने कहा कि संविधान को समझने की जरूरत है। पेसा कानून एवं पांचवी अनुसूची को जानने की जरूरत है।आज की युवा पीढ़ी को शिक्षा प्राप्त करना होगा आज बढ़ती प्रतिस्पर्धा को देखते हुए गंभीर होना होगा।

सरना फूल पत्रिका का विमोचन : सरहुल पूर्व संध्या पर 46वें सरना फूल पत्रिका का विमोचन किया गया। जिसमें आदिवासी परंपराओं, रीति-रिवाजों और सामाजिक विषयों पर विशेष आलेख प्रकाशित किए गए हैं।

ये हुए सम्मानित

इस मौके पर शिक्षा और चित्रकारी के क्षेत्र मे योगदान देने के लिए लोघेर उरांव, इंडिगो एयरलाइंस के क्षेत्र में कार्यरत जेसिका उरांव और फिल्म डोक्युमेंट्री के क्षेत्र में काम करने वाली निरंजन कुमार कुजूर को सम्मानित किया गया। मौके पर डॉ रविद्र भगत (पूर्व वीसी) कुलपति अजित कुमार, डॉ हरी उरांव समेत श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, रांची विश्वविद्यालय के जनजातीय विभाग के प्रोफेसर व शोधार्थी मौजूद थे।

नहाय-खाय के साथ चार दिवसीय चैती छठ आज से

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। लोक आस्था के महापर्व चार दिवसीय चैती छठ पूजा की शुरुआत मंगलवार से नहाय-खाय के साथ होगी। छठ महापर्व साल में दो बार मनाया जाता है। एक कार्तिक मास में और दूसरा चैत्र मास में। रांची में बड़ी संख्या में व्रती चैती छठ अनुष्ठान करती हैं। भीषण गर्मी के कारण चैती छठ व्रतियों के लिए अधिक कठिन होता है। चार दिवसीय अनुष्ठान के पहले दिन व्रती स्नान के बाद मिट्टी व ईंट से बने चूल्हे में आम की लकड़ी जलाकर कद्दू-भात प्रसाद बनाती हैं। मंगलवार को नहाय-खाय के अवसर पर छठव्रती कद्दू-भात ग्रहण कर व्रत शुरू करेंगी। बुधवार को खरना में खीर प्रसाद ग्रहण करने के बाद से छठव्रती 36 घंटे का निर्जला उपवास रखेंगी।

गुरुवार को अस्ताचलगामी सूर्य को संध्या अर्घ्य और शुक्रवार को उगते सूर्य को अर्घ्य देने के साथ चार दिवसीय छठ महापर्व का समापन होगा। हालांकि कार्तिक महीने की तुलना में चैती छठ के व्रती कम होते हैं, लेकिन इसकी महत्ता में कोई कमी नहीं आती।

इस महापर्व की तैयारियां जोरों पर हैं। छठ महापर्व की तैयारी में जुटे लोग शुद्धता का पूरा ध्यान रख रहे हैं। घरों की साफ-सफाई और सजावट की जा रही है। वहीं, छठ महापर्व के गीत भी गूंजने लगे हैं। छठव्रती प्रसाद बनाने के लिए गेहूं और अन्य सामग्री की खरीदारी भी कर रही हैं।

रांची नगर निगम ने कर संग्रह में नया रिकार्ड स्थापित किया

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। रांची नगर निगम ने वित्तीय वर्ष 2024-25 में कर संग्रहण का नया कीर्तिमान स्थापित किया है। इस वर्ष कुल 80,64,37,113 की राशि एकत्र कर रांची नगर निगम झारखंड में संपत्ति कर संग्रहण में शीर्ष पर पहुंच गया है।

कर संग्रहण में डिजिटल माध्यमों का बढ़ता योगदान : नागरिकों ने डिजिटल भुगतान को अपनाते हुए 17,05,79,093.21 ऑनलाइन माध्यम से जमा किए। इसके अतिरिक्त 5,38,72,014.58 की राशि जन सुविधा केंद्रों पर जमा हुई।

डोर-टू-डोर कलेक्शन की महत्वपूर्ण भूमिका : शहर में 1,06,019 करदाताओं से

41,81,40,029.39 की राशि डोर-टू-डोर कलेक्शन के माध्यम से प्राप्त हुई, जो नगर निगम की सक्रिय पहल का परिणाम है।

वित्तीय वर्ष के अंतिम दिन भी शानदार प्रदर्शन : वित्तीय वर्ष के अंतिम दिन, 31 मार्च 2025 को ही 91,45,230 की राशि 897 करदाताओं से एकत्र की गई।

अन्य कर संग्रहण में भी वृद्धि : जल कर : 12,02,91,970 की वसूली, ट्रेड लाइसेंस : 18,370 आवेदन प्राप्त हुए, जिससे 2,16,38,840 का राजस्व अर्जित हुआ

पिछले वर्ष की तुलना में उल्लेखनीय वृद्धि : वित्तीय वर्ष 2023-24 में नगर निगम ने 70,39,63,175 की राशि वसूली थी, जबकि इस बार 10,24,73,938 अधिक कर एकत्र किया गया। रांची नगर निगम ने आश्वासन दिया है कि यह राजस्व नागरिक सुविधाओं, स्वच्छता, आधारभूत संरचना विकास और शहर को और अधिक सुंदर एवं सुव्यवस्थित बनाने में खर्च किया जाएगा।

अनिकांत ग्रुप की ओर से द आईकॉन मॉल में टाटा जूडियो का भव्य शुभारंभ

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। बारियातु स्थित द आईकॉन मॉल में रविवार को जूडियो का भव्य शुभारंभ किया गया। यह मॉल रांची के लोगों के लिए एक नए युग की शुरुआत करेगा। कंपनी के निदेशक धर्मेंद्र जैन, अक्षत जैन और अनिकांत जैन ने रांची के लोगों के लिए एक अनोखा तोहफा दिया है, जो कि आने वाले समय में लोगों का एक लाइफस्टाइल लैंडमार्क होगा।

कंपनी के डायरेक्टर ने कहा, 'यह मॉल शॉपिंग, डाइनिंग, मूवी और एंटरटेनमेंट का एक बेहतरीन संयोग होगा। यहां के लोगों को अपने परिवार के साथ समय बिताने के लिए एक अच्छा विकल्प मिलेगा।' कंपनी के अनिकांत जैन ने कहा, 'यह मॉल आने वाले समय में रांची के लोगों के लिए शॉपिंग और एंटरटेनमेंट के लिए सबसे पसंदीदा विकल्प बन कर उभरेगा और हम लोगों को बेहतर सेवा देने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे।' मॉल मैनेजर रमनदीप सिंह ने कहा कि 'हम रांची के लोगों को एक अच्छा शॉपिंग और एंटरटेनमेंट अनुभव देने के लिए पूरी तरह से उत्साहित हैं। हमारा उद्देश्य है कि हम लोगों को एक अनोखा और यादगार अनुभव प्रदान करें।' द आईकॉन मॉल में विभिन्न प्रकार के स्टोर्स, रेस्तरां और मनोरंजन विकल्प है जो कि लोगों को एक अनोखा सुखद अनुभव प्रदान करेंगे। टाटा जूडियो के शुभारंभ के साथ, द आईकॉन मॉल रांची के लोगों के लिए आर्थिक और सामाजिक विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

'सरहुल खेले चल' कार्यक्रम का दो दिवसीय आयोजन सफलता पूर्वक संपन्न

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। झारखण्ड पर्यटन विभाग द्वारा प्रकृति पर्व सरहुल के उपलक्ष्य में सरहुल खेले चल कार्यक्रम का आयोजन 30 एवं 31 मार्च 2025 को भगवान बिरसा मुंडा संग्रहालय, जेल मोड़, राँची में किया गया। यह दो दिवसीय आयोजन झारखण्ड की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पारंपरिक कला एवं आदिवासी परंपराओं को प्रदर्शित करने का एक उत्कृष्ट मंच साबित हुआ।

प्रथम दिवस

कार्यक्रम के पहले दिन बड़ी संख्या में पर्यटकों, स्थानीय नागरिकों एवं सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स ने भाग लिया। इस अवसर पर झारखण्ड पर्यटन विभाग की निदेशक श्रीमती अंजलि यादव, उप निदेशक पर्यटन श्री राजीव कुमार सिंह, संयुक्त सचिव पर्यटन श्री धर्मेंद्र दीक्षित सहित अन्य विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

द्वितीय दिवस

दूसरे दिन के कार्यक्रम में सरहुल के महत्व पर आधारित एक शॉर्ट फिल्म की स्क्रीनिंग की गई, जिसने दर्शकों को झारखण्ड की आदिवासी संस्कृति से रूबरू कराया। इसके अलावा, नागपुरी नाटक के माध्यम से झारखण्ड की लोक परंपराओं को जीवंत किया गया।

आगंतुकों के लिए आदिवासी व्यंजनों के वर्कशॉप का आयोजन किया गया, जहाँ उन्होंने स्थानीय पकवानों की बारीकियाँ सीखीं। कार्यक्रम का समापन नागपुरी रॉक शो के साथ हुआ, जिसने सभी को थिरकने पर मजबूर कर दिया।

झारखण्ड की कला एवं संस्कृति को वैश्विक पहचान

इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य झारखण्ड की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रचारित करना था। पर्यटन विभाग के प्रवक्ता ने कहा, ₹ह्यसरहुल खेले चलह्न कार्यक्रम के माध्यम से हमने झारखण्ड की पारंपरिक कलाओं, हस्तशिल्प एवं स्वदेशी उत्पादों को एक व्यापक मंच प्रदान किया है। दोनों दिनों का उत्साह देखकर हमें पूर्ण विश्वास है कि यह आयोजन झारखण्ड के पर्यटन को नई ऊँचाइयों पर ले जाएगा।

तेलुगू कम्युनिटी वेलफेयर संघ ने तेलुगु नव वर्ष उगादी उत्सव हर्षोल्लास से मनाया

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। तेलुगु नव वर्ष उगादी का उत्सव, तेलुगू कम्युनिटी वेलफेयर एसोसिएशन के तत्वावधान में चुटिया स्थित प्रगति गार्डेनिया कम्युनिटी हॉल में हर्षोल्लास से मनाया गया। रांची में रहने वाले मूलतः आंध्र प्रदेश व तेलंगाना वासी परिवार के लगभग 100 लोगों ने कार्यक्रम में भाग लिया। बच्चे, महिलाएं व पुरुषों ने पारंपरिक वेशभूषा में नृत्य, संगीत प्रस्तुति एवं महिलाओं द्वारा बनाए गए स्वादिष्ट दक्षिण भारतीय व्यंजन का भरपूर आनंद उठाया। रांची में विगत 50 वर्ष से रह रहे वरिष्ठतम तेलुगु भाषी जी. जगन्नाथ मूर्ति को आयोजन समिति की ओर से सम्मानित किया गया। सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी झारखंड के डॉ नाग पवन ने तेलुगु नववर्ष पंचांग पढ़ा। कार्यक्रम के आयोजन की जिम्मेदारी प्रमुख रूप से वी. तारकेश्वर, रमेश सुशुराला, आदित्य कुमार, डॉ किरण जालेम, डॉ वेंकट बोरला, श्रीदेवी, सुसरला गौरी ने निभायी।

जागरूकता के साथ मनोरंजन का साधन है नाटक : दिव्यानंद जी महाराज

रांची। रंगकर्मियों के बीच अंगवस्त्र और मोमेंटो भेंटकर सोमवार को युवा नाट्य संगीत अकादमी एवं चंद्रावती सह कांति कृष्ण फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान मे आयोजित छोटानागपुर राष्ट्रीय नाट्यस महोत्सव एवं कांति कृष्ण सम्मान समारोह का समापन हुआ। इस मौके पर मुख्य अतिथि स्वामी दिव्यानंद थे। उन्होंने कहा कि सामाजिक जागरूकता के साथ मनोरंजन का साधन नाटक है। मौके पर डॉ कमल बोस, महंत केशव दास जी महाराज, ब्रह्माकुमारी रामावती दीदी, शिव किशोर शर्मा, डॉक्टर अनिल ठाकुर सुमन, ऋषिकेष लाल, नारायण मिश्रा, निलय सिंह आदि मौजूद थे। डॉ दानी कर्मकार के निर्देशन में धर्मयुद्ध नाटक जिसमें धर्म के कारण लड़ाई, झगड़ा, युद्ध को प्रदर्शित किया गया। वहीं गीता थियेटर झारखंड संस्था के निदेशक प्रेम दीक्षित के निर्देशन में कसक नाटक प्रदर्शित किया गया। महोत्सव को सफल बनाने में अमर श्रीवास्तव, विनोद जायसवाल, जयदीप सहाय, देवपूजन ठाकुर, सूरज खन्ना, सुखदेव भगत, आकाश ताम्रकार ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कांग्रेस नेता केदार पासवान की माता के निधन पर प्रदेश अध्यक्ष ने दी श्रद्धांजलि

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। अनुसूचित जाति विभाग के प्रदेश अध्यक्ष केदार पासवान की माता लीलावती देवी के आकस्मिक निधन पर प्रदेश अध्यक्ष केशव महतो कमलेश और मार्केटिंग बोर्ड के चेयरमैन रविंद्र सिंह हजारीबाग, बरही प्रखंड, भण्डारो स्थित पैतृक गांव पहुंचकर उनकी माता के पार्थिव शरीर पर पुष्प माला समर्पित कर श्रद्धांजलि दी और शोक संतप्त परिजनों से मुलाकात कर सांत्वना दी। इस मौके पर प्रदेश अध्यक्ष के साथ हजारीबाग जिला अध्यक्ष शैलेंद्र यादव, कोडरमा जिला अध्यक्ष भागीरथ पासवान, विधानसभा प्रत्याशी मुन्ना सिंह, बरही विधानसभा प्रत्याशी अरुण साहू, सुजीत नगवाल, राजू राम उपस्थित थे।

स्व. अनिल टाइगर को बाबूलाल मरांडी ने दी श्रद्धांजलि

रांची। सोमवार को गाड़ी खटंगा गांव, कांके में भाजपा जिला महामंत्री स्व. अनिल टाइगर के परिजनों से मुलाकात करने पहुंचे नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी। श्री मरांडी ने स्व. टाइगर को श्रद्धांजलि अर्पित की तथा घटना की पूरी जानकारी लेते हुये कहा कि दुख की घड़ी में भाजपा परिवार परिजनों और परिवार के साथ खड़ा है।

खबर एक नजर में

अखिल राजपूताना कल्याण न्यास की बैठक में टाटीसिल्वे क्षेत्र के अध्यक्ष बने वीरेंद्र कुमार सिंह

रांची। अखिल राजपूताना कल्याण न्यास की बैठक सोमवार को टाटीसिल्वे, लालगंज, सूर्य नगर स्थित कर्नल बीके सिंह की अध्यक्षता में हुई। बैठक में समाज के उत्थान के लिये चर्चा की गई। मौके पर राष्ट्रीय अध्यक्ष रामेश्वर दयाल सिंह, राष्ट्रीय सचिव शिवाजी सिंह परमार, नित्यानंद सिंह, दिलीप सिंह, संतोष सिंह ने समाज के विकास और उसकी एकता पर अपने विचार साझा किए। बैठक में टाटीसिल्वे क्षेत्र के लिए अध्यक्ष का चुनाव किया गया। जिसमें कर्नल वीरेंद्र कुमार सिंह को अध्यक्ष के रूप में चुना गया। बैठक में संजीत सिंह, रमेश सिंह, राम देव सिंह, परशुराम सिंह, कामाख्या सिंह, हरिंदर सिंह त्रिभुवन सिंह, रोलन सिंह सहित अन्य लोग मौजूद थे।

भारतीय युवक संघ के नये अध्यक्ष राहुल अग्रवाल एवं रवि राहोत्गी बने सचिव

रांची। भारतीय युवक संघ बकरी बाजार मंदिर परिसर में सोमवार को चुनावी सभा का आयोजन किया गया। मौके पर नई समिति का गठन किया गया एवं सभी निर्वाचित सदस्यों को उनका पदभार सौपा गया। संरक्षक- निर्मल जालान, शंभू दयाल अग्रवाल, सुरेश चौधरी, बिनोद छापड़िया, रमेश खेमका, अध्यक्ष- राहुल अग्रवाल, उपाध्यक्ष- मदन बगड़िया, अरविंद चौधरी, रमेश अग्रवाल, अमर पोद्दार, मुकेश जालान, सचिव- रवि राहोत्गी, सहसचिव- किशन मोदी, कमल जालान (बंकट), राजेश बुधिया, पवन जालान, विकास अग्रवाल, सिद्धांत तोदी, विवेक अग्रवाल, मनीष अडूकिया, अमित सोनी, कोषाध्यक्ष सत्येंद्र जलान (मंटू), सह कोषाध्यक्ष- संजय चौधरी, ललित सोढाणी को बनाया गया।

नामकुम में काली पूजा का आयोजन

रांची। सदाबहार चौक में तीन दिवसीय काली पूजा का आयोजन किया जा रहा है। आयोजन समिति के विमल घोष ने बताया कि तीन दिनों तक चलने वाली काली पूजा के पहले दिन खिचड़ी का भोग, दूसरे दिन छोला भटूरा पूड़ी बुंदिया, तीसरे दिन खीर का महाभोग का वितरण किया जायेगा।

हटनिया तालाब चैती छठ महापर्व समिति का पुनर्गठन, संरक्षक बने प्रतुल शाहदेव

रांची। हटनिया तालाब के प्रांगण में सोमवार को भारतीय यूथ संगठन महा छठ पूजा समिति के तत्वावधान में बैठक हुई। बैठक की अध्यक्षता राजेंद्र कुमार उर्फ कैला यादव ने की। आगामी छठ महापर्व का भव्य आयोजन के लिये बेहतर व्यवस्था बनाने एवं विधि व्यवस्था पर विशेष रूप से चर्चा हुई। समिति द्वारा हटनिया तालाब के प्रांगण में टेंट, लाइट एवं साउंड सिस्टम की व्यवस्था की जायेगी। सभी श्रद्धालुओं के लिये शीतल जल एवं शरबत का वितरण किया जायेगा। समिति की ओर से छठ व्रतियों को दूध, गंगाजल, फल वितरित किया जायेगा। बैठक के बाद अध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद ने जिला प्रशासन से निवेदन किया कि सुरक्षा के विशेष प्रबंध किये जायें। बैठक में समिति का पुनर्गठन किया गया। इसके तहत संरक्षक के रूप में प्रतुल शाहदेव, अध्यक्ष-राजेन्द्र गोप उर्फ कैला, उपाध्यक्ष- अविनाश कुमार मिश्रा, कोषाध्यक्ष-प्रमोद पाठक, मीडिया प्रभारी- कुमुद रंजन दुबे, संगठन मंत्री-अभय कुमार तिवारी को चुना गया।

बड़गाई ईदगाह में पढ़ी गयी ईद की नमाज, सदर महताब अंसारी ने दी सभी को मुबारकबाद

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। बड़गाई ईदगाह में सोमवार को ईद की नमाज सुबह 7:30 बजे पढ़ी गई। ईद की नमाज की इमामत जामा मस्जिद बड़गाईं के खतीब इमाम जनाब मन्शुर मजहरी साहेब ने की। इस अवसर पर झामुमो नेता सह अंजुमन इस्लामिया बड़गाई के सदर महताब अंसारी ने कहा कि तमाम अहले बस्ती हजरात को अंजुमन इस्लामिया दिल की अमीक गहराइयों से ईद ए सईद की मुबारक बाद पेश करती है।

हजरात! अभी एक अजीम महीना हमसे गुजरा है जिस महीने के रोजे अहले ईमान पर फर्ज किए गए थे और जिन रोजों का मकसद इंसान के अंदर तक्वा पैदा करना था। ये महीना कुरान का महीना था। हजरात हम उम्मीद करते हैं कि अपने इस अजीम महीने का पूरा फायदा उठाया होगा और अपनी जिंदगियों में एक बड़ा इंकलाब और तब्दीली महसूस कर रहे होंगे और हम ये भी उम्मीद करते हैं कि आपका रिश्ता इस अजीम में में कुरान से बहुत गहरा हो गया था और इंशाल्लाह बक्या ग्यारह महीने भी रहेगा।

अंजुमन इस्लामिया आपको इस माह ए मुबारक में की गई इबादतों पर मुबारक बाद पेश करती है और अल्लाह से उनकी कुबूलियत की दुआ करती है और इस बात की उम्मीद करती है कि बक़्या दिनों में भी हमारी मस्जिदें वैसी ही भरी रहे। जैसे रमजान में हुआ करती थीं आपके अंदर अल्लाह से ताल्लुक का शौक, कुरान से ताल्लुक का शौक, एक दूसरे के लिए हमदर्दी व गमख्वारी, इंफाक का जज्बा, गुनाहों से बचने का जज्बा और नेकियों की तरफ लपकने का जज्बा उसी तरह बरकरार रहेगा जैसे इस अजीम महीने में था।

हजरात! रोजों का एक मकसद तो इंसान के अंदर तक्वा पैदा करना था दूसरा मकसद अल्लाह की तकबीर की सरबुलंदी भी था। अल्लाह की किबरियाई और उसकी तकबीर की सरबुलंदी हमारी जिंदगी के हर शोबे में हो, हमारी नीयतों और इखलास में हो। हमारे अकायद फिकर और नजरिए में हो, हमारी इबादतों में हो हमारी नमाजों में हो, हमारी पूरी जिंदगी में हो, हमारे घर में हो, हमारी मस्जिदों मदरसों और खानकाहों में हो, हमारे इदारों ईवानों और अंजुमनों में हो, हमारे पूरे माश्रे और समाज में हो, हमारी सियासत में हो , हमारी मईशत में हो अलगर्ज जिंदगी का कोई भी हिस्सा अल्लाह की तकबीर से आजाद न हो हजरात ये था दर असल रमजान उल मुबारक का ।

हजरात! इस बस्ती के हर शख्स का इखलाकी फर्ज है कि वो इस बस्ती की तामीर वो तरक्की में अपना फर्ज निभाए हम में का हर शख्स इस बात के लिए हमेशा फिकर मंद रहे कि इस बस्ती को तालिमी लिहाज से, इखलाकी लिहाज से, मआशी लिहाज से कैसे बेहतर बनाया जाए नशा जो एक बहुत ही खतरनाक बीमारी जो समाज को खाए जा रही है उसकी रोक थाम कैसे की जाए, शौहर बीवी के दरमियान नाइत्तफाकी और झगड़े, तलाक और खुला के बढ़ते रुझान, बात बात पर जज्बाती फैसले टूटते रिश्ते और बिखरते घर ये सब बड़े बड़े मसाइल हैं इन पर लगाम कैसे लगाया जाए, एक दूसरे के लिए दुश्मनी, कीना और हसद, गंदी साजिश और सियासत और इस तरह की दूसरी खराबियों को कैसे रोक जाए, हजरात ये हमारे लिए अहम सवालात हैं बहैस्यत ए मोमिन और अच्छे शहरी के इन सवालात का जवाब तलाश करना हमारा फर्ज है हम उम्मीद करते हैं आप हजरात अंजुम इस्लामिया की हर तामीरी वो इस्लाही कामों में भर पूर साथ देंगे और बेहतरीन रहनुमाई भी करेंगे।

हजरात! मैं ईद के इस खुशी और बा बरकत मौके पर तालीम का जिक्र किए बेगैर कैसे रह सकता हूं इंसानी जिंदगी में तालीम की क्या अहमियत है भला इस से कौन शख्स ना वाकिफ है इस्लाम तालीम पर जितना जोर देता है दुनिया का शायद ही कोई मजहब तालीम पर उतना जोता हो यही वजह है कि सबसे पहली वही इकरा से शुरू हुई (यानी पढ़) तालीम के बगैर कोई भी कौम तरक्की नहीं कर सकती तालीम ही वो चीज है। जो इंसानियत को ऊपर उठाती और कौमों पर हमुमत करने का मौका फरमाहम करती है तालीम ही वो चीज है जो इंसान को इंसान बनती है। आदम को फरिश्तों से सजदा ए ताजीम कराया गया था उसके पीछे भी ये इल्म ही वजह थी हजरात तालीम ही वो चीज है जिसके बारे में नबी नबी सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया इल्म का हासिल करना हर मुसलमान चाहे मर्द हो या औरत फर्ज है। अगर आप दुनिया में हुकूमत करना चाहते हैं तो आपको तालीम के मैदान में आगे बढ़ना होगा तालीम के बगैर आप दुनिया मैं मजलूम और महकूम ही रह जाएंगे।

मैं इस मौके पर बस्ती की इंतहाई मुतहर्रिक और एक्टिव तंजीम जमात ए इस्लामी हिन्द बड़गाईं यूनिट का दिल से शुक्रिया अदा करना चाहता हूं जो मुसलसल इस बस्ती में दावती, इस्लाही, तालिमी,रिफाही, समाजी और माश्रती फलाह वो बहबूद के लिए पैहम कोशिश कर रही है साथ ही एसआइओ और जीआईओ बड़गाईं यूनिट का भी दिल से शुक्रिया अदा करता हूं जो बच्चों, नौजवानों और खवातीन में मुतहर्रिक रोल अदा कर रही है और के अपने मिशन में आगे बढ़ रही है। वक़्फ अमेंडमेंट बिल का भी विरोध किया गया जिसने एसआइओ के बड़गाई यूनिट के और बड़गाई के सभी लोग शामिल थे।

रूक्का में कोकर के युवक की हत्या का आरोपी 5 साल बाद बिहार से पकड़ा गया

भाई ने ही दी थी राजू चैरसिया की हत्या की सुपारी

खबर मन्त्र संवाददाता

ओरमांझी। रूक्का में कोकर के युवक को धारदार हथियार से गोद कर बेरहमी से हत्या करने में शामिल एक फरार आरोपी को ओरमांझी थाना पुलिस द्वारा पांच वर्ष बाद गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है। आरोपी सुबोध तांती को पुलिस ने उसके घर महमदपुर सिकंदरा बिहार से गिरफ्तार किया है। इसकी जानकारी देते हुए थाना प्रभारी अनिल तिवारी ने 19 जुलाई 2019 को थाना क्षेत्र के रूक्का में हुई हत्या के संबंध में बताया मृतक राजू चैरसिया अपना आटो चलता था। उसके छोटे भाई ने ही राजू चैरसिया की हत्या करने की एक लाख सुपरी दी थी। घटना के दिन राजू को झांसे में लेकर रूक्का डेम बुलाया गया था। लौटने के दौरान बाइक में सवार आरोपियों ने रास्ते में रोकर राजू की हत्या कर दी थी। हत्या के बाद भाग रहे आरोपियों दो आरोपी सदर थाना क्षेत्र आदर्ष नगर कोकर तिरिल बस्ती के राजा कुमार 26 वर्ष, पिता गोवर्धन शाह व आदर्ष नगर कोकर सौरभ कमार 19 वर्ष, पिता संजय महतो को स्थानीय

पुलिस की गिरफ्त में हत्यारा।

ग्रामीणों ने पकड़ कर पुलिस को सौंप दिया था। वहीं एक आरोपी सुबोध तांती मौके से फरार होने में सफल रहा था।

भाई ने क्यो हत्या कराई थी- घटना के 8 घंटा के अंदर तत्कालिन डीएसपी चंद्रषेखर आजाद व थाना प्रभारी ने हत्या का खुलासा करते हुए मुख्य आरोपी कोकर (बरियातु रोड टुनकी टोली) रांची निवासी किरण प्रसाद का बेटा व मृतक के छोटे भाई संजय कुमार को भी गिरफ्तार कर लिया था। आरोपी भाई संजय कुमार का बडे भाई राजु चैरसिया के बीच विवाद था। दोनो का आटो था, और राजू चैरसिया ने छोटे भाई के चालक को ज्यादा पैसा देकर अपने पास रख लिया था। वहीं राजु द्वारा अक्सर छोटे भाई की पत्नी को गाली गलौज किया करता था। जिसे लेकर छोटे भाई ने अपने बड़े भाई की हत्या करने के लिए एक लाख की सुपारी दी थी। चार हजार अग्रीम राषि लेकर तीनो ने घटना कों अंजाम दिया।

अपराधी हत्या करने के लिए बेग में चाकु लेकर पहुंचे थे। घटना को अंजाम देने के बाद तानो बाईक में सवार हो भाग रहे थे। रास्ते में झाड़ी पर हथियार रखे बैग जैसे ही फेंका, तालाब पर स्नान करने गये युवकों ने देख लिया। उसे रोकने का प्रयास किया तो वे भागने के दौरान तीनों बाईक से गिर गए थें। जब युवकों पास पहुंचे तो उनके कपड़े पर लगा खून देख षंका हुई। पुछताक्ष के दौरान अपराधियों ने युवकों को धमका भागने का प्रयास किया। जिसके बाद युवकों ने अपराधियों को पकड़ पिटाई करने लगे। उसी दौरान मौका पाकर एक अपराधी सुबोध तांती फरार हो गया था।

महेशपूर में ईद मिलन का भव्य आयोजन

ईद मिलन गंगा-जमुनी तहजीब का पैगाम देता है : राजेश कच्छप

खबर मन्त्र संवाददाता

अनगड़ा। प्रखंड के महेशपूर गांव में नौजवान कमेटी के द्वारा सोमवार की शाम ईद मिलन समारोह का भव्य आयोजन किया गया । समारोह में विधायक राजेश कच्छप सिल्ली विधायक अमीत कुमार महत सहित प्रखंड के सभी समुदाय के गणमान्य लोगों ने भाग लिया । मुख्य अतिथि विधायक राजेश कच्छप ने कहा की यहां के नौजवानों ने इस तरह का बेहतरीन आयोजन करके प्रखंड के लोगों को गंगा जमूनी तहजीब का पैगाम देने का काम किया है। जो काफी सहानीय है। कहा कि ईद का त्यौहार गिले शिकवे को भूल कर गले मिलने का त्यौहार है। उन्होंने इस मंच से लोगों को ईद की मुबारक बाद दी । कहा कि रोजेदारों ने पूरे शिद्दत के साथ एक महीना रोजा रख कर देश के अमन चैन के लिए अल्लाह से दुआ करके खुशियां विखेरने का काम किया है उसके लिए हम उन सभी का आभार प्रकट करते हैं । उन्होंने आने वाले साहूल और राममनवमी का त्यौहार भी इसी तर मिल जुलकर मनाना है। हमारी संस्कृति मिल जूल कर मनाने की अपील की अनेकता में एकता यही हमारी खूबसूरती । अन्य वक्ताओं ने कहा कि अनगड़ा के लोग हर त्यौहार को भाईचारगी के साथ मना कर में शान्ति का पैगाम देते रहे हैं। समारोह में जैलेन्द्र कुमार विधायक प्रतिनिधि श्रवण मुन्डा जिप सदस्य अनुराधा मुन्डा शिवदाश गोस्वामी मुस्तफा अन्सारी शमीम खान जाकीर खान इसराज खान बसीर खान डॉ रिझू नायक जलनाथ चौधरी सुरेन्द्र महतो रामपोदो महतो शिवलाल महतो राजू प्रमाणिक सौभाग्य मुन्डा परवेज खान रुस्तम खान अनवर खान रितु महतो अजय साहू दशरथ मुन्डा संजय नायक राजेश नायक इब्राहीम अन्सारी डॉ दिनेश रयुप खान परवेज खान अलीम खान अरशद खान बरतु मुन्डा सखीचन्द महतो राजू नायक रामसाय मुन्डा मुख्य रूप से उपस्थित थे संचालन नागपूरी गायक मजबूल खान ने किया सभी ने सेवईया का मी लुत्फ उठाया

रातू में रामनवमी व चैती दुर्गा पूजनोत्सव की धूम

शाम पांच बजे होगा बेलवरण

चार की सुबह नवपत्रिका पूजा

रातू। प्रखंड के चट्टी स्थित बड़काटोली में रामनवमी एवं चैती दुर्गा पूजनोत्सव की धूम मची है। चारों ओर चहल-पहल है। 3 अप्रैल की सुबह 7 बजे सैकड़ों महिला और युवतियां कलशयात्रा निकालेंगी। वहीं, शाम 5 बजे बेलवरण होगा। 4 को नवपत्रिका और इसके अगले दिन महाष्टमी पूजा होगी। जबकि, 6 को महानवमी पूजा के बाद शाम 3 बजे महावीरी जुलूस और झंडा मिलन होंगे। यह जानकारी समिति के राजकुमार बर्मन और हरि साहू ने सोमवार की शाम दी।

दो अलग-अलग सड़क दुर्घटना में तीन घायल

बेड़ो। बेड़ो थाना क्षेत्र में सोमवार को हुई दो अलग-अलग सड़क दुर्घटना में तीन लोग घायल हो गए। पहली घटना करांजी से नरकोपी जाने वाली सड़क इडरी मोड़ के समीप एक बाइक पर सवार दो व्यक्ति सड़क पर गिरकर घायल हो गए। घटना के बाद मौके पर पहुंचे आसपास के लोगों ने बाइक सवार दोनों व्यक्तियों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया। जहां घायलों की पहचान बेड़ो के मुरतो गांव निवासी 30 वर्षीय रवि उरांव और 40 वर्षीय छोटू उरांव के रूप में हुई। वहीं दूसरी घटना रांची गुमला सड़क बारीडीह गांव के समीप हुई। जहां रोगो गांव निवासी 50 वर्षीय विमल भगत अज्ञात वाहन की चपेट में आने से घायल हो गए। जिसे राहगीरों ने उठाकर इलाज के लिए बेड़ो सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया। मिली जानकारी के अनुसार विमल भगत मानसिक स्थिति ठीक नहीं है। वे पूर्व में आर्मी के जवान भी रहे हैं। वहीं मानसिक स्थिति ठीक ना रहने के कारण विमल भगत पैदल ही घर जा रहे थे।

सरहुल हमारी सांस्कृतिक धरोहर : राकेश भगत

सरहुल पूर्व संध्या कार्यक्रम में खोड़हा दल की दर्जनों टीमों ने परंपरागत नाच गान प्रस्तुत कया

खबर मन्त्र संवाददाता

बेड़ो। सरहुल पूजा महासमिति बेड़ो के तत्वाधान मे सोमवार को महादानी मैदान में सरहुल पूर्व संध्या का आयोजन किया गया। जहां लापुंग,बेड़ो व इटकी प्रखंड के दर्जनों विभिन्न खोड़हा दल के ग्रामीणों ने ढोल,ढाक, मांदर, नगाड़ा व बांसुरी की धुन व थाप पर परंपरागत जतरा, लूझरी, जदूरा और माठा आदि राग रागिनी पर आधारित परंपरागत नाच गान प्रस्तुत किया। साथ ही जनजातीय संस्कृति की अनमोल परंपरा का अद्भुत समां बांधा। वहीं खोड़हा दलों को मांदर,दरी व गैस बत्ती लाइट देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में अथितियों का स्वागत महासमिति के

सरहुल पूर्व संध्या पर संबोधित करते संरक्षक राकेश भगत।

महादानी मैदान में सरहुल पूर्व संध्या कार्यक्रम में नृत्य करतीं युवतियां।

अध्यक्ष सुका उरांव, संरक्षक राकेश भगत व जुगेश उरांव द्वारा अंग वस्त्र देकर किया गया। मौके पर बोलते हुए महासमिति के संरक्षक राकेश भगत ने कहा कि सरहुल पूजा हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। उन्होंने कहा कि प्रकृति का पर्व सरहुल प्रकृति के संरक्षण का संदेश पूरे समाज को देता है। वहीं अध्यक्ष सुका उरांव ने कहा कि झारखंड का प्राकृतिक पर्व सरहुल हमारी संस्कृति, धर्म और अस्तित्व से जुड़ी है।यहां के सभी पर्व त्योहार में प्रकृति की पूजा-अर्चना की जाती है।हमें इस परंपरा को बचाये रखना है। जुगेश उरांव ने कहा कि सरहुल प्रकृति का पर्व है।यह आपसी प्रेम व भाई चारगी को बढ़ाता है। वहीं कार्यक्रम में मुखिया सुशांति भगत,पंसस राखी भगत,कुबा पहान,प्रभात टोप्पो,धनंजय कुमार राय, सहित कई अतिथि आदि मौजूद थे। कार्यक्रम का संचालन लालमेन तिर्की ने किया। वहीं कार्यक्रम को सफल बनाने में समिति बुधवा पहान, सुशील भगत,प्रदीप भगत, मनोज उरांव,विक्रांत उरांव,रजत भगत,पंचम तिर्की,निर्मल तिर्की, विन्नी उरांव,सोमरा उरांव, राजेश उरांव,अशोक खलखो, चरवा उरांव,सुरेश उरांव, मनोज उरांव, सुभाष,जतरु उरांव,सुखदेव उरांव, महादेव उरांव, सुकेन्द्र उरांव, सुका पहान, करमा उरांव, रंजीत टोप्पो,रविंद्र भगत, राकेश भगत, सुका उरांव, अनिल टोप्पो मंगा पहान,बुधराम उरांव, चुमानी उरांव, सुशीला भगताईन, सुकरा उरांव, सुखदेव, चारो उरांव ने सराहनीय योगदान दिया।

खबर एक नजर में

ईद उल फितर का त्योहार हर्षोल्लास के साथ मना

पिस्कानगड़ी। ईद उल फितर का त्योहार नगड़ी प्रखंड क्षेत्र नगड़ी , देवरी, बांधटोली हाईस्कूल, नयासराय, मुडमा, टूंडूल, एड़चोरो, बधेया, साहेर, बसिला पुंदाग में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया. सुबह 7:00 बजे से 9:00 बजे तक प्रखंड क्षेत्र के प्रत्येक गांवों के ईदगाह और मस्जिदों में ईद उल फितर की नमाज अदा की गई.मस्जिदे बेलाल में 8: 15 बजे जेयाउल रहमान, मदीना मस्जिद में 8:30 बजे कारी शमशाद एवं जामा मस्जिद नगड़ी में 9: बजे मौलाना अबु ओबेदा, ने ईदुल फितर की विशेष नमाज सामूहिक रूप से अदा की। मौके पर हजारों मुस्लिम धमार्लबियों ने देश की एकता, अखण्डता, शांति प्रदेश जिला और गांव के खुशहाली ,भाईचारगी की सामूहिक दुआ की ईद के नमाज के बाद सभी लोगों ने एक दुसरे से गला मिलकर ईद उल फितर की बधाई दी. इधर ईद उल फितर की नमाज को लेकर प्रशासन भी चौक चौराहों में पूलिस मुस्तेद दिखी।

हिंडालको सीएसआर विभाग की ओर से सिल्ली पुलिस को बैरकेटिंग उपलब्ध कराया गया

सिल्ली। हिंडालको मुरी वर्क्स के सीएसआर विभाग की ओर से सोमवार को सिल्ली पुलिस की अनुरोध पर 12 बैरकेटिंग उपलब्ध कराया गया। हिंडालको एचआर हेड अरुण राय ने मौके पर कहा कि सड़क पर हो रही दुर्घटनाओं में कमी लाने का हर प्रयास निरंतर किया जा रहा है और इसी कड़ी में बैरकेटिंग दिया गया ताकि सिल्ली पुलिस बैरकेटिंग का इस्तेमाल कर सुचारू यातायात प्रबंधन सुनिश्चित कर सके।वहीं थाना प्रभारी दिनेश ठाकुर ने बताया कि बैरकेटिंग के सहारे सड़कों पर आवागमन सुगम होगा और यातायात को नियंत्रित करने में काफी सहूलियत होगी। इस मौके पर हिंडालको सीएसआर के हेड अनिल सिंह,मुख्य सुरक्षा अधिकारी श्याम कुमार, कुमार अभिषेक,सिल्ली थाना के अवर निरीक्षक मुकेश कुमार कुशवाहा, अरुण कुमार यादव,विकास कुमार पासवान एवं रवि कुमार वर्मा समेत थाना के सभी कर्मचारी उपस्थित थे।

ओरमांझी में गिफ्ट एंड जेनरल स्टोर का उद्घाटन

ओरमांझी। काली मंदिर चैक ओरमांझी में सोमवार को चीकू गिफ्ट एंड जेनरल स्टोर का उद्घाटन राज्यसभा सांसद आदित्य साहू द्वारा किया गया। कहा आज के समय में युवा अपने रोजगार के प्रति काफी गंभीर है। वर्तमान समय में युवाओं समाजिक कार्यो के साथ अपनी आर्थिक मजबूती पर भी ध्यान देने की जरूरत है। उन्होने कहा विभिन्न आयोजनों में लोग अपनों को उपहार देकर अपने संबधों व स्नेह को बढाने का कार्य करते हैं। ओरमांझी बाजार के समीप दुकान खुलने से क्षेत्र के लोगों को सुविधा प्रदान होगी। वहीं संचालक कमलेष कुमार गुप्ता ने कहा ग्रामीण क्षेत्र व लोगों को सुविधा अनुरूप कम कीमत पर बेहतर सामान देने का प्रयास किया गया। वहीं स्टोर में स्कूली बच्चों की जरूरत का सामना भी उपलब्ध रहेगा। मौके पर पूर्व प्रमुख जयगोविंद उर्फ लालू साहू, गोविंदलाल गुप्ता, षिवनारायण साहू, रामअवतार गुप्ता, पवन गुप्ता, षिवषंकर लाल गुप्ता, उमाषंकर साहू, दुगार्षंकर साहू, सत्यनाराण तिवारी, नरेष महतो, रामकुमार महतो, दिलीप साहू, आदि उपस्थित थें।

ईद का त्यौहार बड़े हर्षो उल्लाश के साथ मनाया गया

खबर मन्त्र संवाददाता

मांडर/चान्हो। प्रखंड क्षेत्र में सोमवार को ईद का त्यौहार बड़े हर्षो उल्लाश के साथ मनाया गया। इस अवसर पर ईदगाह एवं मस्जिदों में ईद -उल- फितर की नमाज अदा की गई। रविवार शाम जैसे ही चांद नजर आया लोग तैयारी में जुट गए सभी बच्चे बूढ़े और जवान में खुशी का ठिकाना न था। सुबह होते ही नहा धोकर नए नए कपड़े एवं खुशबू लगाकर कर अपने-अपने ईदगाह एवं मस्जिदों में चले गए जहां ईदुल फितर की नमाज अदा करने के बाद लोग एक दूसरे से गले मिलकर ईद की मुबारक बाद दिए। ईदगाहों में कहीं कहीं तो बच्चों के लिए झूला एवं तरह-तरह की आइसक्रीम, छोला, चॉकलेट, कोल्ड ड्रिंक , गुपचुप की दुकाने सजी थी, बच्चे जी भरके लुत्फ

ईद उल फितर की नमाज अदा करते अकीदत मंद।

उठा रहे थे। बताया जाता यह त्योहार रोजे की समाप्ति का प्रतीक माना जाता है। ईद अल फितर उन सभी रोजेदारों के लिए अल्लाह की तरफ से इनाम है जिन्होंने रमजान के पाक महीने के दौरान रोजे रखे थे। यह रोजेदारों द्वारा रमजान के महीने के दौरान अल्लाह की इबादत करने और उनके बताए रास्ते पर चलने और उनका शुक्रिया अदा करने के लिए भी मनाई जाती है। ईद रमजान के पवित्र महीने के अंत का प्रतीक है। यह प्रेम, करुणा और स्नेह की भावनाओं के विस्तार का त्योहार है। ईद हमें एकता और आपसी सौहार्द का संदेश देता है। यह त्योहार सद्भाव की भावना से ओत-प्रोत है और हमें एक शांतिपूर्ण और समृद्ध समाज बनाने के लिए प्रेरित करता है। मांडर, चान्हो, पुलिस पूरी तरह मुस्तैयत दिखी किसी भी अप्रिय घटना से निपटने के लिए तैयार थी।

आपसी भाईचारा व सदभावना का ईद मिलन समारोह का आयोजन तनवीर आलम ने किया

खबर मन्त्र संवाददाता

खलारी। आपसी भाईचारा और एकता का परिचय का सदभावना का ईद त्योहार के दिन रांची जिला ग्रामीण

कांग्रेस के कोषाध्यक्ष सह राजस्व विभाग के विधायक प्रतिनिधि तनवीर आलम के आवास पर ईद मिलन समारोह का कार्यक्रम का आयोजन किया गया। समारोह में विशेष रूप से झारखंड प्रदेश कांग्रेस लेबर सेल के महासचिव राजन सिंह राजा,रांची जिला कांग्रेस महासचिव राजेश सिंह मिंटू,खिलाड़ी के विधायक प्रतिनिधि मोनू राजा, रविंद्र नाथ चौधरी मौजूद थे। ईद त्यौहार के उपलक्ष्य में आपसी भाईचारे के परिचय देते हुए एक पंक्ति में हिन्दू मुस्लिम सभी मिलकर ईद का सेवइयां खाई,और ईद का मुबारकबाद एक दूसरे को दिया। मौके पर अशोक राम, गोपाल सिंह, कामेश्वर यादव (रूबी),अजय सिंह,भोला यादव, इम्तियाज अंसारी, रवि उरांव, गांगुली जावेद, अख्तर एकबाल खान,तोहिद अंसारी,आफताब आलम,तालिब अंसारी,महबूब अब्दुल्ला,हबीब आलम,अनीस सलमान,अदनान सामी,फरहान अख्तर, इकबाल हक, हीरो अंसारी,शाहबाज खान, इम्तियाज अंसारी,कामरान अकमल,ममताज अंसारी, अनारूल अंसारी,सरफराज आलम सहित अन्य बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए।

राज्यसभा सांसद ने शिशु मंदिर में किया स्मार्ट कक्ष का उद्घाटन, छात्र बनेगें स्मार्ट

कार्यक्रम में उपस्थित राज्यसभा सांसद व अन्य।

ओरमांझी। सरस्वती षिषु विद्या मंदिर ओरमांझी के छात्र अब स्मार्ट बनेगें। सोमवार को विद्यालय में एक कार्यक्रम आयोजित कर स्मार्ट कक्ष का उद्घाटन किया गया। मुख्य अतिथि राज्यसभा सांसद आदित्य साहू स्वीच आन कर स्मार्ट कक्ष का उद्घाटन किया, कहा षिक्षा क्षेत्र में भी काफी प्रतियोगिताएं बढ़ गई। आज के समय में अपने शक्षणिक संस्थानों को आप को अपडेट रखना जरूरी है, अन्यथा आप पिछड़ जाएगें। उन्होने कहा षिक्षा के साथ संस्कार प्रदान करने वाले स्कूल के रूप में सरस्वती षिषु विद्या मंदिर को जाना जाता है। विद्यालाय में स्मार्ट कक्षा शुरू होने के बाद, अब सरस्वती षिषु विद्या मंदिर के बच्चें भी स्मार्ट हो जाएगें। विद्यालय के अध्यक्ष सत्यनाराण तिवारी ने बताया विद्यालय से पास आउट बहुत सारे छात्र चिकित्सा व प्रौधोगिक सहित विभिन्न क्षेत्र में सेवा दे रहे हैं। उन्ही में एक छात्र रौषन कुमार के प्रयास व पेंग उषा मार्टिन के सौजन्य से विद्यालय में समार्ट सिस्टम लगाया गया है। कार्यक्रम में प्राचार्य ओमप्रकाष चंद्रवंषरी, गोविंदलाल गुप्ता, रामअवतार गुप्ता, शंकरलाल गुप्ता, दुगार्षंकर साहू, उमाषंकर साहू, प्रकाष जायसवाल, सत्यमराज कुष्वाहा, दिलीप मेहता, रामकुमार महतो, अमरनाथ चैधरी, रामप्रसाद महतो, विनोद सिंह, किषोर महतो प्रयाग महतो, संतोष महतो व नंदकिषोर महतो सहित षिक्षक-षिक्षिकाए व छात्र आदि उपस्थित थें।

रातू : सरहुल की शोभायात्रा आज, तैयारी पूरी

चमरा लिंडा हैं मुख्य अतिथि सुबोध कांत भी होंगे शामिल

खबर मन्त्र संवाददाता

रातू। सरहुल पूजा समिति की ओर से मंगलवार की दोपहर बड़काटोली अखरा से दिन के 12 बजे सरहुल महोत्सव की शोभायात्रा निकाली जायेगी। इसकी तैयारी पूरी कर ली गयी है। इसमें राज्य के काबिना मंत्री चमरा लिंडा बतौर मुख्य अतिथि होंगे। वह यहां आधे घंटे रहने के बाद गुमला के लिये प्रस्थान करेंगे। विशिष्ट अतिथियों में पूर्व केंद्रीय मंत्री सुबोधकांत, राज्यसभा सांसद दीपक प्रकाश, विधायक नवीन जायसवाल, कांग्रेस नेता अजय नाथ शाहदेव, जिप अध्यक्ष निर्मला भगत व प्रमुख संगीता तिर्की शामिल हैं। यह जानकारी अमर उरांव ने दी। वहीं, तिगरा मुखिया सुखदेव उरांव ने बताया कि पांच पड़हा कला संस्कृति भवन मुख्यालय में शाम 3 बजे सरहुल जुलूस निकाला जायेगा। कार्यक्रम में अजय नाथ शाहदेव खास मेहमान होंगे।

सिमलिया में होगा मिलन महोत्सव

आदिवासी सरना विकास समिति की ओर से सिमलिया जमहरिया मैदान में 2 बजे 12 पड़हा सरहुल मिलन महोत्सव का आयोजन किया जायेगा। इसमें विधायक नवीन जायसवाल मुख्य और प्रमुख संगीता तिर्की विशिष्ट अतिथि होंगे। यह जानकारी समिति के महासचिव मुकेश भगत ने दी। थानेदार आरएन सिंह ने बताया कि सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किये गये हैं।

सिल्ली आसपास के क्षेत्र में ईद उल फितर पूरे हर्षोउल्लास के साथ मनाया गया

सिल्ली। मुस्लिम समुदायों के लोगों ने चांद का दीदार होने के बाद सोमवार के दिन सिल्ली आसपास के क्षेत्रों में ईद उल फितर पूरे हर्षोउल्लास के साथ मनाया। सभी ईदगाह और मस्जिदों में सुबह में अलग-अलग समय पर नमाज अदा किया गया। मुस्लिम समुदाय के लोगों ने सुबह में मस्जिद जाकर नमाज अदा किया तथा खुदा से सुख, शांति और बरक्कत के लिए दुआएं मांगी और कहा कि ईद त्योहार मूल रूप से भाईचारे को बढ़ावा देने वाला त्यौहार है। इस त्यौहार को सभी आपस में मिलकर मनाते हैं। यह त्यौहार भाईचारे की भावना को मजबूत बनाता है तथा करुणा भाव और दान की प्रवृत्ति को अपनाने का संदेश देता है।वहीं मौलाना महताब आलम के द्वारा मस्जिद में गंगा,जमुनी तहजीब का पाठ पढ़ाया गया जो की भाईचारे और एकता का प्रतीक है। मस्जिद में मोहम्मद फारूक,मजीद आलम, मंसूर अली, मकसूद आलम, सैयद अली,दनिश हाफिज साहब,अब्दुल समद, सैकूल खान,मोहम्मद अनवर, मोहम्मद जमरूद्दीन ने नमाज अदा कर कहा कि हम लोग कामना करते हैं कि यह पर्व सभी के जीवन में शांति,समृद्धि और खुशियां लाये।

पीएम श्री योजना के अंतर्गत बिरसा मुंडा लर्निंग फेस्टिवल का आयोजन

खबर मन्त्र संवाददाता

सोनाहातू। प्रखंड के पीएम श्री कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय सोनाहातू में पीएम श्री योजना के अंतर्गत बिरसा मुंडा लर्निंग फेस्टिवल का आयोजन किया गया। जिसमें राहे आवासीय बालिका विद्यालय के छात्राओं ने भी भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलित कर जिप सदस्य मंजू सिंह मुंडा, विधायक प्रतिनिधि रोहिताश चौधरी, सांसद प्रतिनिधि मनोज कुमार महतो, समाजसेवी राजेन्द्र महतो एवं कार्तिक महतो ने संयुक्त रूप में किया। इस दौरान विद्यार्थियों

ने अपनी पारंपरिक संस्कृति और धरोहर से जुड़े अस्त्र-शस्त्र, दैनिक उपयोग की वस्तुएं और कृषि उपकरणों का प्रदर्शन किया।कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को अपने पारंपरिक ज्ञान, सांस्कृतिक धरोहर और आदिवासी विरासत से अवगत कराना था। इस आयोजन ने छात्राओं को अपनी संस्कृति को और आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया।पारंपरिक वस्तुओं और

कलाओं का प्रदर्शन छात्राओं ने धान काटने वाले हसुआ, तीर-धनुष, मिट्टी के बर्तन, बांस से बने दौरा,मछली पकड़ने के लिए जाल व बंसी, ढोल, लोटा, कांसे के बर्तन, सूप और खेती-बाड़ी में उपयोग होने वाले कुदाल सहित कई पारंपरिक वस्तुओं का प्रदर्शन किया। उन्होंने इन वस्तुओं के उपयोग और उनके महत्व के बारे में भी बताया। इसके अलावा, संथाली, नागपुरी नृत्य और संगीत की शानदार प्रस्तुति दी गई। विद्यार्थियों ने बिरसा मुंडा की जीवनी से संबंधित कहानी, फोटो, नाटक और कला-संस्कृति मॉडल भी प्रस्तुत किए, जिससे उनकी जीवनगाथा और आदिवासी संस्कृति के प्रति जागरूकता बढ़ी।मौके पर वार्डन शशि बाड़ा,सरोजिनी टोप्पो, फुलमनी बाड़ा,सौरभ कुमार सिंह,वनमाली कुमार, राजाराम लोहरा,ज्ञानरंजन महतो,राहे वार्डन परमेश्वरी कुमारी,विमला कुमारी सहित विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्य एवं छात्राओं के अभिभावक मौजूद थे।

खबर मन्त्र

रांची. मंगलवार. 01 अपैल 2025

epaper.khabarmantra.net

अभिव्यक्ति

अब 15 मिनट सिटी

दुनिया भर में 15 मिनट सिटी बनाने की कोशिश हो रही है, जहां शहर के एक छोर से दूसरे छोर तक पहुंचने में केवल 15 मिनट लगें। हाल में ही 1,400 हरित इमारत परियोजनाओं को मंजूरी देकर उत्तर प्रदेश सुर्खियों में रहा। ये परियोजनाएं 1.6 अरब वर्ग फुट में बनेंगी। सवाल यह है कि ऊर्जा बचाने वाली ऐसी लीड सर्टिफाइड मीनारों का क्या फायदा, जिनमें बने दफ्तरों के कर्मचारी रोजाना दो-दो घंटों तक संकरी और भीड़ भरी सड़कों पर फंसे रहें, गंदी हवा में सांस लेते रहें और पेट्रोल-डीजल जलाते रहें? अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी (आईईए) का अनुमान है कि दुनिया भर में 30 फीसदी ऊर्जा इमारतों के रखरखाव में खर्च होती है और 26 फीसदी उत्सर्जन भी उन्हीं से होता है। कुल मिलाकर एक तिहाई ऊर्जा खपत और उत्सर्जन दुनिया भर की इमारतों से ही होता है, जिसमें इमारतें बनाना, उन्हें गर्म या ठंडा रखना, घर-दफ्तर रोशन करना तथा उनमें लगे उपकरण चलाना भी शामिल है। यूएस ग्रीन बिल्डिंग काउंसिल हर साल लीड (लीडरशिप इन एनर्जी ऐंड एनवायरन्मेंट डिजाइन) के मामले में शीर्ष 10 देशों और क्षेत्रों की जो सालाना सूची जारी करती है, उसमें देश तीसरे स्थान पर है। 2024 में भारत में कुल 85 लाख वर्ग मीटर क्षेत्रफल वाली 370 परियोजनाओं को लीड से प्रमाणपत्र मिले। भारतीय हरित भवन परिषद (आईजीबीसी) और अन्य प्रमाणन संस्थाओं ने लीड, गृह (ग्रीन रेटिंग फॉर इंटीग्रेटेड हैबिटेट असेसमेंट) तथा एज रेटिंग वाली व्यावसायिक एवं रिहायशी इमारतों के निर्माण को बढ़ावा देकर इस अभियान को आगे बढ़ाया है। कन्फेडरेशन ऑफ रियल स्टेट डेवलपर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (क्रेडाई) ने 2030 तक 4,000 प्रमाणित हरित आवासीय परियोजनाओं को बढ़ावा देने के मकसद से आईडीबीसी के साथ हाथ मिलाया है।

तकनीक और पुरखों का ज्ञान जल संकट का समाधान

जल संकट आज दुनिया के सबसे गंभीर मुद्दों में से एक है। बढ़ती जनसंख्या, अनियंत्रित औद्योगीकरण, और जलवायु परिवर्तन ने पानी की उपलब्धता पर गंभीर प्रभाव डाला है। इस संकट से निपटने के लिए हमें परंपरागत जल संरक्षण तकनीकों और आधुनिक विज्ञान और तकनीक के समन्वय की आवश्यकता है। जल संरक्षण का अर्थ है पानी के स्रोतों का समझदारी से प्रबंधन करना ताकि भविष्य में पानी की कमी न हो। भारत के पास दुनिया का केवल चार फीसदी मीठा पानी है, लेकिन देश की 18 फीसदी आबादी जल संकट से जूझ रही है। इस समस्या को हल करने के लिए सरकार और समुदायों की भागीदारी जरूरी है। आंध्र प्रदेश में जल शक्ति अभियान और नीरू-चेट्टु जैसी योजनाओं ने पानी की उपलब्धता बढ़ाने में मदद की है।

स्थानीय समुदाय अपने पारंपरिक ज्ञान और नए तकनीकी उपायों को अपनाकर पानी का बेहतर उपयोग कर सकते हैं। महाराष्ट्र का हिवरे बाजार मॉडल गांव में पारंपरिक और आधुनिक तकनीक का उपयोग करके भू-जल स्तर बढ़ाया गया। वर्षा जल संचयन और कुओं की सफाई से यहा जल उपलब्धता बढ़ी। राजस्थान की जोहड़ प्रणाली से राजस्थान में छोटे-छोटे तालाबों (जोहड़) के निर्माण से भू-जल स्तर सुधरा और सूखे की समस्या कम हुई। उत्तराखंड की चाल-खाल प्रणाली भी कारगर है। इसके अंतर्गत छोटे जलाशय वर्षा जल को संग्रहीत कर भू-जल पुनर्भरण में मदद करते हैं। पानी के कुशल उपयोग के लिए पारंपरिक तरीकों और नई तकनीकों को अपनाना जरूरी हैं।

नागालैंड की जाबो कृषि पद्धति भी सफल है। यह विधि बारिश के पानी को इकट्ठा कर खेती के लिए उपयोग करती है, जिससे सूखे की मार कम होती है। राजस्थान के टांके वर्षा जल संग्रहण के लिए बनाए गए छोटे जल भंडार हैं, जिनमें अब आधुनिक निस्पंदन तकनीक भी जोड़ी जा रही है। तमिलनाडु में एरियों (तालाब) प्रणाली भी वर्षा जल को संग्रहित कर सिंचाई और पेयजल आपूर्ति में मदद करती है। जल संरक्षण के लिए जंगल, नदी, तालाब और मिट्टी को संतुलित बनाए रखना जरूरी है। राजस्थान में ओरण (पवित्र वन) क्षेत्रों में जल स्रोतों और जैव विविधता की सुरक्षा होती है, जिससे मरुस्थलीकरण को रोका जाता है। मेघालय की झरना पुनरुद्धार परियोजना के तहत वनों और जलग्रहण क्षेत्रों को पुनर्जीवित किया जा रहा है, जिससे जल स्रोत संरक्षित हो रहे हैं। मध्य प्रदेश में नर्मदा सेवा यात्रा पहल का उद्देश्य नर्मदा नदी के किनारे पेड़ लगाकर जल संरक्षण और पर्यावरण सुधार को बढ़ावा देना है।

- डॉ सत्यभान

जलवायु परिवर्तन और अनियमित बारिश जल संकट को बढ़ा सकते हैं। ऐसे में परंपरागत जल संरक्षण प्रणालियां मददगार साबित हो सकती हैं। बुंदेलखंड में सूखा राहत कार्य के अंतर्गत तालाबों के पुनर्निर्माण और वर्षा जल संचयन से इस क्षेत्र में पानी की समस्या कम हो रही है। लद्दाख में सर्दियों में कृत्रिम हिमनद बनाए जाते हैं, ताकि गर्मियों में इनसे पानी मिलता रहे।

महाराष्ट्र की पानी पंचायतें और झारखंड की ग्राम सभाएं जल संसाधनों के न्यायसंगत उपयोग को सुनिश्चित कर रही हैं।

जलवायु परिवर्तन और अनियमित बारिश जल संकट को बढ़ा सकते हैं। ऐसे में परंपरागत जल संरक्षण प्रणालियां मददगार साबित हो सकती हैं। बुंदेलखंड में सूखा राहत कार्य के अंतर्गत तालाबों के पुनर्निर्माण और वर्षा जल संचयन से इस क्षेत्र में पानी की समस्या कम हो रही है। लद्दाख में सर्दियों में कृत्रिम हिमनद बनाए जाते हैं, ताकि गर्मियों में इनसे पानी मिलता रहे। हालांकि, बढ़ते तापमान से यह विधि चुनौतियों का सामना कर रही है। गुजरात में वाडी प्रणाली के तहत जल संरक्षण के लिए टपक सिंचाई और बहुफसलीय खेती अपनाई जाती है। जलवायु परिवर्तन, औद्योगिक प्रदूषण, असमान जल वितरण और सरकारी योजनाओं में पारंपरिक प्रणालियों की अनदेखी प्रमुख बाधाएं हैं।

समुदायों को जल संसाधनों के प्रबंधन में अधिकार मिलना चाहिए ताकि वे जल को संधारणीय रूप से उपयोग कर सकें। महाराष्ट्र की पानी पंचायतें इन पंचायतों के माध्यम से किसानों को पानी का न्यायसंगत वितरण सुनिश्चित करती हैं। झारखंड में ग्राम सभा अधिनियम के तहत गांव की सभाएं छोटे जलाशयों का प्रबंधन कर रही हैं। ओडिशा में पाणी पंचायत योजना सामुदायिक भागीदारी से जल प्रबंधन को बढ़ावा देती है। कई बार देश में शहरों को अधिक पानी दिया जाता है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में कमी हो जाती है। उदाहरण के लिए, चेन्नई के लिए आसपास के गांवों से पानी लिया जाता है, जिससे किसानों को परेशानी होती है। हिमालय के ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं, जिससे गंगा जैसी नदियों का प्रवाह कम हो रहा है और जल संकट बढ़ रहा है।

पारंपरिक जल संरक्षण प्रणालियों को सरकारी योजनाओं में ज्यादा महत्व नहीं दिया जाता। कई उद्योग अपशिष्ट जल को नदियों और तालाबों में छोड़ देते हैं, जिससे जल स्रोत दूषित हो जाते हैं। इसलिए परंपरागत जल संरक्षण प्रणालियों को कानूनी दर्जा मिलना चाहिए। वैज्ञानिक संस्थानों, सरकारी एजेंसियों और स्थानीय समुदायों के बीच साझेदारी को मजबूत करना चाहिए। आईआईटी मद्रास ग्रामीण इलाकों में वर्षा जल संचयन के लिए तकनीकी सहायता दे रहा है। जल प्रबंधन योजनाओं में स्थानीय लोगों की भागीदारी बढ़ानी चाहिए। जल, जंगल और भूमि को एक साथ जोड़कर संरक्षण योजनाएं बनानी चाहिए। आधुनिक तकनीकों और पारंपरिक ज्ञान को मिलाकर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने की रणनीति बनाई जानी चाहिए। शहरी जल पुनर्चक्रण के लिए शहरों में अपशिष्ट जल को पुनः उपयोग में लाने की प्रणाली विकसित करनी चाहिए।

जल संरक्षण केवल सरकारी प्रयासों से संभव नहीं है, बल्कि इसमें समुदायों की भागीदारी भी बहुत जरूरी है। पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक तकनीक को मिलाकर जल संसाधनों का कुशल प्रबंधन किया जा सकता है। जल शक्ति अभियान और मनरेगा जैसी योजनाओं के साथ एआई आधारित निगरानी प्रणाली को जोड़कर जल संरक्षण को और प्रभावी बनाया जा सकता है। इससे जल संकट से निपटने में मदद मिलेगी और भविष्य के लिए जल सुरक्षा सुनिश्चित होगी। कानूनी मान्यता, वैज्ञानिक सहयोग, स्थानीय भागीदारी, जल पुनर्चक्रण और जलवायु अनुकूलन उपायों को अपनाकर जल संरक्षण को प्रभावी बनाया जा सकता है।

जल संकट से निपटने के लिए हमें अतीत की सीख और भविष्य की तकनीकों के बीच संतुलन बनाना होगा। परंपरागत जल संरक्षण प्रणालियां हमें स्थिरता और स्थानीय अनुकूलन का ज्ञान देती हैं, जबकि आधुनिक तकनीकें जल संसाधनों के कुशल प्रबंधन में सहायता कर सकती हैं। यदि हम दोनों का संगम करके कार्य करें, तो जल संकट का स्थायी समाधान प्राप्त किया जा सकता है। ₹बूंद-बूंद से घड़ा भरता है₹ जल संरक्षण की दिशा में एक छोटा प्रयास भी भविष्य में बड़ा बदलाव ला सकता है।

आज का राशिफल

मेष : कारोबारी काम में नवीन तालमेल और समन्वय बन जाएगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कर भला तो हो भला वाली कहावत याद रखें। किसी को हानी पंहुचाने की चेष्टा न करें अन्यथा हानि संभव है। धार्मिक कार्य में समय और धन व्यय होगा। कर्ज तथा रोगों से मुक्ति भी संभव है। इच्छित कार्य सफल होंगे। शुभांक-5-6-8

वृष : यात्रा शुभ रहेगी। अपने काम पर पैनी नजर रखिए। विरोधी नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेगा। अपने काम को प्राथमिकता से करें। आर्थिक हित के काम को साधने में मदद मिल जाएगी। व्यर्थ प्रपंच में समय नहीं गंवाकर अपने काम पर ध्यान दीजिए। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभांक-6-7-8

मिथुन : शनै-शनै स्थिति पक्ष की बनने लगेगी। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। यात्रा का दूरगामी परिणाम मिल जाएगा। आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। सुखद समय की अनुभूतियां प्रबल होगी। लाभदायक कार्यों की चेष्टाएं प्रबल होंगी। शुभांक-2-6-9

कर्क : मध्याह्न से ही आशाएं बलवती होंगी। महत्वपूर्ण कार्यों को आज ही निपटा लें, उसके बाद समय व्ययकारी सिद्ध होगा। भ्रातृपक्ष में विरोध होने की संभावना है। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। इच्छित कार्य सफल होंगे। आर्थिक हित के काम को साधने में मदद मिल जाएगी। शुभांक-6-7-9

सिंह : कामकाज में आ रही बाधा को दूर कर लेंगे। सुविधा और समन्वय बना रहने से कामकाज में प्रगति बन जाएगी। आर्थिक हित के काम को साधने में मदद मिल जाएगी। यात्रा शुभ रहेगी। माता पक्ष से विशेष लाभ। कार्यक्षेत्र में संतोषजनक सफलता मिलेगी। यात्रा का परिणाम मिल जाएगा। शुभांक-4-6-7

कन्या : अपने काम पर पैनी नजर रखिए। स्वास्थ्य लाभ में समय और धन व्यय होगा। लेन-देन में अस्पष्टता ठीक नहीं। मध्याह्न पूर्व समय आपके पक्ष का बना रहेगा। समय पक्ष का बना रहेगा। कारोबारी काम में प्रगति बनती रहेगी। लेन-देन में आ रही बाधा दूर करने का प्रयास होंगे। शुभांक-4-6-8

तुला : कहीं रुका हुआ पैसा वसूलने में मदद मिल जाएगी। व्यर्थ प्रपंच में समय नहीं गंवाकर अपने काम पर ध्यान दीजिए। पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी। आर्थिक हित के काम को साधने में मदद मिल जाएगी। शुभांक-1-5-7

वृश्चिक : अपने काम को प्राथमिकता से करें। आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। आगे बढ़ने के अवसर लाभकारी सिद्ध होंगे। कुछ आर्थिक संकोच पैदा हो सकते है। कोई प्रिय वस्तु या नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे। पुराने मित्र से मिलन होगा। अपने हित के काम सुबह-सवेरे निपटा लें। शुभांक-5-6-8

धनु : धार्मिक आस्थाएं फलीभूत होंगी। निर्मूल शंकाओं के कारण मनस्ताप भी पैदा हो सकते है। कामकाज की व्यस्तता से सुख-आराम प्रभावित होगा। धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। मानसिक एवं शारीरिक शिथिलता पैदा होगी। श्रेष्ठजनों की सहानुभूतियां होगी। समय पक्ष का बना रहेगा। शुभांक-2-6-8

मकर : परिवारजन का सहयोग व समन्वय काम को बनाना आसान करेगा। समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। आलस्य का त्याग करें। कारोबारी काम में नवीन तालमेल और समन्वय बन जाएगा। जीवन साथी अथवा यार दोस्तों के साथ साझे में किए जा रहे काम में लाभ मिल जाएगा। शुभांक-5-6-9

कुंभ : पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। जोखिम से दूर रहना ही बुद्धिमानी होगी। ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं। महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। मित्र से मिलन होगा। शुभांक-3-8-9

मीन : भ्रातृपक्ष में विरोध होने की संभावना है। मान-सम्मान बढ़ेगा। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश सफल होगी। आगे बढ़ने के अवसर लाभकारी सिद्ध हो रहे हैं। शुभांक-3-5-6

संस्थापक
स्व. डॉ अभय कुमार सिंह

स्वामित्व वृन्दा मीडिया पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक, प्रकाशक
मंजू सिंह

द्वारा चिरौंदी, बोड़ेया रोड, रांची (झारखंड) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

प्रधान संपादक
सौरभ कुमार

संपादक
अविनाश ठाकुर*

फोन : 95708-48433
पिनः -834006

e-mail
khabarmantra.city@gmail.com

R.N.I No.
JHAHIN/2013/51797

धनबाद कार्यालय
लुबी सर्कुलर रोड, धनबाद 826001 से प्रकाशित।

(R.N.I No. आवेदित)

*पीआरबी एक्ट के अंतर्गत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी। प्रकाशित खबरों से संबंधित किसी भी विवाद का निपटारा रांची न्यायालय में ही होगा।

लेटर टू एडिटर

सौर ईंधन

देश में पेट्रोल-डीजल की खपत में लगातार बढ़ोतरी होती जा रही है। जब खपत में वृद्धि होगी तो इसकी कीमतों में भी उछाल आएगा। ऐसी स्थिति में सरकार को सौर ऊर्जा संयंत्रों और इलेक्ट्रिक वाहनों की ओर ध्यान देने की जरूरत है। हाल ही में चीन ने सौर ऊर्जा से चलने वाले वाहन बनाए हैं जो सूर्य ऊर्जा न रहने पर भी काम करेगा। इस पर तकनीकी रूप से बहुत ज्यादा काम हुआ है। भारत को भी ऐसा करने की जरूरत है। तभी पेट्रोल-डीजल की खपत और और इसकी बढ़ती कीमतों से निजात मिल सकती है।

-राहुल उपाध्याय, रांची

नशे का कारोबार

देश में बढ़ते नशीले पदार्थों की तस्करी पर चिंता व्यक्त करने वाला था। देश में नशीले पदार्थों की चोरी-छिपे खेप पड़ोसी देश अफगानिस्तान से ईरान के रास्ते हमारे देश में पहुंचती है। नशीले पदार्थों के गोरख धंधों के लिए इंटरनेट की आधुनिक तकनीक तथा कोरियर सर्विस का इस्तेमाल किया जा रहा है। **- रवि, गुमला**

ट्वीट

अमन, भाईचारे और सौहार्द का त्योहार ईद-उल-फितर की सभी को दिली मुबारकबाद। आप सभी स्वस्थ, सुखी और खुशहाल रहें, यही दुआ करता हूँ।

ईद मुबारक

- हेमंत सोरेन, सीएम

देश के विश्वकमाओं के हुनर को सम्मान और प्रोत्साहन दे रही है मोदी सरकार।

पीएम विश्वकर्मा योजना के अंतर्गत 18 व्यवसाय के कारीगरों और शिल्पकारों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है, साथ ही अब तक 1.49 लाख लाभार्थियों को व्यवसाय करने के लिए 1,190 करोड़ का ऋण भी दिया जा चुका है।

- सीपी सिंह, विधायक, रांची

नैतिक पतन के चलते खतरे में इंसानी रिश्ते और असुरक्षित समाज

-डॉ. सत्यवान सौरभ

समाज में कितना पतन बाकी है? यह सुनकर दिल दहल जाता है कि कोई बेटा अपने ही माता-पिता की इतनी निर्ममता से हत्या कर सकता है। महिला ने जेठ के साथ मिलकर अपने दो वर्ष के बेटे को मरवा दिया। पत्नी ने प्रेमी सँग मिलकर मर्चेंट नेवी मे अफसर पति के टुकड़े-टुकड़े कर ड्रम में डाल दियाा। पिता ने नौकर से अपने बेटे की हत्या करवायीं। ये कुछ वारदातें तो बानगी भर हैं। दरअसल नैतिक पतन के चलते इस तरह की खबरें अब आम हो रही हैं। ऐसे अपराध यह दिखाते हैं कि समाज में मानसिक संतुलन, नैतिकता और पारिवारिक मूल्यों में कितनी गिरावट आ चुकी है। लेकिन यह भी ध्यान देने की बात है कि नकारात्मक घटनाएँ समाचारों में ज्यादा दिखाई देती हैं, क्योंकि वे लोगों का ध्यान आकर्षित करती हैं। समाज में आज भी बहुत से लोग हैं जो प्रेम, सहयोग और नैतिकता से भरे हुए हैं। हमें जरूरत है कि हम अच्छाई को भी उतना ही महत्त्व दें और समाज को बेहतर बनाने की दिशा में काम करें। इस पतन के कारणों को समझकर समाधान निकालना जरूरी है- परिवारों में संवाद बढ़ाना, मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान देना, नैतिक शिक्षा को मजबूत करना और अपराध रोकने के लिए सख्त कदम उठाना। हमें यह भी सोचना होगा कि हम किस तरह के मूल्यों को बढ़ावा दे रहे हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए कैसा समाज बना रहे हैं। समाज के पतन को पूरी तरह रोकना कठिन हो सकता है, लेकिन हम सब मिलकर इसे धीमा कर सकते हैं और सही दिशा में मोड़ सकते हैं।

आज के समय में जब हम समाचार पत्रों और सोशल मीडिया पर नजर डालते हैं तो चारों ओर अपराध, धोखा, हिंसा और नैतिक पतन की खबरें देखने को मिलती हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि समाज घोर कलयुग के प्रभाव में प्रवेश कर चुका है। पारिवारिक सम्बंधों में विश्वास की कमी, नैतिक मूल्यों का ह्रास और भौतिक सुखों की अंधी दौड़ ने मानवीय संवेदनाओं को कमजोर कर दिया है। समाज में नैतिकता, रिश्तों की अहमियत और मानवीय संवेदनाएँ धीरे-धीरे कमजोर होती जा रही हैं। हत्या, विश्वासघात, स्वार्थ, लालच और नैतिक पतन की घटनाएँ लगातार बढ़ रही हैं। यह देखकर ऐसा लगता है कि समाज एक अंधकारमय दौर की ओर बढ़ रहा है। ऐसे अपराध यह दिखाते हैं कि समाज में मानसिक संतुलन, नैतिकता और पारिवारिक मूल्यों में कितनी गिरावट आ चुकी है। समाज में जिस तरह से नैतिक पतन बढ़ रहा है, वह केवल अपराधों की संख्या नहीं बल्कि पारिवारिक और सामाजिक ताने-बाने के टूटने का संकेत भी देता है।

समाज में रिश्तों की अहमियत धीरे-धीरे कम होती जा रही है और इसके कई कारण हो सकते हैं। पहले जहाँ रिश्तों में अपनापन, विश्वास और त्याग होता था, वहीं अब स्वार्थ, लालच और दिखावे ने उनकी जगह ले ली है। माता-पिता, भाई-बहन, पति-पत्नी और दोस्तों के बीच भी आजकल स्वार्थ और लालच हावी होता जा रहा है। परिवार, जो पहले प्रेम और सहयोग का केंद्र हुआ करता था, अब झगड़ों और आपसी मतभेदों का शिकार बनता जा रहा है। छोटी-छोटी बातों पर हत्या, बलात्कार, लूटपाट और धोखाधड़ी जैसी घटनाएँ बढ़ रही हैं। परिवार के सदस्य तक एक-दूसरे के जीवन को खतरे में डाल रहे हैं। लोग नैतिकता और ईमानदारी को छोड़कर किसी भी तरह से धन और सफलता प्राप्त करने की कोशिश कर रहे हैं, चाहे उसके लिए उन्हें किसी का शोषण ही क्यों न करना पड़े। पहले लोग जीवन में धैर्य रखते थे, कठिनाइयों को सहन करते थे, लेकिन आजकल गुस्सा और अधीरता लोगों पर हावी हो गई है। छोटे-छोटे विवाद हिंसक रूप लेने लगे हैं। धर्म केवल दिखावे का साधन बनता जा रहा है, जबकि नैतिकता और ईमानदारी की कीमत घटती जा रही है। लोग दूसरों को नैतिकता का पाठ पढ़ाते हैं, लेकिन खुद सही राह पर नहीं चलते। पहले संयुक्त परिवार होते थे, जहाँ बुजुर्गों का मार्गदर्शन रहता था लेकिन अब व्यक्तिगत स्वतंत्रता और आधुनिकता के नाम पर पारिवारिक मूल्यों में कमी आ रही है। आर्थिक दबाव, रिश्तों में तनाव और व्यक्तिगत इच्छाओं के टकराव से लोग मानसिक रूप से अस्थिर हो रहे हैं, जिससे वे गलत फैसले लेते हैं। इंटरनेट पर हिंसा, अपराध और अनैतिकता को कहीं न कहीं सामान्य बना दिया गया है। लोग बिना सोचे-समझे घातक कदम उठा लेते हैं। स्कूलों और परिवारों में बच्चों को सही और गलत का फर्क कम सिखाया जा रहा है। लालच, ईर्ष्या और व्यक्तिगत स्वार्थ बढ़ रहे हैं। अपराधी जानते हैं कि सजा मिलने में देरी होगी या बचने का रास्ता मिल जाएगा, जिससे अपराधों की संख्या बढ़ रही है।

अब सवाल है कि इस नैतिक गिरावट को कैसे खत्म किया जाए।

तालाब का पानी कम हुआ और मछली मारने के लिये उतर पड़ें नवयुवक। जगरन्नाथपुर धुर्वा रांची स्थित तालाब। तस्वीरः- अजय सानी

क्यों छोटी-छोटी बातें हमें इतनी प्रभावित करती हैं?

अदिति भसीन

क्यों छोटी-छोटी बातें हमें इतनी प्रभावित करती हैं? एक मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण

कई बार हम खुद से सवाल करते हैं मैं इतनी छोटी-छोटी बातों से इतना क्यों प्रभावित हो जाता हूँ? कोई हल्की-फुल्की आलोचना हो, किसी की अनदेखी, काम में छोटी सी गलती या किसी की कही बात ये सब हमारे मन पर गहरा असर छोड़ सकते हैं। यह सिर्फ संयोग नहीं है, बल्कि हमारे मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक तंत्र का हिस्सा है।

हमारी भावनाएँ और प्रतिक्रियाएँ हमारे बचपन के अनुभवों, परवरिश, आत्म-सम्मान और मानसिक स्थिति से जुड़ी होती हैं। अगर बचपन में हमें बार-बार अस्वीकृति मिली हो, आलोचना झेलनी पड़ी हो, या हमें अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का सही मौका न मिला हो, तो बड़े होकर हम छोटी बातों को भी बहुत गहराई से महसूस करने लगते हैं। यह एक अनदेखा घाव हो सकता है, जो बार-बार कुरेदा जाता है।

इसके अलावा, हमारा मस्तिष्क नकारात्मक घटनाओं को अधिक पकड़ कर रखता है। यह एक प्राकृतिक प्रवृत्ति है, जिसे 'नेगेटिविटी बायस' कहा जाता है। हमारे दिमाग को यह लगता है कि छोटी-छोटी नकारात्मक बातें भविष्य में खतरे से बचने में मदद करेंगी। इसलिए जब कोई हल्की सी आलोचना होती है, तो हम उसे बार-बार सोचते हैं और खुद को दोषी महसूस करने लगते हैं।

संवेदनशीलता भी एक कारण हो सकती है। कुछ लोग स्वाभाविक रूप से अधिक संवेदनशील होते हैं और छोटी-छोटी चीजों को बहुत गहराई से महसूस करते हैं। इसका मतलब यह नहीं कि वे कमजोर हैं, बल्कि इसका अर्थ यह है कि वे अपने आसपास की भावनाओं को अधिक महसूस कर पाते हैं।

कई बार हमारी अपेक्षाएँ भी हमें प्रभावित करती हैं। जब हम किसी से कोई विशेष प्रतिक्रिया की उम्मीद करते हैं और वह पूरी नहीं होती, तो हमें तकलीफ होती है। हम दूसरों के शब्दों और बर्ताव को अपने आत्म-सम्मान से जोड़ने लगते हैं, जिससे हम जल्दी आहत हो जाते हैं।अब सवाल यह है कि इससे कैसे निपटा जाए? सबसे पहले, स्वयं को समझना और स्वीकार करना जरूरी है। हमें यह जानने की जरूरत है कि हमारी भावनाएँ वैध हैं और हमें खुद को दोष देने की जरूरत नहीं है। माइंडफुलनेस और आत्म-जागरूकता से हम अपनी प्रतिक्रियाओं को समझ सकते हैं और उन्हें नियंत्रित कर सकते हैं।

दूसरा तरीका है परिप्रेक्ष्य बदलना । जब कोई टिप्पणी या घटना हमें प्रभावित करे, तो एक कदम पीछे हटकर सोचना चाहिए झ क्या यह वाकई इतनी महत्वपूर्ण है? क्या मैं इसे जरूरत से ज्यादा सोच रहा हूँ? इससे हमारी भावनाएँ नियंत्रित हो सकती हैं।

तीसरा, अपनी भावनाओं को व्यक्त करना जरूरी है। अगर हम बार-बार छोटी-छोटी बातों को अंदर रखते रहेंगे, तो वे अंदर ही अंदर एक बड़ा बोझ बन सकती हैं। किसी भरोसेमंद दोस्त, परिवार के सदस्य या मनोवैज्ञानिक से बात करें।

अंत में, यह समझना जरूरी है कि संवेदनशील होना कोई दोष नहीं है। यह हमारी ताकत भी हो सकती है, अगर हम इसे सही तरीके से संभालना सीख जाएँ। छोटी बातों से प्रभावित होना हमारी भावनात्मक गहराई को दशार्ता है, लेकिन हमें यह सीखने की जरूरत है कि कब और कितनी गहराई तक उन बातों को अपने मन में जगह देनी है

कार्टून वर्ल्ड

मंगला शोभा यात्रा में हजारों रामभक्तों का उमड़ेगा जनसैलाब

मंगला शोभायात्रा की तैयारी पूर्ण

जानकारी देते

खबर मन्त्र संवाददाता

रामगढ़। श्री श्री रामनवमी पूजा महासमिति रामगढ़ द्वारा 1 अप्रैल को आयोजित होने वाले भव्य मंगला शोभा यात्रा को लेकर सोमवार को शहर के होटल लॉ मैरिटल में प्रेस वार्ता का आयोजन किया गया। प्रेस वार्ता में महासमिति के मुख्य संरक्षक राजेश ठाकुर, छोटू वर्मा,अध्यक्ष धर्मेंद्र साव भोपाली, संरक्षक सरदार अनमोल सिंह और कोषाध्यक्ष आशीष सिन्हा मुख्य रूप से उपस्थित रहे। प्रेस वार्ता के दौरान राजेश ठाकुर ने बताया कि इस भव्य मंगला शोभा यात्रा में हजारों की संख्या में श्रीराम भक्त सम्मिलित होंगे। यात्रा की सभी तैयारियाँ पूरी कर ली गई हैं और महासमिति के पदाधिकारियों को सुरक्षा व्यवस्था, यातायात व्यवस्था, शीतल पेयजल एवं अन्य आवश्यक सेवाओं की जिम्मेदारी सौंपी गई है। उन्होंने यह भी कहा कि यह यात्रा ऐतिहासिक होगी। महासमिति के अध्यक्ष धर्मेंद्र साव भोपाली ने बताया कि यह शोभा यात्रा रामगढ़ जिले के विभिन्न प्रखंडों, अखाड़ों एवं मंदिरों से सभी सनातनियों और राम भक्तों का एकत्रित होकर प्रारंभ होगी। यात्रा सिद्धू कान्हू मैदान से प्रारंभ होकर चट्टी बाजार, झंडा चौक, गांधी चौक, सुभाष चौक होते हुए फुटबॉल मैदान में समाप्त होगी। फुटबॉल मैदान में सभी राम भक्तों और सनातनियों के लिए महासमिति द्वारा शीतल पेयजल एवं महाप्रसाद का वितरण भी किया जाएगा। प्रेस वार्ता में मुख्य रूप से महासमिति के मीडिया एवं सोशल मीडिया प्रमुख प्रवीण कुमार सोनू, संदीप महतो, विशाल राणा, रोहित सोनी, जितेंद्र मंडल, जीतू साव, सनी करमाली, शौर्य प्रसाद मौजूद थे।

सर्ववेद के प्रचार को ले रिभर साईड में शोभायात्रा

भुरकुंडा (रामगढ़)। सदुरू विहंगम योग संत समाज ने रविवार को रीवर साइड में सर्ववेद के प्रचार को लेकर शोभायात्रा निकाला। शोभायात्रा रिभर साइड बुधबाजार इमलीगाछ पंचायत से शुरू होकर गिद्दी, थाना कॉलोनी, हॉस्पीटल कॉलोनी, चीफ हाउस, दुर्गा मंडप होते हुए इमलीगाछ पंचायत भवन पहुंचा। शोभायात्रा में मुंद्रिका सिंह, समोद प्रजापति, श्रीकांत प्रजापति, विनोद साव, जानकी ठाकुर, विजय ठाकुर, रामाशंकर ठाकुर, राजेश ठाकुर, महेश भगत, रामजन्म शर्मा, लखन ठाकुर, दिनेश्वर प्रसाद साव, धनराज महतो, नुरू देवी, जीरा देवी, संनैना देवी, कौशल्या देवी, जयंती देवी, सुमित्रा देवी, चंद्रावती ठाकुर, लीलीवती देवी सहित दर्जनो लोग शामिल थें।

हजारीबाग में गूंजे जय श्रीराम के जयकारे, अस्त्र-शस्त्र का वितरण

भाईचारगी का सन्देश दे: शेफाली

खबर मन्त्र संवाददाता

हजारीबाग। हजारीबाग की ऐतिहासिक रामनवमी की भव्यता इस बार और भी अलौकिक और दिव्य होने जा रही है। चैत्र रामनवमी के पावन अवसर पर ओम आरोहणम् संस्थान द्वारा सोमवार को बड़ा अखाड़ा परिसर में अस्त्र-शस्त्र वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जैसे ही अस्त्र-शस्त्र की विधिवत पूजा-अर्चना के बाद वितरण प्रक्रिया शुरू हुई, माहौल जय श्रीराम के नारों से गूंज उठा। रामभक्तों की आंखों में जोश और परंपरा को जीवंत करने की अटूट श्रद्धा स्पष्ट दिखाई दी। कार्यक्रम में 104 अखाड़ा धारियों को 01 तलवार एवं 11 लाठी वितरित की गई। ओम आरोहणम् संस्थान सह भाजपा नेत्री शेफाली गुप्ता ने अखाड़ा धारियों को अस्त्र-शस्त्र सौंपते हुए कहा कि यह वितरण केवल परंपरा का हिस्सा नहीं, बल्कि कला-कौशल और संस्कृति को सशक्त बनाने का माध्यम भी है। उन्होंने अपील की कि रामनवमी पर्व को नशामुक्त, सौहार्दपूर्ण और ऐतिहासिक रूप में मनाया जाए, जिससे समाज में भाईचारे और सामाजिक समरसता का संदेश जाए। इस दौरान रामनवमी महासमिति, संरक्षण समिति और रामनवमी चुनाव संचालन समिति के पदाधिकारियों एवं रामनवमी से जुड़े अन्य संगठनों के प्रमुखों को अंगवस्त्र, तलवार और लाठी भेंटकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में महंत विजयानंद दास ने कहा, ₹हमें सनातनी होने पर गर्व करना चाहिए। हमारी संस्कृति हमें एकजुटता सिखाती है। अस्त्र-शस्त्र वितरण परंपरा को अक्षुण्ण बनाए रखने और अखाड़ा कला-कौशल को बढ़ावा देने की अनूठी पहल है। रामनवमी महासमिति के अध्यक्ष बसंत यादव और पूर्व अध्यक्ष राजकुमार यादव ने भी रामभक्तों से आह्वान किया कि वे रामनवमी को पूरी श्रद्धा, एकता और भव्यता के साथ मनाएं। इस मौके पर विजय वर्मा, निशांत प्रधान, मनमीत अकेला, कुणाल किशोर दुबे, सुरेश कुमार, अनमोल साव, राजेश गोप, पवन गुप्ता सहित कई रामभक्त उपस्थित रहे। कार्यक्रम ने हजारीबाग की इंटरनेशनल रामनवमी के 105 वर्षों की भव्य परंपरा को और गौरवशाली बनाने की ओर एक नया कदम बढ़ाया।

शेफाली गुप्ता व अन्य

6 अप्रैल को निकाला जायेगा भव्य जुलूस

खबर मन्त्र संवाददाता

कुजू। श्री श्री रामनवमी पूजा को लेकर महावीर मंडल कुजू बस्ती की बैठक मां मनसा मंदिर के पास मैदान में हुई। बैठक में आगामी 6 अप्रैल को धूमधाम के साथ रामनवमी पूजा मनाने व भव्य जुलूस निकालने का निर्णय लिया गया। इससे पूर्व गत वर्ष का आय-व्यय का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया गया। साथ ही पूजा के सफल संचालन के लिए कमिटि का गठन किया गया। जिसमें सर्वसम्मति से अध्यक्ष विनोद प्रसाद उर्फ पहाड़ी, उपाध्यक्ष नरेश प्रसाद, राहुल साहू, सचिन कुमार, अभिषेक साहू लल्ला, कुमार सागर, सचिव प्रकाश प्रसाद, सह सचिव शुभम प्रसाद, अमर साहू, रोहित प्रसाद, सुजल साहू, सह कोषाध्यक्ष श्रवण शाह का चयन किया गया।

माता वैष्णों देवी मंदिर में बासंती नवरात्र पर पूजन अनुष्ठान जारी

अनुष्ठान में शामिल

खबर मन्त्र संवाददाता

रामगढ़। झंडा चौक के माता वैष्णों देवी मंदिर में बासंती नवरात्र पर पूजन व अनुष्ठान जारी है। मंदिर के पुजारी पंडित लीलाधर शर्मा द्वारा अनुष्ठान के मुख्य यजमान सुमित मारवाह व उनकी पत्नी जया मारवाह से विधिवत पूजन कराई जा रही है। आठ दिवसीय इस अनुष्ठान के दौरान 4 अप्रैल की संध्या 3:30 बजे से माता की चौकी एवं 6 अप्रैल को सुबह 8 बजे से भंडारा का आयोजन किया गया है। वहीं पंजाबी हिन्दू बिरादरी के तत्वावधान में मां वैष्णों मंडली रामगढ़ द्वारा 3 अप्रैल की रात्रि 7:30 बजे से माता की चौकी एवं 5 अप्रैल की सुबह 7:30 बजे से भंडारा का प्रसाद वितरण किया जाएगा।

इस मौके पर पूरे मंदिर परिसर को आर्टिफिशियल फूलों एवं विद्युत सज्जा कर आकर्षक ढंग से सजाया गया है। सभी कार्यक्रमों के सफल आयोजन को लेकर पंजाबी हिन्दू बिरादरी व माता वैष्णों देवी मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष एससी वासुदेव एवं महासचिव महेश मारवाह के अलावे सभी पदाधिकारी व सदस्य जोर शोर से जुटे हुए हैं।

मिजार्पुर में सात दिवसीय रुद्र महायज्ञ कलश यात्रा के साथ प्रारंभ

कलश यात्रा में शामिल लोग

बड़कागांव। प्रखंड के मिजार्पुर गांव में श्री श्री 1008 सर्व कल्याण रुद्र महायज्ञ की शुरूआत भव्य कलश यात्रा के साथ हुई। हजारों श्रद्धालु नंगे पांव कलश लेकर यात्रा में शामिल हुए। यात्रा मिजार्पुर से प्रारंभ होकर सोनपुरा, शिवाडीह, सांढ़, होरम मोड़, गुरुचट्टी, बड़कागांव थाना होते हुए छावनियां पहुंची, जहां मुस्लिम समुदाय के लोगों ने श्रद्धालुओं का गर्मजोशी से स्वागत किया। इसके बाद यात्रा डुमारो नदी के तीन मोहनिया स्थल पर पहुंची, जहां विधिवत जल उठाव कर मिजार्पुर स्थित यज्ञ स्थल पर यज्ञ प्रारंभ किया गया। महायज्ञ के दौरान 31 मार्च को जल यात्रा, पंचांग पूजन, मातृका पूजन, संध्या आरती व प्रवचन आयोजित हुए। 1 अप्रैल को वेदी पूजन, अग्नि देव आह्वान, संध्या आरती और प्रवचन होंगे, जबकि 6 अप्रैल को प्राण प्रतिष्ठा, पूणार्हुति और भंडारे के साथ समापन होगा। इस अवसर पर भोजपुरी स्टार आशीष यादव और खुशी कक्कर का सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित होगा।

दारू प्रखंड के 23 अखाड़ों को पारंपरिक अस्त्र-शस्त्र भेंट

सांसद व अन्य

खबर मन्त्र संवाददाता

हजारीबाग। हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के ऐतिहासिक रामनवमी महोत्सव की परंपरा को सशक्त करने और शोभायात्रा में पारंपरिक अस्त्र-शस्त्र प्रदर्शन को बढ़ावा देने हेतु सांसद मनीष जायसवाल द्वारा अखाड़ों को पारंपरिक हथियार भेंट किए जा रहे हैं। इसी क्रम में सोमवार को दारू प्रखंड में दो वितरण शिविर आयोजित कर 23 अखाड़ों को लाठी व तलवार प्रदान किए गए। इस अभियान की शुरूआत रामदेव खरिका पंचायत से हुई, जहां 14 अखाड़ों को अस्त्र-शस्त्र भेंट किए गए। इसके बाद दारू पंचायत के सार्वजनिक दुर्गा मंडप प्रांगण में 9 अन्य अखाड़ों को पारंपरिक हथियार सौंपे गए। इस अवसर पर सांसद मनीष जायसवाल ने कहा कि हजारीबाग की रामनवमी विश्वप्रसिद्ध है, और इसमें रामभक्तों के अस्त्र-शस्त्र परिचालन व कला-कौशल प्रदर्शन की अहम भूमिका रही है। हालांकि, समय के साथ यह परंपरा कमजोर पड़ी है, जिसे फिर से सशक्त करने और नई पीढ़ी तक इस कला को पहुंचाने के लिए यह पहल की जा रही है। इस मौके पर सांसद प्रतिनिधि सत्येंद्र नारायण सिंह, वरिष्ठ भाजपा नेता खोखा सिंह, जुगनू सिंह, दारू भाजपा मंडल अध्यक्ष अशोक कुशवाहा, सांसद मीडिया प्रभारी रंजन चौधरी सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

बेरियर गिरने से एक सीसीएल सुरक्षाकर्मी घायल, रेफर

घायल सीसीएल सुरक्षाकर्मी मनोज कुमार रमाली

भुरकुंडा (रामगढ़)। सीसीएल भुरकुंडा कोलियरी के बलकुदरा मांइस मे बेरियर गिरने से एक सुरक्षाकर्मी घायल हो गया। घायल सुरक्षाकर्मी का भुरकुंडा सीसीएल अस्पताल में प्राथमिक उपचार के बाद गांधीनगर रेफर कर दिया गया। घटना क्रम के अनुसार रविवार की दोपहर करीब साढे बारह बजे बलकुदरा मांइस के चेक पोस्ट मे सुरक्षाकर्मी मनोज कुमार करमाली डियूटी पर थें। इसी दौरान एक कोयला लदा हाइवा वहां पहुंचा। चेक पोस्ट का बेरियर खडा नही हो रहा था। जिसे देखकर सुरक्षाकर्मी मनोज करमाली बेरियर के पीछे उठाने के लिये रखे गये पत्थर को ठीक कर खडा कर वापस आने लगा। इसी दौरान अचानक बेरियर को उठाने के लिये रखे पत्थर झटक गया और लोहे का बेरियर सुरक्षाकर्मी के उपर गिर गया। जिसके कारण सुरक्षाकर्मी घायल होकर गिर गया। घटना मे सुरक्षाकर्मी के सर और कंधा मे गंभीर चोटें आई।

एक नजर में

बरही में हर्षोल्लास से मनी ईद-उल-फितर

बरही। बरही प्रखंड के शहरी और सुदूरवर्ती क्षेत्रों में ईद-उल-फितर का त्योहार हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। बरही, कोनरा, शादी मोहल्ला, लस्करी, अलगडीहा, बिजैया, गरजामु समेत विभिन्न गांवों में मुस्लिम समुदाय ने रमजान के रोजों के बाद ईद का जश्न मनाया। सोमवार सुबह ईदगाहों और मस्जिदों में नमाज अदा की गई। ईदगाह बरही में 7:30 बजे, मदीना मस्जिद में 7:45 बजे, मक्का मस्जिद में 8:00 बजे और जामा मस्जिद में 9:00 बजे नमाज अदा की गई।नमाज के बाद लोगों ने एक-दूसरे को गले मिलकर ईद की मुबारकबाद दी। इस अवसर पर अमन-चैन और भाईचारे की दुआ मांगी गई। सेवइयां बांटी गईं और घर-घर में उत्साह का माहौल रहा। बरही पश्चिमी मुखिया शमशेर आलम, टिंकू आलम समेत कई जनप्रतिनिधियों ने अधिकारियों और समाज के लोगों से मिलकर शुभकामनाएं दीं। पुलिस प्रशासन सुरक्षा व्यवस्था में तैनात रहा। कार्यक्रम में अल्पसंख्यक कल्याण महासभा के मो. कयूम, मो. जहांगीर अंसारी, पप्पू खान, सिराज खान समेत कई गणमान्य उपस्थित थे। पूरे क्षेत्र में सौहार्द और उल्लास का माहौल बना रहा, जहां सभी ने प्रेम और भाईचारे का संदेश दिया।

नेहरू की क्षतिग्रस्त प्रतिमा पर कांग्रेस की नाराजगी

बरही। बरही के चोचरो पार्क में असामाजिक तत्वों ने देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की प्रतिमा को क्षतिग्रस्त कर दिया, जिससे कांग्रेस कार्यकताओं और स्थानीय लोगों में आक्रोश फैल गया। प्रतिमा का सिर तोड़कर उसे अपमानजनक स्थिति में छोड़ दिया गया। इस मामले पर कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष केशव महतो कमलेश ने संज्ञान लिया और नाव से डैम पार कर टूटी प्रतिमा तक पहुंचे। उन्होंने डीवीसी के वरिष्ठ अधिकारियों से बातचीत कर दोषियों के खिलाफ कार्रवाई और नई प्रतिमा स्थापित करने की मांग की। कमलेश ने कहा कि महापुरुषों की प्रतिमाएं हमारी विरासत का प्रतीक हैं और उनका सम्मान किया जाना चाहिए। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि जल्द नई प्रतिमा का अनावरण नहीं हुआ, तो कांग्रेस आंदोलन करने को बाध्य होगी। कांग्रेस नेता अरुण साहू ने जिला प्रशासन की निष्क्रियता पर सवाल उठाया और डीवीसी से तत्काल कदम उठाने की मांग की।इस मौके पर कांग्रेस नेता रवींद्र सिंह, मुन्ना सिंह, दीपक गुप्ता, सुरजीत नागवाला, शैलेन्द्र यादव समेत कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे। उन्होंने प्रशासन से जल्द कार्रवाई की मांग करते हुए कहा कि इस तरह की घटनाएं समाज में वैमनस्य फैलाने का प्रयास हैं, जिन्हें रोकना जरूरी है।

कांग्रेस नेता केदार पासवान की माता का निधन : कांग्रेस अनुसूचित जाति विभाग के प्रदेश अध्यक्ष केदार पासवान की माता लीलावती देवी का आकस्मिक निधन हो गया। इस दुखद समाचार के बाद राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र के कई नेता उनके घर हथगड्डा पहुंचे और शोक संवेदना व्यक्त की। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष केशव महतो कमलेश, मार्केटिंग बोर्ड आयोग के अध्यक्ष रवींद्र सिंह, कांग्रेस नेता अरुण साहू, मुन्ना सिंह, शैलेन्द्र यादव, दीपक गुप्ता, बिनोद कुशवाहा, सुरजीत नागवाला, मुकेश पासवान समेत कई नेताओं ने दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की। परिवार को सांत्वना देते हुए नेताओं ने कहा कि लीलावती देवी अपने क्षेत्र में समाजसेवा के लिए जानी जाती थीं। उनके निधन से समाज को अपूरणीय क्षति हुई है। स्थानीय भाजपा नेता गणेश यादव भी परिवार से मिले और अपनी संवेदना प्रकट की। इस अवसर पर कांग्रेस और भाजपा के नेताओं ने राजनीति से ऊपर उठकर दुख की इस घड़ी में परिवार को संबल दिया। समाज के विभिन्न वर्गों ने भी शोक व्यक्त किया और कहा कि लीलावती देवी का स्नेह और मार्गदर्शन सभी को याद रहेगा।

रामनवमी पर 6 से 8 अप्रैल तक बंद रहेंगी शराब की दुकानें

हजारीबाग। रामनवमी पर्व के मद्देनजर जिले में शांति व्यवस्था बनाए रखने के उद्देश्य से हजारीबाग की उपायुक्त नैंसी सहाय ने 6 अप्रैल से 8 अप्रैल 2025 तक सभी प्रकार की खुदरा शराब की दुकानें, रेस्तरां और बार सहित अन्य उत्पाद अनुज्ञप्ति प्रदत्त परिसरों को बंद रखने का आदेश जारी किया है। यह आदेश झारखंड उत्पाद अधिनियम, 1915 की धारा 26(1) के तहत जारी किया गया है। उपायुक्त ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिया है कि वे इस आदेश का सख्ती से अनुपालन सुनिश्चित करें। सहायक आयुक्त उत्पाद, हजारीबाग को इस संबंध में निगरानी रखने और आवश्यक कार्रवाई करने के निर्देश दिए गए हैं ताकि रामनवमी के दौरान शांति एवं सौहार्द बना रहे।

महासमिति की बैठक संपन्न

बड़कागांव। प्रखंड के हरली शिव मंदिर प्रांगण में रामनवमी पूजा एवं हरली रामनवमी मेले के सफल आयोजन हेतु महासमिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता पूजा समिति अध्यक्ष महेंद्र महतो ने की, जबकि संचालन सचिव उमेश कुमार ने किया।बैठक में क्षेत्र के 32 गांवों के विभिन्न अखाड़ों के अध्यक्ष, सचिव व पदाधिकारी उपस्थित रहे। सभी ने मेले व पूजा से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की और अपनी समस्याओं से महासमिति को अवगत कराया। महासमिति ने सर्वसम्मति से निर्णय लिया कि मेले में भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन होगा, खिचड़ी वितरण की व्यवस्था की जाएगी, साउंड व झांकी प्रदर्शन के लिए नियमों का पालन किया जाएगा और अतिथियों के स्वागत के लिए विशेष समिति का गठन किया जाएगा। बैठक में बड़कागांव विधानसभा सांसद मीडिया प्रतिनिधि उमेश दांगी, मुखिया कविता देवी, पंसस कोशिला देवी, कोषाध्यक्ष केशवनाथ महतो, खेमलाल महतो, मुखिया बासुदेव यादव, प्रो. लालदेव महतो, उपमुखिया सुनील कुमार, भीखन महतो, त्रिवेणी महतो, धानेश्वर महतो, चंदन पूरी, सबूर महतो, भुनेश्वर महतो, रामप्रसाद महतो, भागिनाथ महतो, देवनाथ यादव, सुमन गिरी, प्रमेश गिरी, वास्तव प्रसाद दांगी, जयकरण सिंह, नरेश कुमार, राजा सिंह सहित सैकड़ों रामभक्त उपस्थित थे।

टाटीझरिया के 30 अखाड़ा धारियों को सांसद ने सौंपा पारंपरिक कला- कौशल का सामान

टाटीझरिया। हजारीबाग के ऐतिहासिक और विश्वविख्यात रामनवमी को लेकर हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के सांसद मनीष जायसवाल ने सांसद अस्त्र- शस्त्र वितरण अभियान-2025 के तहत सोमवार को मांडू विधानसभा क्षेत्र के टाटीझरिया प्रखंड के बाबा बालकनाथ मंदिर प्रांगण ने वितरण शिविर का आयोजन कर टाटीझरिया क्षेत्र के 30 अखाड़ा धारियों को पारंपरिक हथियार के रूप में लाठी- तलवार भेंट किया। सांसद मनीष जायसवाल ने प्रत्येक अखाड़ा धारियों को 2 तलवार और 21 लाठियां देकर उन्हें विलुप्त होती पारंपरिक दंड और तलवार कला प्रदर्शन को जीवंत करने एवं भाभी पीढ़ी को अस्त्र-शस्त्र परिचालन अभ्यास कराने के साथ आगामी रामनवमी जुलूस में पुरानी परंपरा को जीवंत करने का अपील किया । मौके पर विशेषरूप से हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के सांसद प्रतिनिधि सत्येंद्र नारायण सिंह, वरिष्ठ भाजपा नेता खोखा सिंह, जुगनू सिंह, टाटीझरिया भाजपा मंडल अध्यक्ष कैलाशपति सिंह, भाजपा नेता सह टाटीझरिया प्रखंड प्रमुख संतोष मंडल, मिथिलेश पाठक, उपप्रमुख रवि वर्णवाल, राजू यादव, सांसद मनीष जायसवाल के मीडिया प्रतिनिधि रंजन चौधरी सहित अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहें।

सअनि सुजीत कुमार सिंह के निलंबन का विरोध कर रहे हैं हिन्दुवादी संगठन

रामगढ़। रामगढ़ एसपी द्वारा सहायक अवर निरीक्षक सुजीत कुमार को लाइन हाजिर किए जाने को हिंदू संगठनों ने मुद्दा बना दिया है और इसपर आंदोलन करने की चेतावनी भी सोसल मीडिया पर देखी जा सकती है। इसी मुद्दे पर हिंदू रक्षा दल के दीपक मिश्रा ने बयान जारी कर रामगढ़ के एसपी से सवाल पूछा है की जब ईद,रामनवमी और सरहुल जैसे त्योवहारों पर व्यवस्था चाक चौबंद रखने के लिए पुलिस अधिकारी सअनि सुजीत कुमार सिंह ने क्या गुनाह कर दिया था जो उन्हें लाइन हाजिर किया गया है? श्री मिश्रा ने आम जनता के बीच इस मामले को लेकर चल रही चचाओं का जिक्र करते हुए बताया की पिछले दिनों सुजीत कुमार सिंह दल बल के साथ संवेदनशील क्षेत्र में ध्वनि विस्तारक यंत्र द्वारा ईद और रामनवमी को लेकर सुरक्षा संबंधी सूचना एवं चेतावनी दे रहे थे।

कोयलांचल भुरकुंडा, भदानीनगर, बासल में अकिदत के साथ पढ़ी गई ईद की नमाज

एक-दूसरे के गले मिलकर दी गई पर्व की बधाई, लजीज व्यंजनों का उठाया लुत्फ, क्षेत्र की हरियाली-खुशहाली व अमन-चैन की मांगी गई दुआएं

एक-दूसरे के गले मिलकर ईद की बधाई देते बच्चे

मस्जिद में ईद की नमाज अदा करते मुस्लिम धमार्वावलंबी

एकता और भाईचारगी का पैगाम देते युवक

खबर मन्त्र संवाददाता

भुरकुंडा (रामगढ़)। भुरकुंडा कोयलांचल, भदानीनगर, बासल सहित आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में सोमवार को ईद पर्व पूरे धुमधाम से मनाया गया। ईद के अवसर पर क्षेत्र के मस्जिद और ईदगाहों में मुस्लिम धर्मावलंबियों ने अकिदत के साथ ईद की नमाज पढ़ी। इस दौरान लोगो ने अल्लाह से अपने परिवार और क्षेत्र की हरियाली-खुशहाली, सुख-समृद्धि व अमन-चैन की दुआएं भी मांगी। इसके बाद लोगो ने एक-दूसरे से गले मिलकर ईद की मुबारकबाद दी। नमाज के बाद लोगो ने एक-दूसरे के घरों में जाकर लच्छेदार सेवईयां और एक से बढ़कर एक लजीज व्यंजनों का लुत्फ उठाया। कहा गया कि ईद आपसी भाईचारगी व प्रेम का संदेश देता है। ईद को ले बच्चों में खासा उत्साह देखने को मिला। बडे तो बडे.लेकिन नन्हे-मुन्ने बच्चों ने भी एक-दूसरे के गले मिलकर पर्व की बधाई दी। कोयलांचल के भुरकुंडा जामा मस्जिद, रीवर साईड, सौन्दा डी, सेन्ट्रल सौन्दा, सीसीएल सौन्दा, भदानीनगर के महुआ टोला, चिकोर, लपंगा, सुदी, चैनगड्डा व बासल क्षेत्र के ईदगाहों सहित अन्य जगहों के मस्जिद और ईदगाहों में मौलाना और ईमाम द्वारा नमाज अदा करायी गयी। ईद को लेकर भुरकुंडा ओपी प्रभारी निर्भय कुमार गुप्ता, भदानीनगर ओपी प्रभारी ब्रहमव्रत कुमार व बासल थाना प्रभारी कैलाश कुमार दल-बल के साथ सुरक्षा व्यवस्था में मुस्तैदी से डटे रहें।

धूमधाम से मनाया गया ईद

कुजू। मुस्लिम धर्मावलंबियों का त्योहार ईद-उल-फितर कुजू कोयलांचल व आस-पास के क्षेत्रों में धूमधाम व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस दौरान क्षेत्र के कुजू जामा मस्जिद, आजाद बस्ती, कुजू कोलियरी, तोपा, पिंडरा , डुमरबेड़ा, आरा-सरूबेड़ा,करमा, सांडी, बोंगाबार आदि क्षेत्र में मुस्लिम धर्मावलंबियों ने निर्धारित समय पर नमाज अता किया। इसके बाद एक दूसरे को गले मिलकर ईद की बधाई दिया। बाद में सेवई लच्छा का लुफ्त उठाये। इधर अंजुमन इस्लाहुल मुस्लेमीन कमिटी दिगवार ने निर्धारित समय 9: 30 बजे नमाज अदा किया। इस दौरान मौलाना शमशीर आलम साहब ने अकीदत के साथ नमाज पढ़ाया। मौके पर सदर अब्दुल अजीज, सेक्रेटरी शमीम अंसारी के अलावे बड़ी संख्या में लोग शामिल थे। उन्होंने सभी को ईद उल फितर की बधाई दी। इधर , रतवे समेत अन्य स्थानों में ईद बड़े ही सादगी के साथ मनाया गया।

कुजू जामा मस्जिद में गले मिलकर बधाई देते बच्चे

प्रकृति के महत्व और सहकार को इंगित करता महान पर्व सरहुल

रानी राज

सरहुल एक पर्व नहीं बल्कि आदिवासी शौर्य गाथा समेटे और प्रकृति के विवाह का दिन है ।प्रकृति से प्रेम का इजहार करने का दिन है सरहुल।

वह ऐतिहासिक घटना यह है कि - सरहुल का दिन था और जगह थी रोहतासगढ़। समयकाल 14वीं सदी का बताया जाता है। रोहतासगढ़ (रुइदासगढ़) में आदिवासी राजा रुईदास का शासन था। सरहुल के दिन जब लोग नाच-गान में मस्त और मदहोश थे, मुस्लिम सेना ने अचानक आक्रमण कर दिया। ऐसे समय में राजा की बेटी सिनगी दई ने अपनी सखियों चम्पी दई और कइली दई के साथ महिला सेना के साथ पुरुष वेश धारण कर, हथियार लेकर मुगल सैनिकों से भिड़ गयीं चूंकि सारे पुरुष सरहुल परब के कारण मद मस्त थे। मुस्लिम सेना को सिनगी दई और महिला सेना के जोरदार टक्कर से उल्टे पाँव भागना पड़ा था और यह लगातार तीन वर्षों तक आक्रमणकारियों को सामना करना पड़ा ।अंत मे चौथे साल एक ग्वालिन मुखबिरी के कारण महिला सेना का पुरुष भेष-भूषा का भेद खुलने से हार का सामना करना पड़ा और उरांव आदिवासियों को रोहतासगढ़ छोड़कर झारखंड की ओर आना पड़ा यह लोक कथा सरहुल के प्राचीनता की निशानी है। लेकिन इसकी प्राचीनता यहीं खत्म नहीं होती बल्कि इसकी परम्पराएंऔर लोक कथाएं इसे खाद्य संग्रहण के काल तक ले जाती हैं।

सरहुल झारखंड का सबसे लोकप्रिय पर्व है। यह आदिवासियों का सबसे प्रिय त्यौहार है। यह झारखंड का बसंतोत्स्व है , यह युवाओ का पर्व है, यह फूलों का पर्व है , साल के फूलों का पर्व । यह नए साल की शुरूआत की निशानी है। यह प्रकृति से प्रेम का पर्व है। इस पर्व को झारखंड , मध्यप्रदेश , छत्तीसगढ़ , ओडिसा , पश्चिम बंगाल , असम एवं अंडमान निकोबार में मनाया जाता है। झारखंड में 32 जनजातियों में लगभग सभी इस पर्व को मनाते हैं। साथ ही झारखंड के सदान भी इस पर्व में भागीदार होते हैं। इस पर्व को अलग अलग आदिवासियों में अलग अलग नाम से जाना जाता है - उराँव इसे ₹खदी₹ या ₹खेखेल बेंजा₹कहते है तो मुंडा इसे ₹बा₹ पोरोब। खड़िया आदिवासी इसे ₹जाड़कोर₹ कहते हैं और हो और संथाल आदिवासी ₹बाहा₹।

यह पर्व चैत्र महीने के शुक्ल पक्ष के तीसरे दिन यानी चैत्र शुक्ल तृतीया को मनाया

जाता है लेकिन अलग-अलग गावों में इसकी तिथी पाहन तय करते हैं। चैत्र शुक्ल तृतीया से यह दो माह तक मनाया जाता है। पाहन के तय तिथि अनुसार अलग अलग गाँव में इसे अलग अलग दिन मनाया जाता है। । यह पर्व झारखंड की समृद्ध परम्परा की रीढ़ है। साल के वृक्षों में फूलों का आना इस पर्व के आगमन की पहचान है। यही वो ऋतु है , जब प्रकृति के साथ-साथ समस्त जीव- जगत में नई ऊर्जा का संचार होता है। सरहुल त्यौहार का दोहरा महत्व है- एक तरफ यह एक ₹वनस्पति₹ समारोह है - जंगल में आनंद मनाने का पर्व है । साल के फूलों का आना अनिवार्य शर्त है,वहीं दूसरी तरफ यह एक ₹उर्वरता₹ पर्व है - पृथ्वी का सूर्य के साथ विवाह इस धारणा के साथ होता है कि मिट्टी जल्दी फसल उगाने के लिए तैयार हो । यह आदिवासियों के सांस्कृतिक , धार्मिक , आर्थिक और सामाजिक पक्ष को उजागर करता है। जदुर के संगीत से सराबोर यह पर्व उल्लास का गीत गाता है , वहीं सरना में पूजा आदिवासियों के सरना धर्म की व्यापकता और ऐतिहासिकता को प्रकट करती है। आर्थिक पक्ष देखें तो , खाद्य संग्रहण के परिप्रेक्ष्य में उराँव जनजाति में दो पर्व महत्वपूर्ण है। ये हैं, - खद्दी या सरहुल त्योहार, और फागु त्योहार। खद्दी या सरहुल मूल रूप से जनजाति के आर्थिक इतिहास के खाद्य-संग्रह चरण का त्यौहार था। खाद्य-संग्रह चरण के इस मूल त्यौहार के सदियों के क्रमिक संवर्धन और परिवर्धन द्वारा विस्तृत किया गया, जिसके माध्यम से जनजाति केवल खाद्य-संग्रहकर्ता और शिकारी से स्थायी कृषक बन गए । इस प्रकार खाद्य-संग्रह चरण के इस मूल त्यौहार ने धीरे-धीरे कृषि त्यौहार का रंग ले लिया है ।

इस पर्व में सभी परम्पराए पाहन द्वारा सम्पन्न होती है। यह सृष्टि और आदिवासीयों के मध्य संबंध का प्रतीकात्मक पुनरावृति है। साखू के फूलों को पहली बार सरना में चढ़ाया जाता है। यहाँ हड़िया का तापन और मुर्गे की बली दी जाती है। पारम्परीक संस्कार के रूप में भरपूर उत्पादन की कामना के साथ प्रतीकात्मक रूप से आकाश - सूर्य और धरती का विवाह कराया जाता है। इस पर्व में पाहन भविष्यवाणी करता है कि समृद्धि होगी कि आपदा आएगा ।साल के टहनियों की पूजा के बाद पाहन मुर्गे के सर पर कुछ अनाज डालते हैं , अगर मुर्गा उसे खा लेता है तो समृद्धि की भविष्यवाणी की जाती है और नहीं खाने पर आने वाले आपदा का संकेत होता है।सरना पूजा में रखे घड़ों से आगामी वर्षा की भविष्यवाणी की जाती है। ये पुरानी कृषक परम्पराएं हैं जो सदियों से चली आ रही हैं। हर्षोउल्लास के मध्य युवक और युवतियाँ ₹ फूल गइल सारी फूल , सरहुल दिन आबे गुइआ ₹ जैसे गीतों के ताल पर झूमते हुए प्रकृति से अपने जुड़ाव और आत्मीयता का प्रदर्शन करते हैं। महिला , पुरुष और बच्चे रंगीन वस्त्र पहन कर शोभा यात्रा का भाग बनते हैं। महिलाओं के द्वारा पहनी जाने वाली लाल पाड साड़ी जो कि जनजातीय विशिष्ट्ता की पहचान है। यह परब झारखंड की समृद्ध परंपरा का संरक्षक है ।झारखंड के लोग इसे मिल जुल कर मनाते हैं साथ हीं झारखंड सरकार भी राजकीय समारोह के तौर पर मनाती है।

(अंकेक्षण अधिकारी बिहार सरकार)

सरहुल की परंपरा

आदिवासी महोत्सव सरहुल के उत्सव में, समुदाय के इतिहास, झारखंड में आदिवासिस और बड़े छोटनागपुर क्षेत्र मंगलवार को सरहुल महोत्सव के साथ नए साल और वसंत के मौसम का स्वागत करेंगे।

प्रकृति पूजा

शॉर्ट आर्टिकल इंसर्ट ट्रीज (शोरिया रोबस्टा) आदिवासी परंपरा में आदरणीय हैं। उन्हें सरना माँ के निवास के रूप में देखा जाता है, जो गाँव को प्राकृतिक बलों से बचाने वाला देवता है। सरहुल, शाब्दिक रूप से सैल ट्री की पूजा, सबसे प्रतिष्ठित आदिवासी त्योहारों में से एक है। यह प्रकृति की पूजा में निहित है और सूर्य और पृथ्वी के प्रतीकात्मक संघ का जश्न मनाता है।गाँव (पाहन) का एक पुरुष पुजारी सूर्य की भूमिका निभाता है, जबकि उसकी पत्नी (पाहेन) पृथ्वी बन जाती है। पुजारी बंधन तिग्गा ने द इंडियन एक्सप्रेस को बताया कि यह संघ पृथ्वी पर सभी जीवन के लिए महत्वपूर्ण है, जो सूर्य की किरणों और मिट्टी (पृथ्वी) के एक साथ आने पर निर्भर करता है।

इस प्रकार सरहुल को जीवन के चक्र के उत्सव के रूप में देखा जा सकता है। अनुष्ठान पूरा होने के बाद ही आदिवासी लोक अपने खेतों को जुताना शुरू करते हैं, अपनी फसल बोते हैं, या उपज इकट्ठा करने के लिए जंगल में प्रवेश करते हैं।

प्रकृति पर्व 'सरहुल' में केकड़ा का खास महत्व, सर में सारजोम बाहा लगाते हैं

झारखंड में प्रकति पर्व सरहुल को धूमधाम से मनाया जा रहा है. आज सोमवार शाम को जल रखाई पूजा होगी. अगले दिन 1 अप्रैल को देवी-देवताओं, प्रकृति और पूर्वजों की पूजा के बाद शोभा यात्रा निकालने की कवायद शुरू होगी. आदिवासी समाज के लोग सरहुल को नववर्ष के आगमन के रुप में मनाते हैं। इस दिन से तमाम शुभ कार्य शुरू हो जाते हैं।

सरहुल में केकड़ा का महत्व

हतमा सरना समिति के पुजारी जगलाल पाहन का कहना है कि कि केकड़ा से जुड़ी कुछ किंवदंती है। माना जाता है कि केकड़ा ने पूर्वजों को शरण देने में मदद की थी। इसलिए सरहुल के दिन पूर्वजों के साथ-साथ केकड़ा की भी पूजा की जाती है। केकड़ा को अरवा धागा में बांधकर घर में रखा जाता है। सरहुल संपन्न होने के बाद केकड़ा को घर में ऐसे सुरक्षित जगह पर रखा जाता है जहां अच्छी तरह से सूख जाए। फिर बारिश के समय उसी सूखे केकड़े का चूर्ण बनाया जाता है। चूर्ण को धान और गोबर में मिलाकर बुआई शुरू की जाती है। माना जाता है कि केकड़ा एक साथ बड़ी संख्या में अंडे देता है लिहाजा, धान की बाली भी अनगिनत की संख्या में फूटे। मध्य-पूर्व भारत के आदिवासी समुदायों का एक प्रमुख पर्व है, जो झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, छत्तीसगढ़ और मध्य भारत के आदिवासी क्षेत्रों में मनाया जाता है। इस पर्व को मुख्य रूप से मुण्डा, भूमिज, हो, संथाल और उराँव आदिवासियों द्वारा मनाया जाता है, और यह उनके महत्वपूर्ण उत्सवों में से एक है।

यह उत्सव चैत्र महीने के तीसरे दिन, चैत्र शुक्ल तृतीया को मनाया जाता है। यह नए साल की शुरूआत की निशानी है। हालांकि इस त्योहार की कोई निश्चित तारीख नहीं होती क्योंकि विभिन्न गांवों में इसे विभिन्न दिनों पर मनाया जाता है। इस वार्षिक उत्सव को बसंत ऋतु के दौरान मनाया जाता है और इसमें पेड़ों और प्रकृति के अन्य तत्वों की पूजा शामिल होती है। इस समय, साल (शोरिया रोबस्टा) पेड़ों में फूल आने लगते हैं। झारखण्ड में, इससे एक राजकीय अवकाश घोषित किया गया है।

परिचय

सरहुल का शाब्दिक अर्थ है 'साल वृक्ष की पूजा', सरहुल त्योहार धरती माता को समर्पित है - इस त्योहार के दौरान प्रकृति की पूजा की जाती है। सरहुल कई दिनों तक मनाया जाता है, जिसमें मुख्य पारंपरिक नृत्य सरहुल नृत्य किया जाता है।

आदिवासियों का मानना है कि वे इस त्योहार को मनाए जाने के बाद ही नई फसल का उपयोग मुख्य रूप से धान, पेड़ों के पत्ते, फूलों और फलों का उपयोग कर सकते हैं। भूमिज इस पर्व को 'हादी बोंगा' के नाम से और संथाल इसे 'बाहा बोंगा' के नाम से मनाते हैं। इसे 'बाः परब' और 'खाद्दी परब' के नाम से भी जाना जाता है।

त्योहार की क्रिया

त्योहार के दौरान साल के फूलों, फलों और महुआ के फलों को जायराथान या सरनास्थल पर लाए जाते हैं, जहां पाहान या लाया (पुजारी) और देउरी (सहायक पुजारी) जनजातियों के सभी देवताओं की पूजा करता है। ₹जायराथान₹ पवित्र सरना वृक्ष का एक समूह है जहां आदिवासियों को विभिन्न अवसरों में पूजा होती है। यह ग्राम देवता, जंगल, पहाड़ तथा प्रकृति की पूजा है जिसे जनजातियों का संरक्षक माना जाता है। नए फूल तब दिखाई देते हैं जब लोग गाते और नृत्य करते हैं। देवताओं की साल और महुआ फलों और फूलों के साथ पूजा की जाती है।आदिवासी भाषाओं में साल (सखुआ) वृक्ष को 'सारजोम' कहा जाता है।

देवताओं की पूजा करने के बाद, गांव के पुजारी (लाया या पाहान) एक मुर्गी के सिर पर कुछ चावल अनाज डालता है स्थानीय लोगों का मानना है कि यदि मृगी भूमि पर गिरने के बाद चावल के अनाज खाते हैं, तो लोगों के लिए समृद्धि की भविष्यवाणी की जाती है, लेकिन अगर मुर्गी नहीं खाती, तो आपदा समुदाय की प्रतीक्षा कर रहे हैं। इसके अलावा, आने वाले मौसम में पानी में टहनियाँ की एक जोड़ी देखते हुए वर्षा की भविष्यवाणी की जाती है। ये उम्र पुरानी परंपराएं हैं, जो पीढ़ियों से अनमोल समय से नीचे आ रही हैं।

सभी झारखंड में जनजाति इस उत्सव को महान उत्साह और आनन्द के साथ मनाते हैं। जनजातीय पुरुषों, महिलाओं और बच्चों को रंगीन और जातीय परिधानों में तैयार करना और पारंपरिक नृत्य करना। वे स्थानीय रूप में चावल से बनाये गये 'हांडिया' पीते हैं। आदिवासी पीसे हुए चावल और पानी का मिश्रण अपने चेहरे पर और सिर पर साल फुल (सारजोम बाहा) लगाते हैं, और फिर जायराथान के आखड़ा में नृत्य करते हैं।

हालांकि एक आदिवासी त्योहार होने के बावजूद, सरहुल भारतीय समाज के किसी विशेष भाग के लिए प्रतिबंधित नहीं है। अन्य विश्वास और समुदाय जैसे हिंदू, मुस्लिम, ईसाई लोग नृत्य करने वाले भीड़ को बधाई देने में भाग लेते हैं। सरहुल सामूहिक उत्सव का एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करता है, जहां हर कोई प्रतिभागी है। आदिवासी मुंडा, भूमिज, कोल, हो और संथाल लोग इस त्योहार को हर्ष और उल्लास के साथ मनाते हैं।

ई है दादा नगरिया, देख बबुआ...

जुगसलाई मस्जिद में ईद की नमाज के दौरान का दृश्य। जमशेदपुर समेत पूरे कोल्हान में ईद का पर्व सामाजिक समरसता एवं उल्लास के साथ मनाया गया।

मारवाड़ी सम्मेलन साकची शाखा ने किया गणगौर महोत्सव का आयोजन

राजस्थानी परिधान में सजधज कर 2000 से अधिक महिलाएं हुई शामिल

खबर मन्त्र ब्यूरो

जमशेदपुर। मारवाड़ी सम्मेलन साकची शाखा द्वारा आज गणगौर महोत्सव का आयोजन मानगो स्वर्णरेखा नदी पर किया गया। मारवाड़ी समाज की महिलाओं ने सामूहिक गणगौर विर्सजन किया। मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष बजरंग लाल अग्रवाल ने बताया की गणगौर पर्व मारवाड़ी समाज का प्रमुख त्योहारों लोक पर्व में से एक है। गणगौर पूजा हर साल चैत्र माह के शुक्ल पक्ष तृतीया तिथि को होती है इस दिन कुंवारी कन्या और सुहागन महिलाएं व्रत रखती है। माता पार्वती और साथ भगवान शिव की पूजा करती है। गणगौर दो शब्दों से बना है गण का अर्थ भगवान शिव और गौर का अर्थ पार्वती से है। वास्तव में गणगौर पूजन मां पार्वती और भगवान शिव की पूजा का दिन नवरात्रि के तीसरे दिन यानी चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया को मनाया जाने वाला गणगौर का त्योहार स्त्रियों के लिए अखंड सौभाग्य प्राप्ति का पर्व है। गणगौर का पहला और सबसे महत्वपूर्ण परंपरा मिट्टी के बर्तनों कुंडा में पवित्र अग्नि से राख इकट्ठा करना और उनमें गेहूं और जौ के बीज बोना है तथा 7 दिनों के बाद महिलाएं राजस्थानी लोकगीतों को मंत्रमुग्ध करते हुए गौरी और ईसर की रंग बिरंगी मूर्ति बनाती है। मान्यता है कि कामदेव की पत्नी रति ने भगवान शंकर की तपस्या कर उन्हें प्रसन्न कर लिया तथा उन्हीं के तीसरे नेत्र से भस्म हुए अपने पति को पुनः जीवन देने की प्रार्थना की रति की प्रार्थना से प्रसन्न हो भगवान शिव ने कामदेव को पुनः जीवित कर दिया था तथा विष्णु लोक जाने का वरदान दिया उसी के स्मृति में प्रतिवर्ष गणगौर का उत्सव मनाया जाता है। गणगौर पर्व पर विवाह के समस्त नेगाचार व रस्में की जाती है। होली के दूसरे दिन से प्रारंभ होकर 16 दिनों तक गणगौर पर्व चलता है। जिसका आज गणगौर विसर्जन के साथ संपन्न हुई। मुख्य रूप से समाजसेविका सुधा गुप्ता उपस्थित थी। मारवाड़ी सम्मेलन के महामंत्री बबलु अग्रवाल ने कहा की मारवाड़ी सम्मेलन की महिलाएं राजस्थानी परिधान से सजधज कर सामूहिक गणगोर विसर्जन कार्यक्रम में उपस्थित हुई। उन्होंने कहा की मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा आयोजित विसर्जन समारोह में शहर के विभिन्न क्षेत्रों से आई मारवाड़ी समाज की महिलाओं ने अपने-अपने गणगौर एवं जंवारा का तालाब में विसर्जन किया। नाच-गाकर, पूजा-पाठ कर हर्षोल्लास के साथ गणगौर एवं जवारा का विसर्जन किया। साथ ही एक-दूसरे को अबीर-गुलाल लगाकर खुशियां मनाईं। मारवाड़ी सम्मेलन साकची शाखा की ओर से शीतल जल व शर्बत चाट इत्यादि की व्यवस्था की गई थी। उन्होने बताया की शाखा की सभी (200) ब्यावली बेटियों एवं बहुओं को शाखा की तरफ से उपहार देकर सम्मानित किया गया।

आयोजन के सफलता में इनका रहा महत्वपूर्ण योगदान

मारवाड़ी सम्मेलन साकची शाखा के अध्यक्ष बजरंग लाल अग्रवाल, महामंत्री बबलु अग्रवाल मिनी, कोषाध्यक्ष सन्नी संघी, अभिषेक अग्रवाल गोल्डी, ओम प्रकाश रिंगसिया, दीपक पारीक, महावीर मोदी, अरुण बाकरेलवाल, लालचंद अग्रवाल, दीपक पारीक, राजकुमार चंदुका, अंशुल रिंगसिया, विजय आनंद मूनका, संदीप मुरारका, रमेश मूनका, लिप्पु शर्मा, संकर सिंघल, अशोक गुप्ता, निर्मल पटवारी, दीपक चेतानी, सांवरमल अग्रवाल, सीताराम देबुका, कमल अग्रवाल, रमेश मूनका, बजरंग अग्रवाल, राहुल चौधरी, रोहित अग्रवाल, कुशल गनेडिवाल, अशोक मोदी, नरेश मोदी, निर्मल काबरा, राहुल चौधरी, कमलेश अग्रवाल , उमेश खिरवाल, बिनीत अग्रवाल, प्रतिक अग्रवाल, विमल जालान, रमेश अग्रवाल सहित समाज बंधु गण एवं श्याम जागरण मंच टाटानगर।

स्पीड न्यूज

ट्यूब कालोनी बारीडीह में पं पवन कृष्ण गौतम सुना रहे भागवत कथा

जमशेदपुर। ट्यूब कॉलोनी बारीडीह डीएस दुर्गा पूजा मैदान में में चल रही श्रीमद् भागवत कथा के द्वितीय दिवस में आज वृंदावन से पधारे पंडित पवन कृष्णा गौतम जी महाराज के मुखारविंद से आज द्वितीय दिवस की कथा का रसपान भक्तों को कराया गया। महाराज जीके मुखारविंद से सुखदेव और परीक्षित महाराज की कथा का श्रवण भक्तों ने किया राजा परीक्षित को जब 7 दिन में मरने का श्राप मिला था तब परीक्षित को सुखदेव जी ने 7 दिन में श्रीमद् भागवत कथा सुनाकर उनको मुक्ति और भक्ति दोनों ही प्राप्त करवाई। गुरु की महिमा का वर्णन किया महाराज श्री द्वारा बताया गया की गुरु के बिना हम कोई भी कार्य अपना सिद्ध नहीं कर सकते हैं जीवन में दीक्षा गुरु बनाना अति आवश्यक है जब तक हमारे दीक्षा गुरु जी का प्रकाश जीवन में नहीं होता है तब तक की हुई की हुई पूजा पाठ सब हमारे अधूरे हैं। गुरु का प्रकाश जीवन में अवश्य होना चाहिए। ध्रुव जी जब 5 साल के थे तब गुरु की कृपा से ही उन्होंने 5 वर्ष की आयु में ही भगवान को प्राप्त किया था। ध्रुव जी महाराज ने नारद जी को अपना गुरु बनाया था नारद जी से दीक्षा प्राप्त कर उन्होंने भगवान विष्णु को प्राप्त किया।

बोड़ाम के बांकादा में 151 लोगों ने किया रक्तदान

पटमदा। बोड़ाम प्रखंड के बांकादा मध्य विद्यालय में सोमवार को आयोजित रक्तदान शिविर में जिले के विभिन्न क्षेत्रों से आए 151 लोगों ने काफी उत्साह के साथ रक्तदान किया। इसका आयोजन विश्व कल्याण समिति बांकादा-गागीबुरु, झारोटेफ पूर्वी सिंहभूम, बिरसा कृषि विकास ट्रस्ट बोड़ाम एवं प्रतीक फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। इसके लिए पटमदा एवं बोड़ाम क्षेत्र में पिछले कई दिनों से कई युवा वॉलेंटियर लोगो को जागरूक करते हुए तैयारी की। इसमें पटमदा, बोड़ाम, नीमडीह, चांडिल, पश्चिम बंगाल के पुरुलिया जिले एवं घाटशिला व मुसाबनी प्रखंड से भी कई शिक्षक एवं सरकारी कर्मचारियों ने कड़ी धूप के बावजूद उपस्थित होकर रक्तदान किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में मुख्य रूप से बोड़ाम प्रखंड के सांसद प्रतिनिधि शिवचरण सिंह सरदार, पंसस प्रतिनिधि प्रबोध कुमार महतो, उप प्रमुख प्रतिनिधि फनी भूषण महतो, झारोटेफ के जिलाध्यक्ष पंचानन महतो, पूर्व जिला पार्षद स्वपन कुमार महतो, ग्राम प्रधान प्रियदास सिंह, बिरसा कृषि विकास ट्रस्ट से ललिता महतो, फुचुराम महतो, पुरुषोत्तम विश्वनाथ, परेश नाथ महतो, माधव चंद्र महतो, विद्याधर सिंह, फाल्गुनी महतो, रामपद महतो, तपन महतो, भक्त मंडल, बाबूलाल महतो, नित्य मण्डल, पद्मलोचन सिंह, राजेश दास, स्वपन कर्मकार, शम्भू सिंह, दयामय बाउरी, सनातन सिंह, शिवशंकर महतो, परेश मंडल, उत्पल चक्रवर्ती, पतित पावन दत्त, अर्जुन महतो, अरिजीत सरकार, पति सिंह व रथू महतो आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा। इसमें अतिथि के रूप में पटमदा इंटर कॉलेज जाल्ला के प्राचार्य अरुण कुमार, पूर्व प्राचार्य पंचानन दास, समाजसेवी भीष्मनाथ महतो, विश्वनाथ महतो, पंसस धीरेन भुइयां, प्रफुल्ल महतो, प्रफुल्ल महतो, दुखुराम सिंह व जगदीश प्रसाद मंडल आदि मौजूद थे।

पिता ने बेटा व पत्नी को ब्लेड से काटकर उतारा मौत के घाट

चांडिल थाना अंतर्गत कपाली ओपी क्षेत्र में घटी दिल दहला देने वाली घटना

- पुलिस ने आरोपी सुखराम सिंह मुंडा को गिरफ्तार कर लिया

खबर मन्त्र प्रतिनिधि

प्रेस कांफ्रेंस आयोजित कर घटना की जानकारी देते चांडिल एसडीपीओ।

चांडिल। सोमवार को चांडिल थाना अंतर्गत कपाली ओपी क्षेत्र में एक दिल दहला देने वाली घटना को अंजाम दिया गया। तामुलिया गांव में एक पिता ने अपनी पांच वर्षीय बेटे के साथ अपनी पत्नी को ब्लेड से काटकर मौत के घाट उतार दिया। चांडिल एसडीपीओ ने प्रेस कांफ्रेंस आयोजित कर इस इस कांड का खुलासा करते हुए बताया कि सोमवार की सुबह इस घटना को अंजाम दिया गया है। पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। आरोपी की पहचान तमाड़ थाना क्षेत्र के अरहंगा गांव निवासी 45 वर्षीय सुखराम सिंह मुंडा वर्तमान पता कपाली ओपी के तामुलिया निवासी के रूप में हुई है। मृतिका की पहचान 25 वर्षीय रविवारी सिंह मुंडा एवं 5 वर्षीय गोलु सिंह मुंडा के रूप में हुई है। पुलिस ने घटना में प्रयुक्त लोहे का गोल नुमा तावा, लोहे का जीआई पाइप तथा एक शेविंग ब्लेड बरामद किया है। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया।

यूसील में रिटायरमेंट के साथ ही कर्मियों को सौंपा पीएफ का चेक

खबर मन्त्र ब्यूरो

जादूगोड़ा। यूसिल में 70 साल बाद एक ऐतिहासिक बदलाव आया है। इधर सोमवार को यूसिल के अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक डॉ संतोष कुमार सतपति के कार्यालय में एक समारोह आयोजित मार्च महीने के अंतिम दिन यानि 31 मार्च को सेवानिवृत होने वाले छह कम्पनी कर्मियों रिटायरमेंट के अंतिम दिन मिला भविष्य निधि का चेक सौंपा गया। जिसको लेकर सुबह 11 बजे यूसिल के अध्यक्ष सह प्रबन्ध निर्देशक के कार्यालय में एक समारोह आयोजित की गई। उपमहाप्रबंधक राकेश कुमार (कार्मिक) ने सेवानिवृत कर्मचारी दिनेश सिंह, मदन सीट, को भविष्य निधि की चेक सौंपा। यहां बताते चले कि बीते दिनों यूसिल के वित्त निर्देशक विक्रम केसरी दास ने सेवानिवृत कर्मचारियों को अपने कार्यालय में बुलाकर सेवानिवृत के बाद ग्रेच्युटी, भविष्य निधि, अर्जित छुट्टी, रिटायरमेंट महीना की सैलरी भुगतान की लेकर शिकायतों को जाना व देरी में सुधार को लेकर कंपनी के सीएमडी सतपति की अध्यक्षता में एक बैठक आयोजित कर यूसिल से सेवानिवृत कम्पनी कर्मियों को उसी महीने भविष्य निधि का चेक समेत कई महत्वपूर्ण फैसले लिए गए। जिसको 31 मार्च से लागू कर दी गई। इस बाबत राकेश कुमार ने दो दिन पूर्व अधिसूचना भी जारी कर दी व इसकी कॉपी सभी विभागीय अधिकारियों को सौप दी गई।

एक नजर में

गेल ने नवरात्रि व ईद पर पीएंडएम मॉल में दिया स्वच्छ पर्यावरण मित्र ईंधन पीएनजी का उपहार

जमशेदपुर। गेल के महाप्रबंधक एवं प्रभारी अधिकारी गौरी शंकर मिश्रा ने सोमवार को बताया कि नवरात्रि और ईद के शुभ अवसर पर जमशेदपुर के सबसे बड़े मॉल, पी&एम मॉल में गेल ने फूड कोर्ट को स्वच्छ, सुलभ, पर्यावरण मित्र, सस्ती और सुरक्षित ईंधन पीएनजी (पाइप्ड नेचुरल गैस) की आपूर्ति कर शहर को स्वच्छ ईंधन का उपहार दिया है। शुभारंभ के दौरान गौरी शंकर मिश्रा के साथ उनकी टीम के सदस्य अमित, दुर्गा, मिथिलेश, अनु, शिबान, रिपोम, प्रदीप शर्मा, आशुतोष, शिवम तथा मॉल से सुमन भट्टाचार्य, रंजीत और उनकी टीम उपस्थित रही। मिश्रा ने बताया कि गेल जमशेदपुर में तेजी से घरों, होटलों और उद्योगों में गैस आपूर्ति बढ़ाने का प्रयास कर रहा है। यह गैस सस्ती, पर्यावरण मित्र, सुरक्षित और 24x7 सुलभ है। उन्होंने जानकारी दी कि वर्तमान में गेल द्वारा जमशेदपुर में लगभग 5000 घरों में पीएनजी की आपूर्ति की जा रही है, जबकि 48 होटल और रेस्टोरेंट में पीएनजी का उपयोग हो रहा है। इसके अलावा, 14 सीएनजी स्टेशन के माध्यम से 6000 से अधिक वाहन सीएनजी पर चल रहे हैं। शहर के पेट क्राइमेटोरियम और पार्वती घाट क्राइमेटोरियम में भी गैस की उपलब्धता सुनिश्चित की गई है, जिससे पर्यावरण को गुणात्मक लाभ मिला है। यह प्रयास लगातार जारी रहेगा और जल्द ही उद्योगों में भी गैस आपूर्ति शुरू करने का लक्ष्य है। मिश्रा ने बताया कि शहर में बिछाई गई पाइपलाइनों को चिन्हित करने के लिए मार्कर लगाए गए हैं और उनकी सुरक्षा के लिए नियमित पेट्रोलिंग की जा रही है। उन्होंने नागरिकों से इन पाइपलाइनों की सुरक्षा हेतु सहयोग और समर्थन की अपील की, ताकि शहर में निर्बाध रूप से सुरक्षित गैस आपूर्ति जारी रह सके। अंत में, उन्होंने शहरवासियों से अधिक से अधिक पर्यावरण मित्र पीएनजी और सीएनजी का उपयोग करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि लोग घरों, होटलों, उद्योगों और वाहनों में इस स्वच्छ ईंधन का लाभ उठाएं और गैस आधारित अर्थव्यवस्था को मजबूत करते हुए विकसित भारत के लक्ष्य में भागीदार बनें।

आसपा प्रदेश अध्यक्ष काशिफ रजा ने ओल्ड ऐज होम में बांटी ईद की खुशियां

जमशेदपुर। ईद के अवसर पर सोमवार को आजाद समाज पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष काशिफ रजा सिद्दीकी ने जमशेदपुर के बाराद्वारी स्थित आशीर्वाद ओल्ड ऐज होम में बुजुर्गों के साथ ईद की खुशियां बांटी, उन्होंने कहा की आज ईद के अवसर पर हमलोग ईद की खुशियां उनके साथ बांटने आये हैं जो खुशियों से महरूम हैं। काशिफ रजा ने कहा कि ओल्ड ऐज होम आकर उनका मन दुखी है क्योंकि यहां हमें इस दुनिया में लाने वालों को उनके बच्चो ने इस उम्र में अकेला छोड़ दिया है, यह कैसे सम्भव है, इंसान इतना कैसे गिर सकता है, हमारी कोशिश है कि हम इनके दुखी मन और जीवन में इस छोटी से कोशिश के द्वारा खुशी और चेहरों पर मुस्कान ला सके। कार्यक्रम में नईम खान, फैय्याज आलम, अनूप कुमार, दिनेश कुमार, मु वसीम, शमीम अहमद, अली वाहिद, कफील अहमद, आफताब पठान, आसिफ और अन्य उपस्थित थे।

भायली महिला मंडल का सोनारी में सामूहिक गणगौर पूजन और विसर्जन संपन्न

जमशेदपुर। शहर की धार्मिक एसं सामाजिक संस्था भायली महिला मंडल सोनारी द्वारा सोमवार को सोनारी स्थित महिला सत्संग भवन प्रांगण में हर्षोल्लास के साथ सुबह सामूहिक गणगौर पूजन का आयोजन किया गया। सुबह से ही मारवाड़ी समाज की महिलाओं और कन्याओं की भारी भीड़ पूजन के लिए उमड़ी। इस अवसर पर विवाहित महिलाओं ने अपने अखंड सौभाग्य के लिए ईसर-गौरा की पूजा की, जबकि कन्याओं ने उत्तम वर प्राप्ति के लिए 16 दिनों तक व्रत व पूजन किया। पूजन के पश्चात शाम 4 बजे दोमुहानी खरकाई-स्वर्णरेखा संगम तट पर मंडल अध्यक्ष कविता अग्रवाल के नेतृत्व में गणगौर विसर्जन संपन्न हुआ। इस दौरान महिलाओं और नवविवाहित बहुओं के लिए विशेष लाड़-मनुहार का आयोजन किया गया, जहां उपहार भेंट कर स्वागत किया गया। इस कार्यक्रम में जलपान एवं उपहार की व्यवस्था श्री श्याम भटली परिवार, जमशेदपुर द्वारा की गई थी। सामूहिक गणगौर विसर्जन के दौरान करीब 50 नवविवाहित बहनों और बेटियों को उपहार देकर सम्मानित किया गया। संगम तट पर बड़ी संख्या में महिलाओं की उपस्थिति से उत्सव का माहौल देखने लायक था। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में भायली महिला मंडल और श्याम भटली परिवार के सभी सदस्यों का योगदान रहा।

केंद्रीय रामनवमी अखाड़ा समिति ने सोनारी क्षेत्र के अखाड़ा समितियों का किया दौरा

खबर मन्त्र ब्यूरो

जमशेदपुर। जमशेदपुर केन्द्रीय रामनवमी अखाड़ा समिति ने सोमवार को सोनारी क्षेत्र के अनेको अखाड़ा समितियों का दौरा कर अखाड़ा के आयोजकों एंव उनके कार्यकर्ताओं से मुलाकत कर यह जानने का कोशिश किया कि इस वर्ष सोनारी क्षेत्र में राम नवमी अखाड़ा मे क्या खास होने वाला है है और अखाड़ा समितियों मे किस तरह का परेशानी होने की संभवना है। अधिकतर अखाड़ा समितियों बताया कि अखाड़ा विसर्जन रूट पर पडने वाले पेड़ की डालियों की छंटाई, नाली एंव रोड़ की सफाई, लाइट की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए। कुछ अखाड़ा समितियों ने विसर्जन के दिन शान्ति समिति एंव थाने के द्वारा नंबर आवंटन की प्रकृया को पारदर्शी बनाने का सुझाव दिया। केन्द्रीय रामनवमी अखाड़ा समिति के अध्यक्ष अरूण सिंह ने सोनारी क्षेत्र के रहने वाले हिन्दूवादी कार्यकर्ता अनिल कुमार सिंह सोनू ठाकुर संतोष वर्मा आदित्य वर्मा राहुल भट्टाचार्य को विशेष जिमेदारी दिया और निर्देश दिया है।

ममेरे भाई के रिसेप्शन एवं नामकरण कार्यक्रम में सह परिवार ननिहाल पहुंचे सीएम हेमंत सोरेन

खबर मन्त्र प्रतिनिधि

चांडिल। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन अपनी मां रूपी सोरेन एवं पत्नी कल्पना सोरेन के साथ चांडिल के धातकीडीह स्थित अपने ननिहाल पहुंचे। इधर सिता सोरेन भी अपनी बेटी के साथ पहुंची। अपने ममेरे भाई दीपक किस्कू व रेशमी किस्कू के शादी के रिसेप्शन और उनके संतान मानव एवं तन्वी के नामकरण समारोह में पहुंचे थे। मुख्यमंत्री सपरिवार रांची से सड़क मार्ग से देर शाम धाधकीडीह पहुंचे थे। ननिहाल पहुंचने पर मुख्यमंत्री का जोरदार स्वागत किया गया। मुख्यमंत्री ने वर-वधु दीपक किस्कू एवं रेशमी किस्कू को सुखमय दाम्पत्य जीवन का आशीर्वाद दिया तथा उनके उज्जवल दाम्पत्य जीवन की कामना की। मुख्यमंत्री के आगमन को लेकर सुरक्षा के चाक चौबंद व्यवस्था थी।

पूर्णिमा साहू ने जरूरतमंदों बच्चों के बीच मनाया बेटी आराध्या का जन्मदिन

विधायक ने कहा, आराध्या एक अच्छी इंसान बने, सेवा और परोपकार से जुड़े, यही सीख उसके जन्मदिन का उत्तम उपहार

खबर मन्त्र ब्यूरो

जमशेदपुर। जमशेदपुर पूर्वी की विधायक पूर्णिमा साहू ने अपनी सुपुत्री आराध्या के जन्मदिन को जरूरतमंद बच्चों के संग मनाया। सोमवार को बमार्माइंस स्थित आदर्श सेवा संस्थान में आयोजित कार्यक्रम में विधायक पूर्णिमा साहू एवं समाजसेवी ललित दास ने संस्थान के सैकड़ों बच्चों के संग सुपुत्री आराध्या का जन्मदिन मनाया। इस दौरान बच्चों के साथ केक कटिंग कर जन्मदिन की खुशियां साझा की गई। वहीं, संस्थान के बच्चों के बीच पाठ्य सामग्री (कॉपी, किताब, बॉक्स), स्कूल बैग, वाटर बोतल, चॉकलेट एवं अन्य सामग्री भेंटकर उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं व्यक्त की गई। इस दौरान नन्हीं आराध्या नए साथियों के बीच काफी हर्षित और उत्साहित दिखी। कार्यक्रम में विधायक पूर्णिका साहू ने जन्मदिन गीत गाकर बच्चों का उत्साह बढ़ाया।

इस अवसर पर विधायक पूर्णिमा साहू ने कहा कि खुशियां बांटने से बढ़ती हैं इसी सोच के तहत आज हमने जरूरतमंद बच्चों के बीच अपनी बेटी के जन्मदिन को मनाया। आराध्या एक अच्छी इंसान बने और सेवा व परोपकार से जुड़े, यही हमारी इक्षा है। पाठ्य सामग्री पाकर संस्थान के बच्चे शिक्षा के प्रति प्रेरित होंगे। आराध्या के जन्मदिन पर हम किसी के चेहरे पर मुस्कान ला सकें, तो यही सीख उसके लिए सबसे बड़ा उपहार होगा।

यूसील की हॉकी टीम राजस्थान में फेयर प्ले अवॉर्ड से सम्मानित

जादूगोड़ा। यूसिल की हाकी टीम को फेयर प्ले अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। इधर राजस्थान के रावत भाटा में आयोजित 39वीं डीएई हॉकी मीट में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर टीम सोमवार को लौट आई। यह टीम कप्तान तपन कुमार माझी के अगुवाई में 24-28 मार्च तक रावतभाटा राजस्थान में चली हाकी प्रतियोगिता ने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए फेयर प्ले अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। यूसिल की इस कोणार्क टीम में भरत सिंह, सुदर सिंह मंगल किस्कू, कोणार्क बीरेंद्र हेम्ब्रम, नरेश मुर्मू शामिल थे। अन्य खिलाड़ी तालचर (उड़ीसा) और वीईसीसी कोलकाता की आए थे।

केवीएस फन जोन ने शांति वैली में मनाया हिंदू नववर्ष

जमशेदपुर। केवीएस फन जोन के बैनर तले शांति वेली कालोनी,हुरलूंग, टेल्को में हिंदू नववर्ष 2082 हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि रविन्द्र कुमार झा प्रदेश कांग्रेस कमेटी, महासचिव विशिष्ट अतिथि अरविंद कुमार लाल ने कार्यक्रम का शुरूआत किए। इस अवसर पर नरेंद्र कुमार कर्ण ने स्वागत भाषण में हिंदू नववर्ष पर अपने विचार व्यक्त किए। कांग्रेस के नेता रविन्द्र कुमार झा ने हिंदू नववर्ष और इसके अध्याय , बच्चों को इसे अपने ज्ञान में ढालने हेतु बातें कही। केवीएस फन जोन के द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम में सफल प्रतिभागियों बच्चों एवं महिलाओं को विशिष्ट एवं मुख्य अतिथि के द्वारा ट्राफी एवं मेडल देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम रुपेश कुमार के द्वारा जादू दिखाया गया, जादू देख बच्चों एवं कालोनी निवासियों ने भरपूर मनोरंजन किया। मंच संचालन नम्रता श्रीवास्तव के द्वारा धन्यवाद ज्ञापन मौउ भट्टाचार्य के द्वारा किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में रेणु सिन्हा,विभा कर्ण, बबिता सिंह, वसुंधरा, संजय सिंह, राजीव रंजन, अजय शुक्ला, संदीप भट्टाचार्य, गौतम एवं अन्य के द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका निभाया गया।

नरवा पहाड़ में चैती दुर्गा पूजा की लेकर तैयारी जोरो पर,कई कार्यक्रमों की घोषणा

जादूगोड़ा। नरवा पहाड़ स्थित मुगार्धुटू में सार्वजनिक श्री श्री बसंती दुर्गा पूजा कमिटी की ओर से चैती दुर्गा पूजा की लेकर तैयारी जोरो पर हैं। सोमवार को कमिटी गठित कर कई कार्यक्रमों की घोषणा की गई। इस बाबत कमिटी के अध्यक्ष दिवाकर दास,सचिव धनपति दास, कोषाध्यक्ष शक्तिपदों दास ने कहा कि 3 अप्रैल को चैती मां दुर्गा का पट खुल जाएगा व भक्त जन मां दुर्गा का दर्शन कर सकेंगे। कार्यक्रम सफल बनाने में कमिटी की ओर से उपाध्यक्ष भीमसेन दास, डॉ निर्मल चांद, विश्वनाथ नायक, पतित पावन दास, कृष्णा दास, सुरजीत दास, गोपाल कृष्ण दास, विद्या सागर दास, बालाजी राव, सनत कुमार दास, धीरेन्द्र नाथ दास, सुकांत दास, सागर दास, राज दास अभिजित दास जुटे हुए हैं।

12वें छोटा नागपुर राष्ट्रीय नाट्य महोत्सव में नाटक 'कसक' की प्रस्तुति

खबर मन्त्र ब्यूरो

कसक के एक दृश्य में गीता कुमारी और प्रेम दीक्षित।

जमशेदपुर। राजधानी रांची में युवा नाट्य संगीत अकादमी रांची द्वारा 27 से 30 मार्च तक 4 दिवसीय 12वां छोटा नागपुर राष्ट्रीय नाट्य महोत्सव आयोजित किया गया था। जिसमें पूरे देश से विभिन्न राज्यों के नाट्य दल अपने-अपने राज्य के भाषीय नाटय लेकर सम्मिलित हो नाटको की प्रस्तुति दी। इस अवसर पर जमशेदपुर की युवा नाट्य दल गीता थिएटर भी अपने कलाकारों के साथ कसक नाटक लेकर रांची पहुंची। नाट्य दल ऑड्रे हाउस में कसक नाटक की प्रस्तुति दिया। कसक नाटक कर्ज में डूबे बांसुरी बजाने वाले बुधवा के गरीब परिवार की व्यथा पर आधारित है. जो गांव-गांव घुम बांसुरी बजा तथा गांव के ठाकुर के घर मेहनत-मजदूरी कर अपने परिवार का जिंदगी बसर बहुत मुश्किलों से करता हैं जिस कारण अपने परिवार की खुशी की जरूरतों को पूरा करने के लिए कर्ज तले डुब जाता है। नाटक का निर्देशन युवा थिएटर निदेशक प्रेम दीक्षित ने किया था। नाटक में बतौर मुख्य अभिनेत्री सुगनी की भूमिका गीता कुमारी, पति बुधवा की भूमिका प्रेम शर्मा, बेटी फुलवा सोनाक्षी प्रसाद , सोहन की भूमिका देवराज और नाटक के खलनायक ठाकुर की भूमिका में प्रेम दीक्षित तथा उनके साथ उनके दो चैले अंनत सरदार और राजा राव ने शानदार अभिनय किया। आपको बता दें कि उपस्थित दर्शक नाटक के दौरान रोते दिखे जिन्होंने नाटक की समाप्त के बाद सुगनी की अभिनय और दल मेहनत की बहुत प्रशंसा किया। जिस कारण से युवा नाट्य संगीत अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। गीता थियेटर की अध्यक्ष गीता कुमारी और सचिव प्रेम दीक्षित ने कहा कि नाटकों पर वर्कशॉप कल शाम 1 अप्रैल से शुरू होगा, जिसमें शहर के अभिनय में रुचि रखने वाले युवा हिस्सा बन रहे हैं। यह वर्कशॉप एक्टिंग के विभिन्न पहलुओं पर केंद्रित रहेगा। इसमें अभिनय, संवाद, और मंच प्रदर्शन पर युवाओं को विशेष जानकारी दिया जाएगा एवं श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले किन्हीं 5 प्रतिभागीयो को गीता थिएटर की ओर से दूसरे राज्यों में आगमी अखिल भारतीय नाट्य महोत्सव में हिस्सा बनने का शानदार मौका दिया जाएगा।

मुंबई ने चखा जीत का स्वाद, कोलकाता को हराया

पहले गेंदबाज चमके, फिर बल्लेबाजों ने धोया, केकेआर को 8 विकेट से हराया

एजेंसी

मुंबई। आइपीएल 2025 के पहले 11 मैचों में 9 टीमों का खाता खुल गया था। सिर्फ मुंबई इंडियंस को जीत नहीं मिली थी। अब हार्दिक पंड्या की टीम को भी सीजन की पहली जीत मिल गई है। सीएसके और गुजरात से हारने के बाद मुंबई ने केकेआर पर 8 विकेट की आसान जीत हासिल कर ली। वानखेड़े स्टेडियम पर मुंबई इंडियंस ने 17वें ओवर में केकेआर की पारी को 116 रनों पर समेट दिया। 13वें ओवर में मुंबई ने दो विकेट खोकर मैच को अपने नाम कर लिया। सूर्यकुमार यादव ने छक्के से मैच फिनिश किया।

अश्वनी कुमार रहे जीत के हीरो

बाएं हाथ के तेज गेंदबाज अश्वनी कुमार ने आइपीएल में डेब्यू के साथ 24 रन देकर चार विकेट लिए। 23 साल के अश्वनी ने अजिंक्य रहाणे (11), रिंकू सिंह (17), मनीष पांडे (17) और आंद्रे रसेल (5) जैसे केकेआर के धुरंधर बल्लेबाजों को आउट किया। दीपक चाहर ने 19 रन देकर दो विकेट लिये जबकि ट्रेंट बोल्ट को एक विकेट मिला। अश्वनी आइपीएल में पहले ही मैच में चार विकेट लेने वाले पहले भारतीय बन गए।

7 गेंदों पर ओपनर्स निपट गए

केकेआर की शुरूआत बहुत खराब रही। वानखेड़े स्टेडियम की उछाल और स्विंग लेती पिच पर मुंबई के नयी गेंद के गेंदबाजों ने केकेआर के बल्लेबाजों की गलतियों का पूरा फायदा उठाया। ट्रेंट बोल्ट ने नारायण को पहले ही ओवर में फुल लेंग्थ गेंद पर आउट किया। अगले ओवर में चाहर ने डिकॉक को मिड आफ पर अश्वनी के हाथों लपकवाया। रहाणे ने एक छक्का और एक चौका लगाकर दबाव कम करने की कोशिश की लेकिन अश्वनी ने उन्हें पहली ही गेंद पर पवेलियन भेज दिया। पंजाब के इस तेज गेंदबाज ने केकेआर कप्तान को आगे बढकर खेलने के लिये ललचाया और उन्होंने हवा में शॉट खेलकर डीप बैकवर्ड प्वाइंट पर कैच दे दिया। अंगकृष रघुवंशी (26) ने विकेट के दोनों ओर चौके लगाये और अश्वनी को एक छक्का भी जड़ा। रघुवंशी भी गैर जिम्मेदाराना शॉट खेलकर पवेलियन लौटे। हार्दिक पंड्या की गेंद पर नमन धीर ने डीप स्क्वेयर लेग पर उनका कैच लपका।

आइपीएल डेब्यू पर सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले भारतीय गेंदबाज अश्विनी कुमार

अश्विन कुमार ने डेब्यू पर तीन ओवर में 11 रन देकर चार विकेट लिए। यह आइपीएल इतिहास में डेब्यू पर किसी गेंदबाज का चौथा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। अश्विनी का यह प्रदर्शन डेब्यू पर किसी भारतीय का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। आइपीएल में डेब्यू पर सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन का रिकॉर्ड अल्जारी जोसेफ के नाम है जिन्होंने 2019 में मुंबई इंडियंस की ओर से खेलते हुए सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ 12 रन देकर छह विकेट लिए थे। अश्विनी ने शानदार प्रदर्शन के बाद बताया कि वह मैच को लेकर काफी नर्वस थे जिस कारण कुछ खा भी नहीं सके थे। अश्विनी ने बताया कि उन्होंने मैच से पहले एक केला खाया था। अश्विनी ने कहा, मुझे यहां खेलना पसंद है। मैं काफी दबाव में था, लेकिन टीम के वातावरण ने मेरे लिए चीज आसान बनाई जो मुझे अच्छी लगी। मैंने लंच में एक केला खाया था। मैं दबाव में था और मुझे भूख नहीं लगी थी। टीम ने मुझसे कहा कि अपने डेब्यू का आनंद लो और जैसे गेंदबाजी करते हो वैसे ही करो।

कोलकाता 116/10 (16.2 ओवर)

खिलाड़ी	रन	गेंद	चौका	छक्का
डी कॉक कै. अश्विनी बो. चहर	01	03	00	00
सुनील नरेन बोल्ड ट्रेंट बोल्ट	00	02	00	00
रहाणे कै. तिलक बो. अश्विनी	11	07	01	01
रघुवंशी कै. धीर बो. हार्दिक	26	16	03	01
वेंकटेश कै. रिकेलटन बो. चहर	03	09	00	00
रिंकू सिंह कै. धीर बो. अश्विनी	17	14	01	01
मनीष पांडे बोल्ड अश्विनी	19	14	02	01
आंद्रे रसेल बोल्ड अश्विनी	05	11	01	00
रमनदीप कै. हार्दिक बो. सैंटनर	22	12	01	02
हर्षित कै. धीर बो. पुथूर	04	08	00	00
स्पेंसर जॉनसन नाबाद	01	03	00	00

अतिरिक्त : 07

विकेट पतन : 1-1, 2-2, 25-3, 41-4, 45-5, 74-6, 80-7, 88-8, 99-9, 116-10.

गेंदबाज : ट्रेंट बोल्ट : 4-0-23-1, दीपक चहर : 2-0-19-2, अश्विनी कुमार : 3-0-24-4, हार्दिक पंड्या : 2-0-10-1, विघ्नेश पुथूर : 2-0-21-1, मिचेल सैंटनर : 3.2-0-17-1.

मुंबई 121/2 (12.5 ओवर)

खिलाड़ी	रन	गेंद	चौका	छक्का
रोहित शर्मा कै. राणा बो. रसेल	13	12	00	01
रायन रिकेलटन नाबाद	62	41	04	05
जैक्स कै. रहाणे बो. रसेल	16	17	00	01
सूर्यकुमार यादव नाबाद	27	09	03	02

अतिरिक्त : 03

विकेट पतन :46-1, 91-2.

गेंदबाज : स्पेंसर जॉनसन : 2-0-14-0, हर्षित राणा : 2-0-28-0, वरुण चक्रवर्ती : 3-0-12-0, आंद्रे रसेल : 2.5-0-35-2, सुनील नरेन : 3-0-32-0.

पंजाब की बादशाहत को चुनौती देने को तैयार पंत की सेना

लखनऊ। उत्साही कप्तान ऋषभ पंत की अगुवाई में लखनऊ सुपर जायंट्स मंगलवार को पंजाब किंग्स पर जीत दर्ज कराने के इरादे से अपने घरेलू मैदान इकाना स्टेडियम पर उतरेगी। आइपीएल 2025 के 13वें मैच में लखनऊ के निकोलस पूरन की धमाकेदार फॉर्म और पंजाब के श्रेयस अय्यर की कप्तानी की झलक देखने को मिलेगी। दोनों टीमों ने टूर्नामेंट की शुरूआत में ही शानदार प्रदर्शन किया है, जिससे रोमांचक मुकाबले की उम्मीद है। पूरन शानदार फॉर्म में हैं, उन्होंने अपने पिछले पांच मैचों में 250 से अधिक रन बनाए हैं और अकेले दम पर एलएसजी के लिए मैच का रुख बदला है।

आइपीएल 2025 पॉइंट्स टेबल

टीम	मैच	जीत	हार	रद्द	अंक	रन रेट
बेंगलुरु	02	02	00	00	04	+2.266
दिल्ली	02	02	00	00	04	+1.320
लखनऊ	02	01	01	00	02	+0.963
गुजरात	02	01	01	00	02	+0.625
पंजाब	01	01	00	00	02	+0.550
मुंबई	03	01	02	00	02	+0.309
चेन्नई	03	01	02	00	02	-0.771
हैदराबाद	03	01	02	00	02	-0.871
राजस्थान	03	01	02	00	02	-1.112
कोलकाता	03	01	02	00	02	-1.428

पर्पल कैप
09 विकेट
नूर अहमद
चेन्नई

ऑरेंज कैप
145 रन
निकोलस पूरन
लखनऊ

पराग पर लगा धीमे ओवर गति के लिये जुमार्ना

गुवाहाटी। राजस्थान रॉयल्स के अस्थाई कप्तान रियान पराग पर चेन्नई सुपर किंग्स के खिलाफ इंडियन प्रीमियर लीग 2025 के मैच के दौरान धीमी ओवर गति के लिए 12 लाख रुपये का जुमार्ना लगाया गया है। आइपीएल की ओर से जारी विज्ञप्ति के अनुसार धीमी ओवर गति को लेकर रियान पराग की टीम की यह पहली गलती है इसलिए आइपीएल की आचार संहिता की धारा 2.22 के तहत उन पर 12 लाख रुपये का जुमार्ना लगाया गया है। पराग इस सीजन में इस नियम के तहत दंडित होने वाले दूसरे कप्तान हैं। इससे पहले मुंबई इंडियंस के कप्तान हार्दिक पांड्या पर भी धीमी ओवर गति के कारण जुमार्ना लगाया गया था।

भारत ने एशियाई कुश्ती चैंपियनशिप में जीते 10 पदक

अम्मान। एशियाई कुश्ती चैंपियनशिप 2025 में भारतीय पहलवानों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए एक स्वर्ण, तीन रजत और छह कांस्य पदक सहित कुल 10 पदक जीते। जॉर्डन के अम्मान में चैंपियनशिप के अंतिम दिन रविवार को फ्री स्टाइल कुश्ती के पांच भार वर्गों में मुकाबलों में दो भारतीय पहलवान उदित (61 किग्रा) और दीपक पुनिया (92 किग्रा) फाइनल में पहुंचे। दो अन्य मुकुल दहिया (86 किग्रा) और दिनेश (125 किग्रा) ने कांस्य पदक के लिए प्रतिस्पर्धा की। 92 किग्रा के फाइनल मुकाबले में दो बार के एशियन चैंपियन ईरान के अमीर हुसैन फिरोजपुर के खिलाफ तकनीकी श्रेष्ठता के आधार पर दीपक पूनिया 10-0 से हार गए। चैंपियनशिप में दीपक पूनिया का पांचवां पदक था। उन्होंने तीन रजत, दो कांस्य सहित कुल पदक जीते हैं। पूनिया के पिछले सभी पदक 86 किग्रा वर्ग में आए थे। फाइनल में पहुंचने से पहले दीपक पूनिया ने मुश्किल क्वार्टरफाइनल मुकाबले में किर्गिस्तान के बेकजात राखिमोव को 12-7 से हराया था। इसके बाद जापान के ताकाशी इशिगुरो को 8-1 के खिलाफ आसान जीत दर्ज की।

चोटिल उस्मान न्यूजीलैंड के खिलाफ दूसरे मैच से बाहर

हेमिल्टन। पाकिस्तान के बल्लेबाज उस्मान खान चोट के कारण न्यूजीलैंड के खिलाफ होने वाले दूसरे एकदिवसीय मैच से बाहर हो गये है। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड की ओर से जारी बयान के अनुसार सलामी बल्लेबाज उस्मान खान नेपियर के मैक्लीन पार्क में न्यूजीलैंड के खिलाफ पहले एकदिवसीय मैच के दौरान क्षेत्ररक्षण करते हुए चोटिल हो गये थे एमआरआई स्कैन में हल्की चोट की पुष्टि हुई है। जिसके कारण वह दो अप्रैल को हैमिल्टन के सेडन पार्क में होने वाले दूसरे एकदिवसीय मैच के लिए उपलब्ध नहीं हो पाएंगे।

भारत में तीन और अंतरराष्ट्रीय स्क्वैश टूर्नामेंट के लिये हुआ समझौता

मुंबई। भारत में स्क्वैश खेल को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने के उद्देश्य से जेएसडब्ल्यू स्पोर्ट्स और स्क्वैश रैकेट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया ने एक ऐतिहासिक समझौता पर हस्ताक्षर किए हैं। इस समझौते के तहत अगले तीन वर्षों में देश में तीन पीएसए स्क्वैश कॉपर टूर्नामेंट आयोजित किये जाएंगे। एसआरएफआइ के संरक्षक एन. रामचंद्रन और जेएसडब्ल्यू स्पोर्ट्स के संस्थापक व निदेशक पार्थ जिंदल ने सोमवार को इस नई साझेदारी की घोषणा की। हाल ही में संपन्न जेएसडब्ल्यू इंडियन ओपन ने भारतीय स्क्वैश को एक नई दिशा दी है।

धोनी 10 ओवर तक बल्लेबाजी नहीं कर सकते : फ्लेमिंग

एजेंसी

चेन्नई। चेन्नई को गुवाहाटी में राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ खेले गए आइपीएल 2025 के 11वें मैच में हार का सामना करना पड़ा। रोमांचक मुकाबले में आखिरी ओवर में चेन्नई को जीत के लिए 20 रन चाहिए थे और महेंद्र सिंह धोनी आउट हो गए और उसी वक्त फैंस और टीम की उम्मीदें भी खत्म हो गई। मैच के बाद के मुख्य कोच स्टीफन फ्लेमिंग ने कहा कि महान भारतीय विकेटकीपर एमएस धोनी इंडियन प्रीमियर लीग के दौरान 10 ओवर तक बल्लेबाजी नहीं कर सकते। धोनी ने पहले मैच में केवल दो गेंदों का सामना किया था जिसे चेन्नई ने जीता था, तथा रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु से मिली हार में उन्होंने 16 गेंदों पर 30 रन बनाए थे, लेकिन वे असफल रहे थे। फ्लेमिंग ने कहा, यह समय की बात है। एमएस इसका आकलन करते हैं। उनके घुटने पहले जैसे नहीं रहे। वे ठीक चल रहे हैं, लेकिन अभी भी उनमें कमजोरी है। वे पूरी ताकत से दौड़ते हुए 10 ओवर तक बल्लेबाजी नहीं कर सकते। इसलिए वे उस दिन यह आकलन करेंगे कि वे हमें क्या दे सकते हैं। उन्होंने कहा, अगर खेल संतुलन में है, तो वह थोड़ा पहले चला जाएगा और जब अन्य अवसर सामने आएंगे तो वह अन्य खिलाड़ियों का समर्थन करेगा।

ला लीगा: बार्सिलोना ने गिरोना को 4-1 से हराया

बार्सिलोना। रॉबर्ट लेवांडोव्स्की ने शानदार प्रदर्शन करते हुए दो गोल दागे, जिससे बार्सिलोना ने गिरोना को 4-1 से हरा दिया। इस जीत के साथ ही बार्सिलोना ला लीगा की तालिका में रियल मैड्रिड को हटाकर शीर्ष पर पहुंच गया और तीन अंकों की बढ़त बना ली। रविवार को हुए इस मुकाबले में रियल मैड्रिड ने लेगानेस को हराकर बार्सिलोना की बराबरी कर ली थी, लेकिन हैंसी फ्लिक की टीम ने ओलंपिक स्टेडियम में फिर से बढ़त हासिल कर ली। लेवांडोव्स्की ने मैड्रिड के स्टार किलियन एम्बाप्पे के दो गोलों का जवाब अपने दो गोल से दिया और स्पेनिश गोल्डन बूट की दौड़ में तीन गोल की बढ़त बनाए रखी।

19 साल के मेन्सिक ने जीता मियामी ओपन का खिताब

एजेंसी

मियामी। 19 वर्षीय जैकब मेनसिक ने 31 मार्च, सोमवार को मियामी ओपन के फाइनल में सर्बियाई दिग्गज नोवाक जोकोविच को 7-6 (7-4), 7-6 (7-4) से हराकर 24 बार के ग्रैंड स्लैम चैंपियन को चौंका दिया। यह मेनसिक का पहला एटीपी खिताब है, क्योंकि वह अपने बचपन के आदर्श को हराकर एटीपी खिताब जीतने वाले नौवें सबसे युवा खिलाड़ी बन गये हैं। सूजी हुई आंख के साथ खेलते हुए 37 वर्षीय जोकोविच ने मुकाबले में शानदार दृढ़ संकल्प और धैर्य का परिचय दिया, जिसके लिए वह जाने जाते हैं। उन्होंने एटीपी रैंकिंग में 54वें स्थान पर काबिज इस युवा खिलाड़ी के खिलाफ कड़ी टक्कर दी और दोनों सेटों को टाई-ब्रेकर में खींच लिया। हालांकि, मेनसिक ने तनावपूर्ण खेल में अपना संयम बनाए रखा और सर्बियाई महान खिलाड़ी पर जीत हासिल करने के लिए बाधाओं को पार किया. उल्लेखनीय रूप से, मेनसिक ने मैच में 14 ऐस बनाये। नतीजतन, जोकोविच अपने करियर की 100वीं खिताबी जीत से वंचित रह गये। वह ओपन एरा में 100 या उससे अधिक करियर खिताब जीतने वाले सिर्फ दो पुरुष जिमी कोनर्स और रोजर फेडरर की लिस्ट में शामिल नहीं हो पाये। कोनर्स वर्तमान में 109 खिताब के साथ शीर्ष पर हैं, जबकि उनके बाद दिग्गज रोजर फेडरर 103 के साथ दूसरे स्थान पर काबिज हैं। अपनी शानदार जीत के बाद, मेनसिक ने कहा कि उनके मन में अपने आदर्श जोकोविच के लिए सम्मान के अलावा कुछ नहीं है और उन्होंने टेनिस खेलने के लिए उन्हें प्रेरित करने के लिए उनका धन्यवाद किया। मेनसिक ने कोर्ट पर दिए अपने साक्षात्कार में कहा नोवाक, हर कोई जानता है कि मैं यहां हूं, इसकी एक वजह तुम हो। मैंने तुम्हें बड़ा होते देखा है। मैंने तुम्हारी वजह से टेनिस खेलना शुरू किया। किसी टेनिस खिलाड़ी के लिए किसी टूर्नामेंट के फाइनल में तुम्हें हराने से ज्यादा मुश्किल काम कोई नहीं हो सकता। इस खेल में तुमने जो कुछ भी किया है और सभी के लिए तुम्हारा बहुत-बहुत शुक्रिया। तुम एक अविश्वसनीय व्यक्ति हो। अब तक के सबसे महान व्यक्ति। इससे पहले, बारिश और बिजली गिरने की वजह से मैच कई घंटों तक देरी से शुरू हुआ। जोकोविच ने दूसरे गेम की शुरूआत में ही एक ब्रेक पॉइंट गंवा दिया, लेकिन सातवें गेम में इसे वापस हासिल कर लिया। हालांकि, मेनसिक टाई ब्रेकर में मजबूती से उभरे, जिसकी शुरूआत 5-0 की बढ़त के साथ हुई और आखिरकार सेट को सील कर दिया गया। जोकोविच ने दूसरे सेट में भी कड़ी टक्कर दी और दो ब्रेक पॉइंट बचाये। लेकिन मेनसिक की तेजी और चपलता ने उन्हें थोड़ी बढ़त दिलाई और टाई-ब्रेकर में दूसरा सेट जीत लिया।

जीत के बाद जैकब मेनसिक।

दोनों फाइनलिस्ट के बीच 18 साल का अंतर

दोनों फाइनलिस्ट के बीच 18 साल 102 दिन का अंतर था, जो कि 1976 के बाद किसी भी एटीपी-1000 स्तर के फाइनल या किसी भी टूर स्तर के फाइनल में सबसे बड़ा उम्र का अंतर था। इससे पहले यह रिकॉर्ड आंद्रे अगासी और राफेल नडाल के बीच मॉन्ट्रियल मास्टर्स 2005 के फाइनल मुकाबले के नाम था। तब अगासी 35 साल और नडाल 19 साल के थे और फाइनल में दोनों के बीच उम्र का अंतर 16 साल 35 दिन का था।

जोकोविच 100वां एटीपी खिताब से चूके

राष्ट्रीय थ्रोबॉल में झारखंड बालिका टीम उपविजेता बनी

- झारखंड की बेटियों का दमदार प्रदर्शन, प्रमिला सोरेन बनी सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। थ्रोबॉल फेडरेशन ऑफ इंडिया एवं छत्तीसगढ़ प्रदेश थ्रोबॉल संघ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 32वीं सब जूनियर राष्ट्रीय थ्रोबॉल प्रतियोगिता में झारखंड की बालिका टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए रजत पदक हासिल किया। यह प्रतियोगिता 28 से 30 मार्च 2025 तक भिलाई, छत्तीसगढ़ में संपन्न हुई। झारखंड टीम ने अपने लीग मुकाबलों में शानदार जीत दर्ज करते हुए क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया। पहले लीग मैच में हरियाणा को 25-19, 25-17 से, दूसरे लीग मैच में मेजबान छत्तीसगढ़ को 25-10, 25-13 से एवं तीसरे मैच में उत्तर प्रदेश को 25-1, 25-3 से मात दी। इसके बाद क्वार्टरफाइनल में झारखंड ने आंध्र प्रदेश को 25-20, 25-22 से हराकर सेमीफाइनल में जगह बनाई। सेमीफाइनल में टीम ने मुंबई को 25-15, 25-09 से हराते हुए फाइनल में प्रवेश किया। फाइनल मुकाबले में झारखंड ने पहले सेट में शानदार खेल दिखाते हुए बढ़त बनाई, लेकिन कर्नाटक के खिलाफ संघर्षपूर्ण मुकाबले में 25-22, 13-25, 21-25 से हार का सामना करना पड़ा और रजत पदक से संतोष करना पड़ा। झारखंड की प्रतिभाशाली खिलाड़ी प्रमिला सोरेन को प्रतियोगिता की सर्वश्रेष्ठ बालिका खिलाड़ी के रूप में चुना गया, जो राज्य के लिए गर्व का विषय है। झारखंड टीम की इस उपलब्धि पर डॉ. राजेश गुप्ता, भरत कांशी, जमील अंसारी, सुनील चक्रवर्ती, आलोक दुबे, विजेता वर्मा, वेदांत कौस्तव, शंकर दुबे, शिव शंकर पांडे, नगीना कुमार, सोनू सिंह, विश्वजीत कुमार, क्वीन ठाकुर, सुकांता कुंडू, सुनीता महतो, रणधीर ज्वाला, अमित कुमार, अरुणा यादव, अन्नू यादव, सरस्वती, जेबा, तमन्ना, शाहरा, अंशुमन, अजित जयसवाल सहित कई खेल प्रेमियों और अधिकारियों ने टीम को बधाई दी। झारखंड थ्रोबॉल टीम की इस शानदार उपलब्धि से राज्य के खिलाड़ियों का मनोबल और अधिक बढ़ेगा और खेल के क्षेत्र में झारखंड का नाम और ऊंचाइयों तक पहुंचेगा।

बिहार के राजगीर में होगा पुरुष हीरो हॉकी एशिया कप

एजेंसी

नयी दिल्ली। बिहार का ऐतिहासिक शहर राजगीर अगले हीरो एशिया कप की मेजबानी करने के लिए पूरी तरह तैयार है। इस बारे में सोमवार को हॉकी इंडिया और बिहार राज्य खेल प्राधिकरण के बीच समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए। यह टूर्नामेंट 29 अगस्त से 7 सितंबर तक हाल ही में विकसित राजगीर हॉकी स्टेडियम में खेला जाएगा। यह आयोजन भारत के खेल बुनियादी ढांचे के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होगा और बिहार को एक उभरते हुए वैश्विक खेल केंद्र के रूप में स्थापित करेगा। यह राजगीर में आयोजित होने वाला दूसरा अंतरराष्ट्रीय खेल आयोजन होगा। इससे पहले नवंबर 2024में महिला एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी का सफल आयोजन हुआ था, जिसमें भारत ने विजेता बनने का गौरव प्राप्त किया था। हीरो एशिया कप का यह 12वां संस्करण होगा, जिसमें भारत, पाकिस्तान, जापान, कोरिया, चीन और मलेशिया सहित कुल आठ टीमें हिस्सा लेंगी। शेष दो टीमें एएचएफ कप क्वालीफायर के माध्यम से टूर्नामेंट में प्रवेश करेंगी। भारत ने 2003, 2007 और 2017 में 3 बार यह टूर्नामेंट जीता है, जबकि पाकिस्तान ने 1982, 1985 और 1989 में 3 बार खिताब अपने नाम किया है। हीरो एशिया कप इसलिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह 2026 एफआइएच पुरुष हॉकी विश्व कप के लिए क्वालीफाइंग टूर्नामेंट होगा। यह विश्व कप बेल्जियम और नीदरलैंड्स में आयोजित होगा। एशिया कप का विजेता सीधे विश्व कप के लिए क्वालीफाई करेगा, जिससे टूर्नामेंट का रोमांच और भी बढ़ जाएगा। बिहार खेल विभाग के अपर मुख्य सचिव डॉ. बी. राजेंद्र ने कहा, यह समझौता बिहार को एक प्रमुख खेल केंद्र के रूप में स्थापित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। हीरो एशिया कप 2025 की मेजबानी हमारे राज्य के लिए गर्व की बात है, और हम इसके सफल आयोजन के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं। नया राजगीर हॉकी स्टेडियम बिहार में बढ़ते खेल बुनियादी ढांचे का प्रतीक है। हमें खुशी है कि हम एशिया की शीर्ष टीमों की मेजबानी करेंगे, और यह आयोजन बिहार के युवा खिलाड़ियों को प्रेरित करेगा। मैं हॉकी इंडिया और एशियाई हॉकी महासंघ को उनके समर्थन के लिए धन्यवाद देता हूं और एक विश्वस्तरीय टूर्नामेंट आयोजित करने को लेकर उत्साहित हूं।

हॉकी इंडिया और बिहार के बीच एमओयू पर हुए हस्ताक्षर

एशियाई हॉकी महासंघ के अध्यक्ष डाटो फुमियो ओगुरा ने कहा

हीरो एशिया कप राजगीर, बिहार 2025 एशियाई हॉकी के लिए एक और ऐतिहासिक क्षण होगा। भारत हमेशा हमारे महाद्वीप में हॉकी के विकास का एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। राजगीर को मेजबान शहर के रूप में चुनना, इस खेल को पारंपरिक केंद्रों से आगे बढ़ाने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। बिहार में नई खेल संरचना और हॉकी के प्रति बढ़ता जुनून इस टूर्नामेंट को शानदार बनाएगा। चूंकि विश्व कप का टिकट भी दांव पर है, यह एक रोमांचक प्रतियोगिता होगी। मैं हॉकी इंडिया और बिहार सरकार को उनके प्रयासों के लिए धन्यवाद देता हूं।

हॉकी इंडिया के अध्यक्ष डॉ. दिलीप तिर्की ने कहा

राजगीर में हीरो एशिया कप 2025 का आयोजन भारतीय हॉकी के लिए एक और महत्वपूर्ण कदम है। यह स्टेडियम अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप है, और मुझे विश्वास है कि यह खिलाड़ियों और दर्शकों को शानदार माहौल प्रदान करेगा। चूंकि, एशिया कप 2026 विश्व कप के लिए क्वालीफाइंग इवेंट भी है, हमें प्रतिस्पर्धा के उच्चतम स्तर की उम्मीद है। मैं बिहार सरकार को हॉकी को बढ़ावा देने में उनके समर्थन के लिए धन्यवाद देता हूं।

हॉकी इंडिया के महासचिव भोला नाथ सिंह ने कहा

हमें राजगीर, बिहार में एशिया कप लाने की खुशी है। यह टूर्नामेंट न केवल एशियाई हॉकी के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन को प्रदर्शित करेगा, बल्कि भारत और इस क्षेत्र में खेल को बढ़ावा भी देगा। बिहार में हॉकी को लेकर उत्साह तेजी से बढ़ रहा है, और यह अंतरराष्ट्रीय आयोजन कई युवा खिलाड़ियों को प्रेरित करेगा। हम टूर्नामेंट की सफलता को लेकर उत्साहित हैं और स्थानीय प्रशासन का उनके शानदार समर्थन के लिए धन्यवाद करते हैं।

हर्षोल्लास के साथ मना ईद त्योहार

पुलिस और प्रशासन की मौजूदगी में सुरक्षा व्यवस्था, एक-दूसरे को गले लगा दी बधाई

ईद मिलन समारोह में शामिल हुए विधायक आलोक सोरेन

लोगों को ईद की शुभकामनाएं देते विधायक आलोक सोरेन

शिकारीपाड़ा। स्थानीय विधायक आलोक सोरेन दुमका जिले के शिकारीपाड़ा प्रखंड मुख्यालय में सोमवार को ईद मिलन समारोह का आयोजन हुआ। जिसमें स्थानीय विधायक आलोक कुमार सोरेन ने भाग लिया। झारखंड मुक्ति मोर्चा द्वारा आयोजित इस मिलन समारोह के प्रमुख कार्यकर्त्ता शिकारीपाड़ा के पंचायत अध्यक्ष अब्दुल अंसारी थे। इस मौके पर पार्टी के प्रखंड अध्यक्ष चुंडा हेम्ब्रम, कोषाध्यक्ष कलीमुद्दीन अंसारी, प्रोफेसर गुलाम रसूल, तमीज अंसारी, संटु सिंह, ललका मियां, अजीज मियां, मुस्तफा मियां, कादीर मियां, अंगूर अंसारी सहित अन्य उपस्थित हुए। विधायक ने मीठी सेवाइयों और मिठाई का आनंद लिया। उन्होंने कहा कि ईद का यह त्यौहार आपसी सद्भाव और भाईचारे का संदेश देता है। इस मोके पर शिकारीपाड़ा विधानसभा समेत राज्य के लोगों को ईद मुबारकबाद दिया । उन्होंने उपस्थित लोगों के गले मिलकर-हाथ मिलाकर ईद की बधाई दी।

खबर मन्त्र संवाददाता

गोड्डा। जिले में ईद-उल-फितर का त्योहार हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। मुस्लिम समुदाय के लोग मस्जिदों में नमाज अदा करने के लिए एकत्र हो रहे हैं। इस मौके पर प्रशासन द्वारा कड़ी सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित की गई है। विधि व्यवस्था को बनाए रखने के लिए गोड्डा के विभिन्न प्रशासनिक और पुलिस अधिकारियों की टीम की तैनाती की गई है। अनुमंडल पदाधिकारी बैधनाथ उरांव, अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी अशोक प्रियदर्शी, पुलिस उपाधीक्षक (प्र०) कुमार गौरव, थाना प्रभारी दिनेश कुमार महली, सर्किल इंस्पेक्टर मधुसूदन मोदक, मेजर धर्मेन्द्र राम, कार्यपालक दंडाधिकारी अभय कुमार झा, दंडाधिकारी बबन कुमार सिंह, पु०अ०नि० भोला दास, कृष्णा कुमार साह, रामसूरत यादव आदि इस दौरान सुरक्षा और शांति व्यवस्था बनाए रखने में जुटे हुए हैं। ईद के इस मौके पर शहर में सुरक्षा बढ़ाई गई है, ताकि सभी श्रद्धालु इस धार्मिक अवसर का उल्लासपूर्ण माहौल में पालन कर सकें। प्रशासन का कहना है कि सभी संबंधित अधिकारियों के द्वारा निरंतर निगरानी रखी जा रही है और कानून व्यवस्था को बनाए रखने के लिए हर कदम उठाए जा रहे हैं। ईद की खुशी में जनजीवन सामान्य रूप से चल रहा है और लोग एक-दूसरे को शुभकामनाएं देते हुए त्यौहार का आनंद ले रहे हैं।

प्रेम व भाईचारे का पर्व ईद सौहार्दयपूर्ण महौल संपन्न

दुमका। प्रेम और भाईचारे का प्रतिम पर्व ईद शांतिपूर्ण एवं सौहादर्यपूर्ण महौल में सोमवार को संपन्न हुई। सुबह से ईद को लेकर मुस्लिम समाज के लोगों में उत्साह दिखी। नए-नए कपड़े पहन छोटे-छोटे बच्चे, युवा एवं बुजुर्गो को ने ईदगाहों में सामूहिक रूप से ईदी की नवाज अदा किया। इसके बाद एक-दूसरे को गले लगा ईद की बधाईया दी। इसके बाद सेवई और मिठाईयां खिला एक-दुसरे को ईद की बधाई दी। बड़े-बुजुर्गो ने छोटे-छोटे बच्चे को ईद के अवसर पर ईदी देकर शुभकामनाएं दिया। इसके बाद अपने-अपने रिस्तेदारों को घरों में जाकर एक-दूसरे को बधाईयां दिया।

नवाज अदा करते मुस्लिम समाज के लोग

बोकारो पुलिस लाइन में सरहुल उल्लासपूर्वक सम्पन्न

खबर मन्त्र संवाददाता

बोकारो। बोकारो स्टील सिटी के सेक्टर 12 स्थित पुलिस लाइन में पुलिस उप महानिरीक्षक सुरेंद्र झा एवं पुलिस अधीक्षक मनोज स्वगीर्यारी की उपस्थिति में आदिवासी युवकों एवं युवतियों के साथ धूमधाम से उल्लासपूर्ण वातावरण में सरहुल पर्व मनाया गया। उक्त सरहुल महोत्सव में डीआईजी एवं एसपी के साथ पुलिस के सभी पदाधिकारियों ने भाग लिया। सर्वप्रथम आदिवासी महिलाओं ने दोनों पुलिस पदाधिकारियों को तिलक लगाकर उनका स्वागत किया। तत्पश्चात सभी एक दुसरे को सरहुल की शुभकामनाएं देते हुए मांदर की थाप पर थिरकते रहे। मौके पर डीआईजी श्री झा एवं एसपी श्री स्वगीर्यारी ने कहा कि सरहुल प्रकृति के साथ उल्लास का पर्व है। हमें इसे सौहार्दपूर्ण वातावरण में मनाते हुए प्रकृति के संरक्षण पर भी ध्यान देने की जरूरत है।

त्रिदिवसीय आचार्य कार्यशाला का आयोजन

बेरमो। विद्या भारती योजनानुसार कस्तूरबा श्री विद्या निकेतन ढोरी में त्रिदिवसीय आचार्य कार्यशाला की शुरूआत सोमवार से हो गयी। कार्यशाला का उद्घाटन संकुल स्तरीय संयोजक अमित कुमार सिंह, गणपति देवी सरस्वती शिशु विद्या मंदिर के संरक्षक बृज बिहारी पांडेय, विद्यालय समिति के सचिव धीरज कुमार पांडे एवं प्रधानाचार्य रण सुमन सिंह ने संयुक्त रूप से दीप जलाकर मां सरस्वती,भारत माता एवं ओम पर पुष्पार्चन कर किया।

बेरमो कोयलांचल में भाईचारे के साथ मना ईद

बेरमो। बेरमो कोयलांचल के विभिन्न क्षेत्रों में सोमवार को ईद की धूम रही। लोगों ने ईद का त्योहार हर्षोल्लास के साथ शांतिपूर्ण ढंग से मनाया। मुस्लिम समुदाय के लोगों ने मस्जिद व ईदगाह में नमाज अदा की। नमाज के दौरान पूरे विश्व में अमन चैन की दुआ मांगी गई। इसके बाद लोगों ने एक दूसरे के गले मिलकर ईद की बधाई दी। निर्धारित समय पर सभी लोगों ने एक साथ नमाज अदा की। फुसरो, करगली, संडेबाजार, जरीडीह बाजार, जारंगडीह, कथारा,बोकारो थर्मल आदि इलाकों में भी ईद की नमाज अकीदत के साथ अदा की गई। त्योहर को लेकर मुस्लिम बहुल इलाकों में चहल पहल देखी गई। मौके पर विधि व्यवस्था को लेकर पुलिस को मुस्तैद देखा गया। दिल को साफ कर पुरानी रंजिश भूलकर त्योहार मनाना चाहिए। एक दूसरे के घर जाकर लजीज पकवानों का स्वाद चखा।

झरना नल जंगल में एक युवक का नरकंकाल मिला

खबर मन्त्र संवाददाता

बेरमो। पेटरवार थाना क्षेत्र के बगजोबरा झरना नल जंगल में सोमवार की सुबह एक युवक का नरकंकाल मिला। जंगल मे पत्ता तोड़ने गए लोगों ने सबसे पहले नरकंकाल को देखा। इसके बाद इसकी सूचना पेटरवार पुलिस को दी गयी।

सूचना पर पेटरवार थाना प्रभारी राजु कुमार मुंडा सशस्त्र बल के साथ मौके पर पहुंचकर कंकाल बरामद किया। वहीं घटनास्थल पर खोपड़ी, जबड़ा एवं दो हड्डी बरामद हुई। पेटरवार थाना पुलिस नरकंकाल को जब्त कर थाना लाकर मामले की छानबीन में जुट गई है। बताया जा रहा है कि नरकंकाल लगभग 4 माह पूर्व लापता युवक का है। नरकंकाल के पास पड़े जींस पेंट टीशर्ट मोली धागा देखकर उसके मामा एवं ग्रामीण इसकी पहचान 20 वर्षीय दीपक रजवार के रूप में की है। मृतक के मामा विनोद रजवार ने इसे हत्या का आरोप लगाते हुए जांच की मांग की है। बतातें चलें कि विष्णुगढ़ थाना क्षेत्र के अचल जामुन गांव निवासी 20 वर्षीय दीपक रजवार पतकी पंचायत के बगजोबारा गांव में दो साल से अपने ननिहाल में रहकर पढ़ाई कर रहा था। बीते 11 दिसंबर से लापता था। उसके स्वजनों के काफी खोजबीन के बावजूद कोई सुराग नही मिलने पर 14 दिसंबर को उसके स्वजनों ने गुमशुदगी का मामला दर्ज कराया था। इस संदर्भ में थाना प्रभारी राजू कुमार मुंडा ने बताया कि जब्त नर कंकाल को फोरेंसिंक जांच के लिए भेजा जाएगा साथ ही डीएनए जांच कराई जाएगी। इसकी रिपोर्ट आने के बाद ही मामला स्पष्ट हो सकेगा।

धूमधाम से रामनवमी मनाने को लेकर बैठक आहूत

बेरमो /तेनुघाट कोर्ट। तेनुघाट में रामनवमी धूमधाम से मनाने को लेकर पहाड़ी शिव मंदिर में मंगलवार एक अप्रैल को बैठक होगा। बताया गया कि इस बैठक में रामनवमी पर तेनुघाट में जुलूस निकालने पर भी चर्चा होगी। इसमें रामनवमी पूजा को भव्य रूप से मनाने पर भी चर्चा की जाएगी। साथ ही बैठक में रामनवमी पूजा को लेकर कमिटी गठन करने पर भी चर्चा होगी।

बांसती दुर्गा मंदिर में माँ ब्रह्मचारिणी की हुई पूजा

फुसरो। पिछरी बस्ती स्थित सार्वजनिक बासंती दुर्गा मंदिर में सोमवार को चैती दुर्गा पूजा दूसरे दिन माँ ब्रह्मचारिणी की पूजा की गयी। यहां पुरोहित पंडित नरेश पांडेय व मंदिर के पुजारी पवन पाठक ने मुख्य यजमान मुकेश मिश्रा को पूजा अर्चना कराया। मंदिर में कलश स्थापना कर दुर्गा सप्तसती पाठ जारी रहा। बताया गया कि दूसरे दिन माँ ब्रह्मचारिणी की पूजा की जा रही है।

सफल, सांसारिक जीवन-निर्वाह करते हुए मन- मंदिर में प्रभु की स्थापना, उनको जानना, मानना व उनके प्रति समर्पण का भाव ही प्रधान है: राजन जी महाराज

खबर मन्त्र संवाददाता

भगवान हमेशा आनंद देते हैं, जीवन में दुःख- सुख की प्राप्ति तो हमारे कर्मों का प्रतिफल व प्रारब्ध

बोकारो। बोकारो इस्पात नगर के सेक्टर 4 स्थित मजदूर मैदान में श्री राम कथा आयोजन ट्रस्ट बोकारो द्वारा आयोजित श्री राम कथा में प्रतिदिन श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ता जा रहा है। कथा वाचन के दौरान राजन जी महाराज ने प्रभु श्री राम के बाल लीला की अद्भुत कहानी रोचकपूर्ण अंदाज में सुनाई। उन्होंने राजा दशरथ के चारों पुत्रों के नामकरण संस्कार का प्रसंग सुनाते हुए कहा कि भगवान तो अनंत सुख के प्रदाता हैं।

कई बार भौतिकता के लबादे में जकड़ा, व्यक्ति किसी उद्देश्य की असफलता पर यह महसूस करता है कि भगवान बड़ा दुख दे रहे हैं जबकि सच्चाई यह है कि भगवान तो हमेशा आनंद ही देते हैं। दुख तो हमारे कर्मों का प्रतिफल होता है, हमें हमारे कर्मों के प्रारब्ध को स्वीकार करना चाहिए। सदैव सत्कर्म करते रहने से हमारे कर्मों का प्रतिफल तदनुरूप मिल सकेगा। राजन जी महाराज ने श्री राम के बाल लीला एवं अयोध्या नगरी में श्री राम के जन्मोत्सव पर बधाई गायन का उदाहरण देते हुए बताया कि उस समय अयोध्या का ऐसा दिव्य माहौल था कि भगवान सूर्य देव को भी कुछ पल के लिए ठहरना पड़ गया था। उन्होंने राजा दशरथ के चारों पुत्रों का शाब्दिक अर्थ सहित आध्यात्मिक अर्थ की सहज रूप में सप्रसंग व्याख्या की। राजन जी महाराज ने सभी को स्वच्छ पर्यावरण के प्रति सचेत किया और घर के हर मंगल अवसर पर वृक्षारोपण व पौधारोपण की सलाह दी। उन्होंने कहा कि प्रकृति ने हमें मुफ्त में हवा, पानी इत्यादि अति उपयोगी चीजें प्रदान की है। इतना तो हमारा कर्तव्य बनता है कि अपने व भावी पीढ़ियों के निमित्त उसके संरक्षण हेतु हम घर के हर मंगल अवसर पर एक पौधा लगा कर अपना आभार प्रकट करें। राजन जी महाराज द्वारा कथा सुनाने के दौरान- राजा जी खजनवा दे द, रानी जी गहनवा दे द.... आदि भजन की प्रस्तुति पर श्रद्धालु झूम उठे। क्या पुरुष !क्या महिला ! क्या बच्चे ! क्या युवा ! क्या वृद्ध सभी ने झूमते हुए आनंद की लहरों में गोता लगाया। उन्होंने बताया कि जब जब धर्म की हानि होती है, दुर्जनों की ओर से सज्जनों पर अपराध बढ़ता है और गौ- माता व प्रकृति पर अत्याचार/अनाचार होता है- तब तब प्रभु अवतार लेकर सज्जनों की पीड़ा हरते हैं और प्रकृति को संरक्षित करते हैं। राजन जी महाराज ने कहा कि माता पार्वती ने सती- जन्म के संशय को मिटाने खातिर महादेव से प्रभु महिमा के बारे में जिज्ञासा की तो महादेव ने माता की जिज्ञासा को संवाद स्वरूप में लेते हुए उनके हर जिज्ञासा का समाधान किया। बताया कि महादेव कहते हैं- एक गंगा मेरी जटा में है जो तट पर रहने वाले लोगों का उध्दार करती है और एक गंगा, मुख से श्री राम महिमा कथा के रूप में निकलती है जिससे समस्त विश्व का कल्याण होता है। माता पार्वती को श्री राम महिमा कथा सुनाने के पहले उनका धन्यवाद किया। वजह यह थी कि माता पार्वती के कारण श्री राम महिमा कथा को कालांतर में आम लोग भी सुनकर मुक्त होंगे। श्री राजन जी महाराज ने कहा कि प्रकृति के अनुकूल रहने पर सज्जन पुरुष पर ही भगवद कृपा होती है, प्रकृति को गंदा करने वाले या प्रदूषित करने वालों पर ईश्वर भी नाराज होते हैं क्योंकि भगवान ने ही प्रकृति/ब्रह्मांड का निर्माण किया है। जैसे हम घर को साफ सुथरा रखते हैं - उसी तरह मोहल्ले, समाज, नगर व नदी- वन आदि धरोहर को स्वच्छ व संरक्षित रखें। यह भी भगवान की सेवा है। राजन जी महाराज ने कहा कि प्रभु भजन का अर्थ यह कतई नहीं है कि दिन-रात मंदिर में बैठे रहें। यथार्थ में स्वस्थ व समुचित तरीके से सांसारिक जीवन-निर्वाह करते हुए मन- मंदिर में प्रभु को स्थापित करते हुए उनको जानने और मानने तथा समर्पण का भाव ही प्रधान है। राजन जी महाराज द्वारा कथा वाचन के दौरान प्रभु चरण में भावपूर्ण गीत व भजन की प्रस्तुति पर भक्ति- सरोवर में श्रद्धालुओं ने जमकर गोता लगाया औ? आनंदित हुए। श्री राम कथा आयोजन ट्रस्ट के शिवकुमार अग्रवाल ने बताया कि श्री राम कथा के श्रवण के लिए बोकारो एवं चास समेत जिला के विभिन्न क्षेत्र से ही नहीं बल्कि जमशेदपुर रांची व अन्य समीपवर्ती क्षेत्रों से भी श्रद्धालु पधार रहे हैं। श्री अग्रवाल ने बताया कि आयोजन समिति, श्रद्धालुओं की सुविधा-सुरक्षा एवं व्यवस्था हेतु पूरी तरह प्रतिबद्ध एवं सक्रिय है। इस आध्यात्मिक कार्यक्रम में समाज व शहर के लोगों का सहयोग अपेक्षित है।

स्पीड न्यूज

बोकारो में ईद सौहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न

बोकारो। बोकारो के शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में ईद सौहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न हुई। मस्जिदों में लोगों ने नमाज अदा कर एक दूसरे से गले मिलकर ईद की बधाइयां दी। समाज के हर समुदाय के लोगों ने गले मिलकर ईद की बधाइयां एवं शुभकामनाएं दी तथा सेवइयां एवं मिष्ठान का आनंद लिया। अर्द्धशहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र में भी उल्लास पूर्ण वातावरण में ईद का त्यौहार संपन्न हुआ।

आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति से लोग हुए भाव-विभोर

बोकारो। संस्कार भारती की बोकारो जिला इकाई की ओर से सेक्टर 4 स्थित जगन्नाथ मंदिर परिसर में चैत्र नवरात्रि के अवसर पर भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। संस्कार भारती के बोकारो जिला इकाई के अध्यक्ष अमरजी सिन्हा व महामंत्री स्वरूप शेखर पाण्डेय ने सभी को हिन्दू नववर्ष व चैत्र नवरात्रि की शुभकामनाएं दीं। अध्यक्ष अमरजी सिन्हा महामंत्री स्वरूप शेखर पांडेय के साथ ही मंत्री अर्चना चौधरी साहित्य प्रमुख अरुण पाठक नृत्य प्रमुख रजनी पाढ़ी वरिष्ठ संगीतज्ञ पं बच्चन जी महाराज हिमांशु शेखर मिश्रा संजीव मजूमदार प्रभा मोहनन नायर नृत्यांगना श्रीपर्णा घोष गुनगुन मजूमदार तनुश्री रीता देवी दीपिका कुमारी ज्ञान अलंकृत रेवंत जयेंद्र गौर प्रसाद आनंद कुमार ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से सभी को आनंदित किया।

सनातन का संदेश ले स्कूली बच्चों ने निकाली प्रभातफेरी

बोकारो। सनातन संस्कृति और समृद्ध परंपरा का ध्वजवाहक बन सरस्वती शिशु विद्या मंदिर 9डी में विद्यालय के भैया-बहनों ने घोष दल के साथ सेक्टर 9 में प्रभातफेरी निकाली जिसमें विद्यालय प्रबंधकारिणी समिति के सह सचिव जीपी सिंह एवं प्राचार्य राजेंद्र कामत तथा सभी आचार्य व दीदी सम्मिलित हुए। प्रभातफेरी के बाद उपस्थित सभी भैया-बहनों को एवं आचार्य-दीदी को शरबत एवं मिष्ठान वितरित किया गया एवं नवम एवं एकादश के भैया-बहनों का परीक्षा परिणाम वितरित किया गया। इसमें प्रत्येक कक्षा से प्रथम द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को सम्मानित किया गया। वाटिका शिशु वर्ग बाल वर्ग किशोर वर्ग एवं तरुण वर्ग में वर्ग सह अव्वल स्थान प्राप्त करने वाले भैया-बहनों को अलग से सम्मानित किया गया।

पदाधिकारियों व सदस्यों की बैठक संपन्न

बोकारो। बोकारो इस्पात जनता मजदूर संघ के पदाधिकारी सदस्यों की बैठक सेक्टर 3 टू टैंक गार्डन में तारकेश्वर महतो तारा बाबू की अध्यक्षता में सफलतापूर्वक संपन्न हुई जिसमें मुख्य रूप से बोकारो स्टील प्लांट प्रबंधन को दिए गए 20 सूत्री मांग पत्र के आलोक में वार्ता का समय निर्धारित नहीं करने पर सभी सदस्यों ने एकमत से प्रबंधन की कड़ी आलोचना की। संघ के महामंत्री सुमन सिंह ने कहा कि मजदूरों एवं कामगारों की मांग को प्रबंधन गंभीरता से ले। संयुक्त महामंत्री आशा देवी ने कहा कि बी एस एल प्लांट के अनाधिशासीयों के पदों का पूनः निर्धारण के मांग को स्वीकार करने के लिए प्रबंधन का स्वागत एवं कर्मचारियों को बधाई दी। बैठक में उपस्थित सदस्यों में मुख्य रुप से पुष्पा मिश्रा मंजु सिंह मिनाक्षी सिंह राम सागर शर्मा बिंदेश्वर बम श्याम कुमार गोकुल प्रशाद मिथुन कुमार रजनी देवी सुरेश प्रशाद सुमीत सिंह आदि थे।

खबर एक नजर में

युवक का अपहरण, 4 लाख फिरौती की मांग, अपहरणकर्ता गिरफ्तार

दुमका/निज संवाददाता। युवक को अपहरण कर 4 लाख रुपए की फिरौती की मांग करने के दो आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने अपहरणकताओं के पास से अपहृत युवक को भी सकुशल बरामद कर लिया है। अपहरण की यह घटना रविवार को नेतूरपहाड़ी के पास हुई थी। युवक के बड़े भाई अशोक कुमार दास के बयान पर मुफस्सिल थाना में दोनों आरोपी बलिया डंगाल के सुब्रोत मंडल एवं रसिकपुर नागडीह निवासी बिट्टू कुमार मंडल के विरुद्ध अपहरण की प्राथमिकी दर्ज की गई है। पुलिस ने सोमवार को दोनों को केन्द्रीय कारा भेज भी दिया है। बरामद युवक राजीव कुमार पाकुड़ जिला के महेशपुर थाना अन्तर्गत शिवरामपुर का निवासी है। भाई अशोक कुमार दास का बयान है कि उसका छोटा भाई राजीव कुमार रसिकपुर स्थित एक दिनेश लॉज में रहकर शिक्षक प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रहा था। 30 मार्च की रात में भाई के एक मित्र अंकित कुमार ने फोन कर बताया कि उसके भाई को कहीं अज्ञात जगह पर कुछ लोगों ने बंधक बनाकर रखा हुआ है। उक्त लोग पैसे की मांग कर रहा है। वे तुरंत दुमका पहुंचे और सोमवार को दिन के करीब 11 बजे उनके मोबाइल से फोन आया और कहा गया कि तुम्हारा भाई हमारे पास है। 4 लाख रुपया फिरौती के रुप में मांग की गई। उक्त रुपए को शाम तक बताए जगह पर पहुंचा दिया जाए। फिरौती की रकम नहीं मिलने पर अपहरणकताओं ने धमकी देते हुए कहा कि तुम्हारे भाई को साइबर फ्रॉड के केस में फंसाकर पुलिस को सौंप देंगे। साथ ही अपरहणकताओं ने धमकी देते हुए कहा कि समाज में भाई की इज्जत को खराब कर देंगे। ऐसी धमकी मिलने पर अशोक ने पुलिस से सम्पर्क किया। पुलिस ने टेक्नीकल सेल की मदद से दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने युवक को भी बरामद कर लिया है। पुलिस पूरी मामले की जांच पड़ताल करने में जुट गयी है।

बेरमो के सभी क्षेत्रों में हर्षोल्लास के साथ ईद का त्योहार सम्पन्न

फुसरो। बेरमो क्षेत्र में ईद का त्योहार सोमवार को आपसी भाईचारा, सांप्रदायिक सौहार्द के साथ शांतिपूर्ण माहौल में मनाया गया। मस्जिदों और ईदगाहों में ईद की नमाज अदा की गयी। इसके बाद लोगों ने एक-दूसरे से गले मिल कर बधाई दी। एक-दूसरे के घर जाकर भी ईद की बधाई दी। सेवई और लजीज व्यंजनों का आनंद लिया। कई जगह मेला भी लगा। बिनोद बिहारी महतो फुटबॉल ग्रॉउड करगली, पुराना बीडीओ ऑफिस स्थित मदरशा गुलशने मस्जिद, रहीमगंज स्थित जमा मस्जिद, भेड़मुक्का, पटेल नगर की मदनी व मक्का मस्जिद, फुसरो रहीमगंज जमा मस्जिद, गुलशने अजमेर पुराना बीडीओ ऑफिस, राजाबेड़ा शाह मौहल्ला मस्जिद, राजाबेडा अंसारी मोहल्ला मस्जिद, सेंट्रल कॉलोनी मकोली आदि में सैकड़ों लोगों ने अकीदत के साथ नमाज अदा की और देश व दुनिया के सुख-शांति के लिए दुआ मांगी। बिनोद बिहारी महतो फुटबॉल मैदान में काफी संख्या में लोगों ने नमाज अदा की। हाफिज एहशानुल हौदा ने नमाज अदा करायी। बच्चों ने नये कपड़े पहन कर ईद की नमाज घर में पढ़ने के बाद बड़ों से ईदी ली। इसके बाद ईद की खुशी मनाते हुए खूब मस्ती की। यहाँ बेरमो थाना के एसआई मनोहर मंडल, सचिन कुमार दल-बल के साथ विधि- व्यवस्था में लगे रहे।

ईद आपसी प्रेम व भाईचारे को बढ़ाने वाला त्योहार है: मंत्री योगेंद्र

बेरमो/ललपनिया। ईद के शुभ अवसर पर गोमिया प्रखण्ड क्षेत्र अंतर्गत ग्राम पंचायत कोदवाटांड़ और कासियाडीह में सोमवार को अल्पसंख्यक समुदायो की ओर से ईद मिलन समारोह का आयोजन किया गया।यहां मौके पर बतौर मुख्य अतिथि के तौर पर गोमिया के विधायक सह झारखंड के पेयजल एवं स्वच्छता तथा उत्पाद एवं मद्य निषेध विभाग मंत्री योगेन्द्र प्रसाद शामिल हुए। मौके पर उन्होंने उपस्थित सभी लोगों को ईद-उल-फितर की दिली मुबारकबाद दी।इस दौरान उन्होंने कहा कि यह पावन त्योहार प्रेम, भाईचारे, आपसी सौहार्द, सामाजिक एकता और सहयोग की भावना को मजबूत करने का संदेश देता है। कहा ईद आपसी प्रेम व भाईचारे को बढ़ाने वाला त्योहार है। त्योहार को शांतिपूर्ण तरीके से व आपसी गिले शिकवे

पेज 1 का शेष

नमाज के बाद...

दिखा गजब का उत्साह : इस्लाम धर्मावलंबियों के सबसे बड़े त्योहार ईद-उल-फितर को लेकर खासा उत्साह रहा। सुबह से ही नए-नए कपड़े पहनकर बच्चे, बुजुर्ग और युवाओं ने अपने-अपने घरों के पास के ईदगाहों और मस्जिदों में सामूहिक रूप से ईद की नमाज अता की। नमाजियों की सुविधा के लिए अलग-अलग ईदगाहों और मस्जिदों में ईद की नमाज का समय अलग-अलग निर्धारित किया गया था। नमाज अदा करने के बाद ज्यादातर लोग कब्रिस्तान में जाकर अपने पुरखों की कब्र पर फातिहा भी पढ़ा।

आज निकलेगी...

सरहुल शोभायात्रा का मुख्य केंद्र केंद्रीय सरना स्थल सिरमटोली होगा। यहां शोभायात्रा में शामिल सभी लोग अपने खोड़हा के साथ आयेंगे और सरना स्थल की परिक्रमा कर वापस अपने गंतव्य स्थान के लिए लौट जायेंगे। शोभायात्रा के स्वागत के लिए रांची शहर के विभिन्न चौक-चौराहों पर आकर्षक तोरण द्वार सहित स्वागत मंच विभिन्न सामाजिक-राजनीतिक व धार्मिक संगठनों द्वारा बनाये गये हैं। जनजातीय क्षेत्रीय भाषा विभाग में सुबह 10.30 बजे सरहुल महोत्सव होगा।

पूरे झारखंड में उल्लास : चमरा लिंडा- प्रकृति पर्व के उल्लास में पूरा झारखंड झूम रहा है। सखुआ के सुगंधित फूल से राज्य की फिजा महक रही है। आदिवासी समुदाय पिछले कई दिनों से अखड़ा में सरहुल को लेकर मांडर की थाप पर नृत्य अभ्यास कर रहा है। झारखंड में बोलना ही गीत और चलना ही नृत्य माना जाता है। राची विवि के दीक्षांत मंडप में नव सरना युवक संघ द्वारा आयोजित सरहुल पूर्व संध्या समारोह को संबोधित करते हुए कल्याण मंत्री चमरा लिंडा ने कहा कि सरहुल आदिवासियों का प्रकृति पर्व है, जो उनकी पूजा-पाठ, धर्म, संस्कृति और सरय फूल की महत्ता से जुड़ा हुआ है। उन्होंने कहा कि युवा पीढ़ी अपनी जड़ों जोड़ने में सरहुल के महत्व को समझना बेहद आवश्यक है। वहीं कृषि मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की ने कहा कि आदिवासी समाज हमेशा सामूकिता पर विश्वास करता है। उन्होंने कहा कि आदिवासी सभ्यता काफी समृद्ध हैं।

केंद्रीय सरना समिति के अध्यक्ष अजय तिर्की ने बताया कि आदिवासी समुदाय के लिए उल्लास, समृद्धि और प्रकृति के प्रति अपनी आस्था प्रकट करने का महत्वपूर्ण अवसर है। सिरमटोली सरना स्थल पर हजारों सरना धर्मावलंबी सरहुल शोभायात्रा में भाग लेंगे। समारोह के मुख्य अतिथि सीएम हेमंत सोरेन होंगे। इस पावन अवसर पर सभी आदिवासी समुदाय के लोग सरना मां से आशीर्वाद लेने के लिए माथा टेकेंगे और मन्नत मांगेंगे।

सरहुल शोभायात्रा दिशा-निर्देश : वहीं केंद्रीय सरना समिति के अध्यक्ष फूलचंद तिर्की ने बताया कि प्रकृति पूजा के इस महापर्व को लेकर जनमानस में भारी उत्साह है। सरहुल पर्व को शांति और हर्षोल्लास के साथ मनाने के दिशा-निर्देश जारी किये गये हैं। महिलाएं लालपाड़ साड़ी तथा पुरुष धोती-गंजी पहनकर शोभायात्रा में शामिल हों। पारंपरिक वाद्य यंत्रों के साथ नृत्य-संगीत करें। नशे का सेवन नहीं करें। छोटे बच्चों के पॉकेट में उनका नाम और पता लिखकर अवश्य रखें। डीजे साउंड सिस्टम का उपयोग न किया गाये। सभी श्रद्धालु सरहुल महापर्व को सफल एवं गरिमामय बनाये रखें।

आपातकालीन नंबर : 9199967174(फूलचंद तिर्की, अध्यक्ष, केंद्रीय सरना समिति), संजय तिर्की -9546116979, प्रमोद एक्का -62993 7119, सोहन कच्छप-89691 01781, सत्यनारायण लकड़ा-72618 24259

ऑपरेशन ब्रह्मा: एनडीआरएफ टीम ने मांडले के उह्ला थीन मठ में बचाव अभियान किया शुरू

एजेंसी

नयी दिल्ली। भारत की एनडीआरएफ टीम ने म्यांमार के मांडले स्थित उह्ला थीन मठ में बचाव अभियान शुरू कर दिया है, जहां शुक्रवार को आए विनाशकारी भूकंप के बाद लगभग 170 बौद्ध भिक्षु अभी भी मलबे में फंसे हुए हैं। भारतीय सेना की टीम एक चयनित स्थल पर अपनी चिकित्सा सेवा स्थापित करने की तैयारी कर रही है। विदेश मंत्रालय ने ऑपरेशन ब्रह्मा पर एक अपडेट में कहा कि हम स्काई विला में एनडीआरएफ की टीम तैनात करने की भी कोशिश कर रहे हैं, जहां 11-11 मंजिलों वाले चार टावर ढह गए हैं। टावरों में कई विदेशी हैं; या म्यांमार सरकार जिस किसी अन्य साइट पर विचार करेगी, वहां टीम तैनात की जा सकती है।

विदेश मंत्रालय ने कहा कि राहत सामग्री राज्य महानायक समिति (म्यांमार की दूसरी सबसे बड़ी समिति) के महासचिव को भी दी जाएगी, जहां लगभग 2,000 भिक्षु मठ के बाहर बैठे हैं (जो घायल नहीं हैं, लेकिन उनके पास जाने के लिए कोई जगह नहीं है और कोई बुनियादी सुविधाएं भी नहीं हैं)। इसने कहा कि हमारी टीमें मंडाले पैलेस, महा मुनि पैगोडा, एमआईआईटी तथा अन्य ऐसे स्थानों पर भी तैनात की जाएंगी जहां भारी क्षति हुई है। बयान में कहा गया कि हम भारतीय समुदाय के सदस्यों को रहने एवं भोजन के लिए सहायता प्रदान कर रहे हैं। रिपोर्टों के अनुसार, स्काई विला अपार्टमेंट ब्लॉक के मलबों में 90 से अधिक लोगों के फंसे होने की आशंका है। उल्लेखनीय है कि 28 मार्च को दोपहर में मंडाले के उत्तर-पश्चिम में 7.7 तीव्रता का भूकंप आया, जिसके कुछ ही मिनटों बाद 6.7 तीव्रता का दूसरा झटका लगा। भूकंप के कारण म्यांमार के बड़े हिस्से में इमारतें नष्ट हो गईं, पुल गिर गए और सड़कें क्षतिग्रस्त हो गईं। देश के दूसरे सबसे बड़े शहर और 17 लाख से अधिक लोगों के घर मांडले में भारी तबाही हुई। उह्ला थीन मठ में 180 से अधिक भिक्षु, वरिष्ठ स्तर की भिक्षुणी छह दिवसीय परीक्षा दे रहे थे, जब शुक्रवार को भूकंप आया। भूकंप के कारण इमारत के एक हिस्से की तीन मंजिलें एक के ऊपर एक गिर गईं। रिपोर्टों के अनुसार शुक्रवार और शनिवार को कुल 21 लोगों को जीवित बचा लिया गया तथा रविवार सुबह तक मठ से 13 शव बरामद किये गये।

पीएम मोदी 19 को कश्मीर तक जाने वाली वंदे भारत ट्रेन को दिखाएंगे हरी झंडी : जितेन्द्र सिंह

एजेंसी

नयी दिल्ली। केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह ने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 19 अप्रैल को कटरा से जम्मू-श्रीनगर वंदे भारत ट्रेन सेवा का उद्घाटन करेंगे, जो 272 किलोमीटर लंबी उधमपुर-श्रीनगर-बारामूला रेलवे लिंक परियोजना के पूरा होने का प्रतीक होगा। कल रविवार को जम्मू में पत्रकारों से बात करते हुए केंद्रीय मंत्री सिंह ने कहा, प्रधानमंत्री मोदी 19 अप्रैल को उधमपुर पहुंचेंगे। वह दुनिया के सबसे ऊंचे रेलवे पुल का दौरा करेंगे और उसका उद्घाटन करेंगे। इसके बाद वह कटरा से वंदे भारत ट्रेन को हरी झंडी दिखाएंगे।

बता दें, जम्मू-कटरा-श्रीनगर वंदे भारत एक्सप्रेस कटरा से परिचालन शुरू करेगी, क्योंकि जम्मू रेलवे स्टेशन पर अभी नवीनीकरण का काम चल रहा है। अधिकारियों के अनुसार, रेल संपर्क परियोजना पिछले महीने पूरी हो गई थी। वहीं, कटरा-बारामूला मार्ग पर ट्रेन का ट्रायल रन सफलतापूर्वक किया जा चुका है। उन्होंने कहा कि रेलवे सुरक्षा आयुक्त ने जनवरी में कटरा और कश्मीर के बीच ट्रेन सेवा को मंजूरी दी थी।अधिकारियों ने कहा कि वंदे भारत एक्सप्रेस से जम्मू और श्रीनगर के बीच यात्रा का समय काफी कम होने की उम्मीद है, जिससे इस क्षेत्र के लिए आधुनिक और कुशल रेल सेवा उपलब्ध होगी।

दरअसल, ट्रेन के शुरू होने से कश्मीर के लिए सीधी रेल कनेक्टिविटी की लंबे समय से चली आ रही मांग पूरी होगी।वर्तमान में, घाटी के भीतर संगलदान-बारामूला मार्ग और कटरा से देश भर के विभिन्न गंतव्यों तक ट्रेन सेवाएं सीमित हैं। अधिकारियों ने कहा कि कश्मीर को रेल से जोड़ने की महत्वाकांक्षी परियोजना 1997 में शुरू हुई थी, लेकिन चुनौतीपूर्ण भूवैज्ञानिक, स्थलाकृतिक और मौसम संबंधी स्थितियों के कारण इसमें कई देरी हुई।

स्पीड न्यूज

पीएम के संभावित मधुबनी दौरे को लेकर बैठक

मधुबनी। बिहार के मधुबनी में आगामी 24 अप्रैल को होने वाली प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की संभावित यात्रा के मद्देनजर सोमवार को प्रशासनिक इन्तजाम सहित अन्य तैयारी को लेकर केन्द्रीय मंत्री राजीव रंजन कुमार सिंह उर्फ ललन सिंह,उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने अधिकारियों के संग बैठक की। बैठक में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार मंत्रिमंडल के सदस्य नीतीश कुमार मिश्रा (उद्योग मंत्री), बिहार के मुख्य सचिव अमृत लाल मीणा, बिहार के डीजीपी विनय कुमार समेत राजग के नेता और जिले के प्रशासनिक पदाधिकारी भी मौजूद रहे। डीआईजी, डीएम, एसपी के साथ विधायक और सांसद भी मौजूद थे। हालांकि, इनमें जदयू की ओर से केंद्रीय मंत्री ललन सिंह के अलावा अन्य कोई और नहीं दिखा।

नेपाल : राजतंत्र समर्थक आंदोलन पहाड़ों से मैदानों तक फैला

काठमांडू/रक्सौल। भ्रष्टाचार, बेरोजगारी और महंगाई जैसी समस्या का समाधान राजा की शरण में मिल जाने की उम्मीद में लोकतंत्र को समाप्त कर राजतंत्र की वापसी के लिए संघर्ष शुरू करने वाले दुनिया के पहले देश नेपाल में यह आंदोलन अब पहाड़ से उतरकर मैदान की ओर फैलने लगा है। भारत के सीमवर्ती राष्ट्र नेपाल में राजतंत्र की वापसी का आंदोलन बहुत कम समय में ही देशव्यापी विस्तार पाने लगा है। बेरोजगारी और महंगाई से उत्पन्न नाराजगी युवा कंधों पर सवार होकर पहाड़ी क्षेत्रों से उतरकर मैदानों इलाकों में फैलने लगी है। इसके ठीक विपरीत लोकतंत्र की स्थापना का आंदोलन मैदानी क्षेत्रों से निकलकर पहाड़ों इलाकों की ओर गया था।

वक्फ विधेयक पर लोगों को गुमराह करने की राजनीति नहीं, बहस करें: किरन रिजिजू

एजेंसी

नयी दिल्ली। केन्द्रीय अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री किरन रिजिजू ने वक्फ विधेयक के विरोध करने वालों की सोमवार को कड़ी आलोचना करते हुए, उनसे विधेयक पर लोगों को गुमराह करने की राजनीति करने के बजाए, चर्चा करने की अपील की। श्री रिजिजू ने राजधानी में एक संवाददाता सम्मेलन में कहा कि यह विधेयक गरीब मुसलमानों के हक में है और यह जमीन पर कब्जा करने वालों के खिलाफ है। उन्होंने कहा कि इस विधेयक पर संसद में विस्तार से चर्चा होगी और विरोधी इस पर चर्चा करें , झूठ न फैलाएं। मंत्री ने कहा कि यह लोगों को बरगलाया जा रहा है कि सरकार इस विधेयक के जरिए कब्रिस्तानों, दरगाहों और मस्जिदों की जमीन छीन लेगी। उन्होंने कहा कि इससे बड़ा कोई और झूठ नहीं हो सकता है। लोगों को इस तरह से गुमराह करने वाले लोग समाज के लिए खतरा हैं और लोगों को उन पर नजर रखनी चाहिए। श्री रिजिजू ने कहा कि ऐसे ही लोगों ने नागरिकता (संशोधन) अधिनियम का भी विरोध किया था और फैलाया था कि इससे मुसलमानों की नागरिकता छीन ली जाएगी। उन्होंने सवाल किया कि क्या एक साल में किसी भारतीय मुसलमान की नागरिकता छीनी गयी है? श्री रिजिजू ने कहा कि इस तरह लोगों को गुमराह करने की हरकत शरारतपूर्ण है और इसे स्वीकार नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा

कि भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को इस बारे में स्पष्ट सोच है, 'सबका साथ, सबका विकास। मंत्री ने कहा कि हिंदू, मुस्लिम, सिख, बौद्ध, ईसाई और पारसी सभी मिलकर भारत को और अच्छा देश बनाएंगे। उन्होंने कहा कि वक्फ विधेयक को लेकर ईद जैसे त्योहार का इस्तेमाल कुछ लोगों ने राजनीति के लिए किया और आज लोगों को वक्फ विधेयक के खिलाफ काली पट्टी पहनकर नमाज के लिए उकसाया। श्री रिजिजू ने सवाल किया कि ईद जैसे पवित्र त्योहार का इस्तेमाल राजनीति के लिए करना ठीक है?

मंत्री से केरल के ईसाई धर्मगुरुओं की केरल बिशप कौंसिल द्वारा की गई उस अपील के बारे में भी पूछा गया, जिसमें कौंसिल ने वक्फ बोर्ड की मौजूदा व्यवस्था के ठीक किए जाने की जरूरत को रेखांकित किया है। श्री रिजिजू ने कहा कि क्या केरल के सांसदों को बिशप कौंसिल की चिंता पर ध्यान नहीं देना चाहिए। उन्होंने इस सुझाव को हास्यापद बताया कि बिशप कौंसिल के रुख के पीछे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) का हाथ है।

मुसलमान बहकावे में नहीं आयें : शाहनवाज

नयी दिल्ली। संसद में इस सप्ताह वक्फ संशोधन विधेयक पेश किये जाने की अटकलों के बीच भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने आज देश के मुस्लिम समाज को आगाह किया कि उन्हें कांग्रेस के ईकोसिस्टम द्वारा नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) की तर्ज पर वक्फ को लेकर भड़काने की कोशिश की जा रही है ताकि देश को कमजोर किया जा सके इसलिए मुस्लिम समाज को बहकावे में नहीं आना चाहिए। भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री सैयद शाहनवाज हुसैन ने ईद के अवसर पर उनके निवास पर पधारे पत्रकारों से बातचीत में कहा कि ऐसी रिपोर्टें आयीं हैं कि ईद के मौके पर मस्जिदों में नमाज के वक्त कई जगह लोग काली पट्टी बांध कर नमाज पढ़ने आये हैं। उन्होंने कहा कि वक्फ संशोधन विधेयक को लेकर कांग्रेस का ईकोसिस्टम फिर से सक्रिय हो गया है और उन्हें उसी तरह से भड़काने की कोशिश की जा रही है जैसे सीएए को लेकर और कृषि कानूनों को लेकर भड़काया गया था और कुछ लोग वक्फ के नाम पर बेसिरपैर का हंगामा कर रहे हैं। श्री हुसैन ने कहा कि रमजान के बाद ईद खुशी का मौका होता है। इबादत के बीच सियासत कहां से आ गयी। उन्होंने काली पट्टी बांध कर आने वालों को चेतावनी दी कि वे मस्जिद को राजनीति का अड्डा नहीं बनायें। मस्जिद में खुदा और बंदे के बीच का रिश्ता होता है। सियायत की कोई गुंजाइश नहीं होती है। उन्होंने कहा कि मुस्लिम समाज बहकावे

में नहीं आयें। ऑल इंडिया मजलिसे इत्तेहादुल मुस्लमीन के नेता असदुद्दीन ओवैसी एक आलीशन जिंदगी जीते हैं। उनका आम मुसलमानों से कोई लेना देना नहीं है। वह हिन्दू और मुसलमानों के बीच लड़ाई-झगड़ा करवा कर अपनी राजनीति चमकाते हैं। वह इसी लक्ष्य को लेकर काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि वक्फ संशोधन विधेयक में किसी भी मजार, दरगाह, मस्जिद, ईदगाह या कब्रिस्तान को छीना नहीं जा रहा है। बल्कि गरीब मुसलमानों को उसका लाभ मिले, इसका प्रावधान किया गया है। इसलिए इसके विरोध का कोई कारण ही नहीं है। उन्होंने कहा कि आज बहुत थोड़े लोगों ने काली पट्टी बांधी थी जबकि बहुसंख्यक मुसलमानों ने कोई पट्टी नहीं बांधी और सामान्य रूप से हर्षोल्लास के साथ नमाज अदा की। इस तरह से काली पट्टी वालों की हार हुई है।

बिगु साहू सांसद प्रतिनिधि मनातू की ओर से रामनवमी सरहुल ईद छठ पर्व पांकी विस क्षेत्र वासियों को नव वर्ष की ढेर सारी बधाई व शुभकामनायें।

बिगु साहू
सांसद प्रतिनिधि मनातू पलामू।
कालीचरण सिंह
सांसद चतरा

VERMA PRESS
वर्मा प्रेस प्रा० लि० राँची
Verma's® Today®
शृंखला की निम्न पुस्तकें सर्वत्र उपलब्ध हैं—

Class - X		Class - IX	
Hindi	₹ 140	Hindi	₹ 140
English	₹ 140	English	₹ 140
Mathematics	₹ 140	Mathematics	₹ 140
Science	₹ 140	Science	₹ 140
Social Science	₹ 140	Social Science	₹ 140
Sanskrit	₹ 120	Sanskrit	₹ 120
Hindi – B	₹ 140	Hindi – B	₹ 80
Hindi Vyakaran– II	₹ 120	Hindi Vyakaran– II	₹ 120
English Grammar– II	₹ 120	English Grammar– II	₹ 120
Sanskrit Vyakaran–II	₹ 100	Sanskrit Vyakaran–II	₹ 100
Hindi Practical	₹ 55	Hindi Practical	₹ 55
English Practical	₹ 55	English Practical	₹ 55
Maths. Practical	₹ 65	Maths. Practical	₹ 55
Science Practical	₹ 65	Science Practical	₹ 70
S. Science Practical	₹ 65	S. Science Practical	₹ 65
Sanskrit Practical	₹ 55	Sanskrit Practical	₹ 55
Maths. Practical (Combined)	₹ 90	Maths. Practical (Combined)	₹ 75
Science Practical (Combined)	₹ 90	Science Practical (Combined)	₹ 75
English Medium		English Medium	
Mathematics	₹ 200	Mathematics	₹ 130
Science	₹ 200	Science	₹ 200
Social Science	₹ 200	Social Science	₹ 130
Maths. Practical	₹ 80	Maths. Practical	₹ 80
Science Practical	₹ 80	Science Practical	₹ 80
S. Science Practical	₹ 80	S. Science Practical	₹ 80

मिलते जुलते नाम वाली नकली पुस्तकों से सावधान !

दंतेवाड़ा मुठभेड़ में 25 लाख की इनामी नक्सली रेणुका ढेर

दंतेवाड़ा। छत्तीसगढ़ में लगातार तीसरे दिन सोमवार को भी सुरक्षा बलों ने माओवादी संगठन को करारा झटका दिया जब दंतेवाड़ा और बीजापुर की सीमा पर हुई मुठभेड़ में 25 लाख की इनामी महिला माओवादी रेणुका उर्फ बानु ढेर कर दी गयी। जवानों ने महिला नक्सली के शव के साथ इंसास राइफल और भारी मात्रा में गोला बारूद भी बरामद किया है। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार, दंतेवाड़ा और बीजापुर में सुरक्षाबलों के जवानों और नक्सलियों के बीच मुठभेड़ चल रही है। मुठभेड़ अभी भी जारी है और जवानों के वापस आने के बाद अंतिम आंकड़े जारी किए जाएंगे। ऐसे में अंदाजा लगाया जा रहा है कि, जवानों को एक बार फिर बड़ी सफलता मिली है। इस बीच छत्तीसगढ़ के उपमुख्यमंत्री एवं गृहमंत्री विजय शर्मा ने बताया कि आज दंतेवाड़ा मुठभेड़ में 25 लाख की इनामी महिला माओवादी रेणुका उर्फ बानु मारी गई। उन्होंने कहा,ह्लभटके हुए लोगों से पुनः अपील है कि नक्सलवाद के काले अंधकार को छोड़ें और लोकतंत्र के प्रकाश से उज्ज्वल समाज की मुख्यधारा में शामिल हों। विष्णुदेव सरकार आपका स्वागत करती है! गौरतलब है कि छत्तीसगढ़ के बीजापुर व दंतेवाड़ा जिलों में रविवार को 65 माओवादियों ने सुरक्षाकर्मियों के सामने आत्मसमर्पण कर नक्सली संगठन को करारा झटका दिया। दंतेवाड़ा जिले में जारी लोन वराटू (घर वापस आइए) अभियान से प्रभावित होकर 15 नक्सलियों ने सरेंडर कर दिया है।

भारत की सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली का 'नरसंहार' समाप्त होना चाहिए: सोनिया

एजेंसी

नयी दिल्ली। कांग्रेस नेता सोनिया गांधी ने सोमवार को मोदी सरकार की शिक्षा नीति की आलोचना करते हुए कई गंभीर आरोप लगाये। अंग्रेजी अखबर 'द हिंदू' में प्रकाशित लेख द '3सी दैट हॉन्ट इंडियन एजुकेशन टुडे में गांधी ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 की शुरूआत ने सरकार की वास्तविकता को छिपा दिया है जो भारत के बच्चों और युवाओं की शिक्षा के प्रति बेहद उदासीन है। सोनिया ने अपने लेख में कहा कि ये तीन 'सी' आज भारतीय शिक्षा को परेशान कर रहे हैं। सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली में यह 'नरसंहार' समाप्त होना चाहिए। सोनिया गांधी ने लेख में लिखा, पिछले दशक के दौरान केंद्र सरकार

के ट्रैक रिकॉर्ड ने स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया है कि शिक्षा के क्षेत्र में वह केवल तीन मुख्य एजेंडा के कार्यान्वयन को लेकर चिंतित है। केंद्र सरकार के पास सत्ता का केंद्रीकरण; शिक्षा में निवेश का व्यावसायीकरण और निजी क्षेत्र को आउटसोर्सिंग, तथा पाठ्यपुस्तकों, पाठ्यक्रम और संस्थानों का सांप्रदायिकरण। गांधी ने आरोप लगाया कि पिछले 11 वर्षों में इस सरकार की कार्यप्रणाली की पहचान अनियंत्रित केंद्रीकरण रही है। इसके सबसे हानिकारक परिणाम शिक्षा के क्षेत्र में हुए हैं। उन्होंने कहा कि केंद्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड, जिसमें केंद्र और राज्य सरकारों के शिक्षा मंत्री शामिल हैं, की सितंबर 2019 से कोई बैठक नहीं हुई है। उन्होंने कहा कि एनईपी 2020 के माध्यम से शिक्षा में आमूलचूल परिवर्तन को अपनाने और लागू करने के बावजूद सरकार ने एक बार भी इन नीतियों के कार्यान्वयन पर राज्य सरकारों से परामर्श करना उचित नहीं समझा. उन्होंने लेख में दावा किया, यह सरकार अपनी आवाज के अलावा किसी अन्य की आवाज पर ध्यान नहीं देती, यहां तक कि उस विषय पर भी जो भारतीय संविधान की समवर्ती सूची में है।